1. "जपजी साहिब"

१ੴ सतिनाम करता पुरख निरभउ निरवैर अकाल मूरत अजूनी सैभं गुरप्रसाद ।

अर्थः अकाल – पुरख एक है, जिसका नाम 'अस्तित्व वाला' है जो सृष्टि का रचनहार है, (करता है) जो सभ में व्यापक है, भय से रहित

है (निर्भय), वैर से रहित है (निर्वैर), जिसका स्वरूप काल से परे है, (भाव, जिसका शरीर नाश - रहित है), जो यौनियों में नहीं आता,जिसका प्रकाश अपने आप से हुआ है और जो सत्गुरू की कृपा से मिलता है ।

। जप । आद सच जुगादि सच । है भी सच नानक होसी भी सच ।1।

अर्थः हे नानक! अकाल पुरख आरम्भ से ही अस्तित्व वाला है, युगों के आरम्भ से मौजूद है। इस समय भी मौजूद है और आगे भी अस्तित्व में रहेगा।1।

सोचै सोच न होवई जे सोची लख वार । चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ।

अर्थः अगर में लाखों बार (भी) (स्नान आदि से शरीर की) स्वच्छता रखूँ, (तो भी इस तरह) स्वच्छता रखने से (मन की) स्वच्छता नहीं रहि सकती। यदि मैं (शरीर की) एक-तार समाधि लगाई रखूँ; (तो भी इस तरह) चुप कर के रहने से मन शांत नहीं हो सकता।

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार । सहस सिआणपा लख होह त इक न चलै नाल ।

अर्थः यदि मैं सारे भवनों के पदार्तों के ढेर (भी) संभाल लूँ, तो भी त्रिष्णा के अधीन रहने से त्रिष्णा दूर नहीं हो सकती। यदि, (मेरे में) हजारों व लाखों ही चतुराईयां हों, (तो भी उनमें से) एक भी चतुराई साथ नहीं देती।

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पाल । हुकम रजाई चलणा नानक लिखिआ नाल ।1।

अर्थः (तो फिर) अकाल पुरख के प्रकाश होने योग्य कैसे बन सकते हैं (और हमारे अंदर का) झूठ का पर्दा कैसे कैसे टूट सकता है? रजा के मालिक अकाल पुरख के हुक्म में चलना- (यही एक मात्र विधि है)। हे नानक! (ये विधि) आरम्भ से ही जब से जगत बना है, लिखी चली आ रही है।1।

हुकमी होवन आकार हुकम न कहिआ जाई । हुकमी होवन जीअ हुकम मिलै वडिआई ।

अर्थः अकाल पुरख के हुक्म के अनुसार सारे शरीर बनते हैं, (पर ये) हुक्म कहा नहीं जा सकता कि कैसा है। ईश्वर के आदेश मुताबिक ही सारे जीव पैदा हो जाते हैं और आदेशानुसार ही (ईश्वर के दर पर) शोभा मिलती है।

हुकमी उतम नीच हुकम लिख दुख सुख पाईअह । इकना हुकमी बखसीस इक हुकमी सदा भवाईअह ।

अर्थः रब के हुक्म में कोई मनुष्य अच्छा (बन जाता) है, काई बुरा। उसके हुक्म में ही (अपने किए कर्मों के) लिखे अनुसार दुख व सुख भोगते हैं। हुक्म में ही कई मनुष्यों पर (अकाल पुरख के दर से) कृपा होती है, और उसके हुक्म में ही कई मनुष्य नित्य जन्म-मरण के चक्कर में फसे रहते हैं।

हुकमै अंदर सभ को बाहर हुकम न कोइ । नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ।2।

अर्थः हरेक जीव ईश्वर के हुक्म में ही है, कोई जीव हुक्म से बाहर नहीं हो सकता। हे नानक! अगर कोई मनुष्य अकाल पुरख के हुक्म

को समझ ले तो फिर वो स्वार्थ भरी बातें नहीं करता (अर्थात, स्वार्थी जीवन छोड़ देता है)।2।

गावै को ताण होवै किसै ताण । गावै को दात जाणै नीसाण।

अर्थः जिस किसी मनुष्य की स्मर्था होती है, वह ईश्वर की ताकत को गाता है, (भाव, उसकी महिमा करता है और उसके उन कर्मों का कथन करता है जिनसे उनकी बड़ी ताकत प्रगट हो) कोई मनुष्य उसकी दातों को ही गाता है, (क्योंकि, इन दातों को वह ईश्वर की कृपा का) निशान समझता है।

गावै को गुण वडिआईआ चार । गावै को विदिआ विखम वीचार ।

अर्थः कोई मनुष्य ईश्वर के सुन्दर गुण और अच्छी बढ़ाईयों का वर्णन करता है। कोई मनुष्य विद्या के बल से अकाल पुरख के कठिन ज्ञान को गाता है (भाव, शास्त्र आदि विद्या द्वारा आत्मिक फिलासफीजैसे मुश्किल विषयों पर विचार करता है)।

गावै को साज करे तन खेह । गावै को जीअ लै फिर देह ।

अर्थः कोई मनुष्य ऐसे गाता है, 'अकाल पुरख शरीर को बना के फिर राख कर देता है। कोई ऐसे गाता है, 'हरि (शरीरों में से) जान निकाल के फिर (दूसरे शरीरों में) डाल देता है'।

गावै को जापै दिसै दूर । गावै को वेखै हादरा हदूर ।

अर्थः कोई मनुष्य कहता है, 'अकाल पुरख दूर प्रतीत होता है' पर कोई कहता है, (नहीं नजदीक है), हर जगह हाजिर है, सभी को देख रहा है'।

कथना कथी न आवै तोट । कथ कथ कथी कोटी कोट कोट।

अर्थः करोड़ों जीवों ने बेअंत बार (अकाल पुरख के हुक्म का) वर्णन किया है। पर हुक्म के वर्णन करने में कमीं नहीं आ सकी। (भाव, वर्णन कर कर के हुक्म का अंत नहीं पाया जा सका, हुक्म का सही स्वरूप नहीं ढूंढा जा सका)

देदा दे लैदे थक पाह । जुगा जुगंतर खाही खाह ।

अर्थः दातार अकाल पुरख (सभी जीवों को रिज़क) दे रहा है, पर जीव लै लै के थक जाते हैं। (सभ जीव) सदा से ही (ईश्वर के दिए पदार्थ) खाते चले आ रहे हैं।

हुकमी हुकम चलाए राह । नानक विगसै वेपरवाह ।३।

अर्थः हुक्म वाले रब का हुक्म ही (संसार की कार वाला) रास्ता चला रहा है। हे नानक! वह निरंकार सदा बेपरवाह है, प्रसंन्न है। (भाव, हलाकि, ईश्वर हर वक्त संसार के बेअंत जीवों को अटूट पदार्थ व रिज़क दे रहा है, पर इतने बड़े कार्य में उसे कोई घबराहट/परेशानी नहीं हो रही। वह सदा ही प्रसंन्न अवस्था में है। उसे इतने बड़े पसारे में खचित नहीं होना पड़ता। उसकी एक हुक्म रूप सत्ता ही सारे व्यवहार को निबाह रही है।) ३।

साचा साहिब साचु नाइ भाखिआ भाउ अपार । आखह मंगह देह देह दात करे दातार ।

अर्थः अकाल पुरख सदा स्थिर रहने वाला ही है, असका नियम भी सदा अटल है। उसकी बोली प्रेम है और वह अकाल-पुरख बेअंत है। हम जीव उससे दातें मांगते हैं और कहते हैं, '(हे हरि! हमें दातें) दे'। वह दातार बख्शिशें करता है।

फेर कि अगै रखीऐ जित दिसै दरबार । मुहौ कि बोलण बोलीऐ जित सुण धरे पिआर ।

अर्थः (अगर सारी दातें वह बख्श रहा है तो) हम कौन सी भेटा उस अकाल-पुरख के आगे रखें, जिस सदके हमें उसका दरबार दिख जाए? हम मुँह से कौन से वचन कहें कि (भाव, कैसी अरदास करें कि) जिसे सुन के वह हरि (हमें) प्यार करने लगे।

अम्रित वेला सच नाउ वडिआई वीचार। करमी आवै कपड़ा नदरी मोख दुआर । नानक एवै जाणीऐ सभ आपे सचिआर ।4।

अर्थः पूर्ण खिड़ाव का समय हो (भाव, प्रभात का समय हो), नाम (स्मरण करें) तथा उसके बड़प्पन का विचार करें। (इस तरह) प्रभु की मेहर से 'सिफति' रूप पटोला मिलता है, उसकी कृपा दृष्टि से 'झूठ की दीवार' से मुक्ति मिलती है तथा ईश्वर का दर प्राप्त हो जाता है। हे नानक! इस तरह ये समझ आ जाता है कि वह अस्तित्व का मालिक अकाल पुरख सर्व-व्यापक है।4।

थापिआ न जाइ कीता न होइ । आपे आप निरंजन सोइ ।

अर्थः वह अकाल पुरख माया के प्रभाव से परे है (क्योंकि) वह पूर्णतः स्वयं ही स्वयं है, ना वह पैदा किया जा सकता है, ना ही हमारे बनाए बनता है।

जिन सेविआ तिन पाइआ मान । नानक गावीऐ गुणी निधान ।

अर्थः जिस मनुष्य ने उस अकाल पुरख का स्मरण किया है, उसने ही आदर सत्कार पा लिया है। हे नानक! (आओ) हम भी उस गुणों के खजाने हरि की महिमा करें।

गावीऐ सुणीऐ मन रखीऐ भाउ। दुख परहर सुख घर लै जाइ।

अर्थः (आओ! अकाल पुरख के गुण) गाएं और सुनें और अपने मन में उसका प्रेम टिकाएं। (जो मनुष्य उसका आहर करता है, प्रयत्न करता है, वह) अपना दुख दूर करके सुख को हृदय में बसा लेता है।

गुरमुख नादं गुरमुख वेदं गुरमुख रहिआ समाई । गुर ईसर गुर गोरख बरमा गुरु पारबती माई ।

अर्थः (पर उस ईश्वर का) नाम और ज्ञान गुरु के द्वारा (प्राप्त होता है)। गुरु के द्वारा ही (ये प्रतीति आती है कि) वह हरि सर्व-व्यापक है। गुरु ही (हमारे लिए) शिव है, गुरु ही (हमारे लिए) गोरख व ब्रह्मा है और गुरु ही (हमारे लिए) पार्वती माँ है।

जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथन न जाई । गुरा इक देह बुझाई । सभना जीआ का इक दाता सो मै विसर न जाई ।5।

अर्थः वैसे (इस अकाल पुरख के हुक्म को) अगर मैं समझ (भी) लूँ, (तो भी) उसका वर्णन नहीं कर सकता। (अकाल-पुरख के हुक्म का) कथन नहीं किया जा सकता। (मेरी तो) हे सत्गुरू! (तेरे आगे अरदास है कि) मुझे ये समझ दे कि जो सभी जीवों को दाता देने वाला एक रब हैमैं उसको भुला ना दूँ।5।

तीरथ नावा जे तिस भावा विण भाणे कि नाइ करी । जेती सिरठ उपाई वेखा विण करमा कि मिलै लई ।

अर्थः मैं तीर्तों पे जा के तब स्नान करूँ जो ऐसा करके उस प्रमात्मा को खुश कर सकूँ। पर, अगर इस तरह प्रमात्मा खुश नहीं होता तो

मैं (तीर्तों पे) स्नान कर के क्या पा लूगाँ। ईश्वर की पैदा की हुई जितनी भी दुनिया मैं देखता हूँ (इसमें) प्रमात्मा की कृपा के बिना किसी को कुछ नहीं मिलता, कोई कुछ नहीं ले सकता।

मत विच रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ।

अर्थः यदि सत्गुरू की एक शिक्षा सुन ली जाए, तो मनुष्य की बुद्धि के अंदर रतन, जवाहर और मोती (उपज पड़ते हैं, अर्थात, प्रमात्मा के गुण पैदा हो जाते हैं)।

गुरा इक देह बुझाई । सभना जीआ का इक दाता सो मै विसर न जाई ।6।

अर्थः (इसलिए) हे सत्गुरू! (मेरी तेरे आगे ये प्रार्थना है, अरदास है कि) मुझे एक ये समझ दे, जिससे मुझे वह अकाल पुरख ईश्वर ना विसर जाए, जो सभी जीवों को दातें देने वाला है।6।

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ । नवा खंडा विच जाणीऐ नाल चलै सभ कोइ ।

अर्थः अगर किसी मनुष्य की उम्र चार युगों जितनी हो जाए, (सिर्फ इतनी ही नहीं, बल्कि) उससे भी दस गूनी और (उम्र) हो जाए, अगर वो सारे संसार में प्रगट हो जाए और हरेक मनुष्य पीछे हो ले।

चंगा नाउ रखाइ कै जस कीरत जग लेइ । जे तिस नदरि न आवई त वात न पुछै के । कीटा अंदर कीट कर दोसी दोस धरे ।

अर्थः अगर कोई खूब नाम कमा के सारे संसार में शोभा प्राप्त कर ले, पर लेकिन अकाल पुरख की मेहर की नजर में नहीं आ सका, तो

वह ऐसा है जिसकी कोई बात भी नहीं पूछता। (अर्थात, इतना मान सत्कार होते हुए भी वह बेआसरा ही है)। (बल्कि ऐसा मनुष्य अकाल-पुरख के सामने) एक मामूली सा कीड़ा है। ("खसमै नदरी कीड़ा आवै।" आसा महला१) अकाल पुरख उसे दोषी करार दे के (उस पे नाम को भूलने का) दोष लगाता है।

नानक निरगुण गुण करे गुणवतिआ गुण दे । तेहा कोइ न सुझई जि तिस गुण कोइ करे ।7।

अर्थः हे नानक! वह अकाल-पुरख गुणहीन मनुष्य में गुण पैदा कर देता है और गुणी जीवों को भी गुण वही बख्शता है। ऐसा कोई और नहीं दिखता जो निर्गुण जीवों को कोई गुण दे सकता हो। (प्रभु की मेहर की नजर ही उसको ऊँचा कर सकती है, लम्बी उम्र तथा जगत की शोभा सहायता नहीं करती)।7।

सुणिऐ सिध पीर सुर नाथ । सुणिऐ धरत धवल आकास । सुणिऐ दीप लोअ पाताल । सुणिऐ पोह न सकै काल । नानक भगता सदा विगास । सुणिऐ दूख पाप का नास ।8।

अर्थः हे नानक! (अकाल-पुरख के नाम में ध्यान जोड़ने वाले) भक्तजनों के हृदय में सदा ही आनन्द बना रहता है, (क्योंकि) उसकी महिमा सुनने से (मनुष्य के) दुखों व पापों का नाश हो जाता है। ये नाम हृदय में टिकने का ही नतीजा है कि (साधारण मनुष्य भी) सिद्धों,पीरों, देवताओं व नाथों वाली पदवी प्राप्त कर लेते हैं और उन्हें ये समझ आ जाती है कि धरती-आकाश का आसरा वह प्रभु ही है, जो सारे द्वीपों, लोकों, पातालों में व्यापक है।8।

सुणिऐ ईसर बरमा इंद । सुणिऐ मुखि सालाहण मंद । सुणिऐ जोग जुगत तन भेद । सुणिऐ सासत सिम्रित वेद । नानक भगता सदा विगास । सुणिऐ दूख पाप का नास ।9।

अर्थः हे नानक! (नाम के साथ प्रीत करने वाले) भक्त जनों के हृदय में सदैव प्रसन्नता बनी रहती है; (क्योंकि) ईश्वर की महिमा स्तुति सुन के (मनुष्य) के दुखों और पापों का नाश हो जाता है। अकाल पुरख के नाम के साथ ध्यान जोड़ने के सदका साधारण मनुष्य शिव,ब्रह्मा और इन्द्र की पदवी को प्राप्त कर लेता है, बुरा आदमी भी मुँह से ईश्वर की स्तुति करने लगता है, (साधारण बुद्धि वाले को भी) शरीर के भीतर की गहन सच्चाईयां, (भाव, आँख, कान, नाक, जीभ आदि इन्द्रियों के क्रिया कलापों व विकारों आदि की और की दौड़ भाग) के भेद का पता चल जाता है। प्रभु मेल की युक्ति की समझ पड़ जाती है, शास्त्रों स्मृतियों व वेदों की समझ पड़ जाती है। (भाव, धार्मिक पुस्तकों का असल ऊँचा निशाना तभी समझ आता है जब हम नाम में ध्यान जोड़ते हैं, नहीं तो निरे लफ्जों को ही पढ़ लेते हैं, उस असली जज़बे तक नहीं पहुँचते जिस अहिसास पे पहुँच के उन धार्मिक पुस्तकों का सृजन हुआ होता है)।9।

सुणिऐ सत संतोख गिआन । सुणिऐ अठसठ का इसनान । सुणिऐ पड़ पड़ पावह मान । सुणिऐ लागै सहज धिआन । नानक भगता सदा विगास । सुणिऐ दूख पाप का नास ।10।

अर्थः हे नानक! (अकाल पुरख के नाम में ध्यान जोड़ने वाले) भक्तजनों के हृदय में सदैव आनन्द बना रहता है। (क्योंकि) अकाल पुरख की महिमा सुनने से (मनुष्य के) दुखों व पापों का नाश हो जाता है। रब

के नाम से जुड़ने से (हृदय में) दान (देने का स्वभाव) संतोष व प्रकाश प्रकट होता है, मानों अड़सठ तीर्तों का स्नान (ही) हो जाता है (अर्थात, अड़सठ तीर्तों का स्नान नाम जपने में ही आ जाते हैं)। जो आदर (मनुष्य विद्या) पढ़ के प्राप्त करते हैं वह भक्त जनों को अकाल-पुरख के नाम में जुड़ के ही मिल जाता है। नाम सुनने के सदका अडोलता में चित्त की तवज्जो टिक जाती है।10।

सुणिऐ सरा गुणा के गाह । सुणिऐ सेख पीर पातिसाह । सुणिऐ अंधे पावह राह । सुणिऐ हाथ होवै असगाह । नानक भगता सदा विगास । सुणिऐ दूख पाप का नास ।11।

अर्थः हे नानक! (अकाल पुरख के नाम में ध्यान जोड़ने वाले) भक्तजनों के हृदय में सदा प्रसन्नता बनी रहती है, (क्योंकि) अकाल-पुरख का नाम सुनने से (मनुष्य के) दुखों व पापों का नाश हो जाता है। अकाल-पुरख के नाम में ध्यान जोड़ने से (साधरण मनुष्य) बेअंत गुणों की सूझ वाले हो जाते हैं, शेख, पीर व बादशाह की पदवी पा लेते हैं। ये नाम सुनने की ही बरकत है कि अंधे और ज्ञानहीन मनुष्य भी (अकाल-पुरख को मिलने का) रास्ता ढूँढ लेते हैं। अकाल-पुरख के नाम में जुड़नेके सदके इस संसार समुन्द्र की हकीकत की समझ आ जाती है।11।

मंने की गत कही न जाइ । जे को कहै पिछै पछुताइ । कागद कलम न लिखणहार । मंने का बह करन वीचार । ऐसा नाम निरंजनु होइ । जे को मंन जाणै मन कोइ ।12।

अर्थः उस मनुष्य की (ऊँची) आत्मिक अवस्था बयान नहीं की जा सकती, जिसने (अकाल-पुरख के नाम को) मान लिया है, (भाव,

जिसकी लगन नाम में लग गई है)। यदि कोई मनुष्य वर्णन करे भी, तो वह पीछे पछताता है (कि मैंने होछा प्रयत्न किया है) । (मनुष्य) मिल के नाम में पतीजी हुई आत्मिक अवस्था का अंदाजा लगाते हैं, पर कागज पर कलम से कोई मनुष्य लिखने में समर्थ नहीं है । अकाल-पुरख का नाम बहुत (ऊँचा) है और माया के प्रभाव से परे है , (इसमें जुड़ने वाला भी उच्च आत्मिक अवस्था वाला हो जाता है, पर ये बात तभी समझ में आतीं है) जब कोई मनुष्य अपने अंदर लगन लगा के झाँके।12।

मंनै सुरत होवै मन बुध । मंनै सगल भवण की सुध । मंनै मुह चोटा ना खाइ । मंनै जम कै साथ न जाइ । ऐसा नाम निरंजन होइ । जे को मंन जाणै मन कोइ ।13।

अर्थः यदि मनुष्य के मन में प्रभु के नाम की लगन लग जाए, तो उसकी अक़्ल ऊँची हो जाती है, उसके मन में जागृति आ जाती है (भाव, माया में सोया मनुष्य जाग जाता है) सभी भवनों/लोकों की उसको समझ आ जाती है (कि हर जगह ईश्वर व्यापक है)। वह मनुष्य (संसार के विकारों की) चोटें मुँह पे नहीं खाता (अर्थात, सांसारिक विकार उस पर दबाव नहीं डाल सकते) और यमों से उसका वास्ता नहीं पड़ता (भाव, वह जन्म-मृत्यु के चक्कर में से बच जाता है)। अकाल-पुरख का नाम जो माया के प्रभाव से परे है इतना (ऊँचा) है (कि इस में जुड़ने वाला भी उच्च आत्मिक अवस्था वाला हो जाता है, पर ये बात तभी समझ में आती है) जब कोई मनुष्य अपने मन में हरि नाम की लगन पैदा कर ले।13।

मंनै मारग ठाक न पाइ । मंनै पत सिउ परगट जाइ । मंनै मग न चलै पंथ । मंनै धरम सेती सनबंध । ऐसा नाम निरंजन होइ । जे को मंन जाणै मन कोइ ।14।

अर्थः जिस मनुष्य का मन नाम में पतीज जाए तो जिंदगी के सफर में विकारों की कोई रोक नहीं पड़ती, वह (संसार से) शोभा कमा के इज्जत के साथ जाता है। उस मनुष्य का धर्म के साथ (सीधा) जोड़ बन जाता है, वह फिर (दुनिया के विभिन्न मजहबों के बताए) रास्तों पे नहीं चलता (भाव, उसके अंदर ये द्वंद नहीं रहता कि ये रास्ता ठीक है और ये गलत है)। अकाल पुरख का नाम जो माया के प्रभाव से परे है इतना (ऊंचा) है (कि इस में जुड़ने वाला भी उच्च आत्मिक अवस्था वाला हो जाता है) पर ये बात तभी समझ में आती है) जब कोई मनुष्य अपने मन में हरि नाम की लगन पैदा कर ले।14।

मंनै पावहि मोखु दुआरु । मंनै परवारै साधारु । मंनै तरै तारे गुरु सिख । मंनै नानक भवहि न भिख । ऐसा नामु निरंजनु होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।15।

अर्थः यदि मन में प्रभु के नाम की लगन लग जाए तो (मनुष्य) 'झूठ' से छुटकारा पाने का रास्ता ढूँढ लेता है। (ऐसा मनुष्य) अपने परिवार को भी (अकाल-पुरख की) टेक दृढ़ करवाता है। नाम में मन पतीजने से ही, सत्गुरू (भी स्वयं संसार सागर से) पार लांघ जाता है और सिखों को पार कर देता है। नाम में मन जुड़ने से ही, हे नानक! मनुष्य हरेक की मुथाजगी नहीं करते फिरते। अकाल-पुरख का नाम, जो माया के प्रभाव से परे है, इतना (ऊंचा) है (कि इस में जुड़ने वाला भी उच्च जीवन वाला हो जाता है पर ये बात तभी समझ में आती है) जब कोई मनुष्य अपने मन में हरि नाम की लगन पैदा कर ले।15।

पंच परवाण पंच परधानु । पंचे पावहि दरगहि मानु । पंचे सोहहि दरि राजानु । पंचा का गुरु एकु धिआनु ।

अर्थः जिस लोगों की तवज्जो नाम में जुड़ी रहती है और जिनके अंदर प्रभु के वास्ते लगन बन जाती है वही मनुष्य (यहां जगत में) मशहूर होते हैं और सभी के नायक होते हैं। अकाल-पुरख के दरबार में भी वही पंच जन मान सम्मान पाते हैं। राज-दरबारों में भी वह पंच जन ही शोभनीय हैं। इन पंच जनों की तवज्जो का निशाना केवल एक गुरु ही है (भाव, इनकी तवज्जो गुरु-शबद में ही रहती है, गुरु-शबद में जुड़े रहना ही इनका असल निशाना है)।

जे को कहै करै वीचार । करते कै करणै नाही सुमार ।

अर्थः (पर गुरु-शबद में जुड़े रहने का ये नतीजा नहीं निकल सकता कि कोई मनुष्य प्रभु की रची सृष्टि का अंत पा सके) अकाल-पुरख की कुदरत का कोई लेखा नहीं (भाव, अंत नहीं पाया जा सकता), चाहे कोई भी कहि के देखे या विचार कर ले (प्रमात्मा व उसकी कुदरत का अंत ढूँढना मनुष्य की जिंदगी का उद्देश्य हो ही नहीं सकता)।

धौल धरम दइआ का पूत । संतोख थाप रखिआ जिन सूत । जे को बुझै होवै सचिआर । धवलै उपर केता भार । धरती होर परै होर होर । तिस ते भार तलै कवण जोर ।

अर्थः (अकाल-पुरख का) धर्म रूपी अटल नियम ही बैल है (जो सृष्टि को कायम रख रहा है)। (ये धरम) दया का पुत्र है (भाव, अकाल-पुरख ने अपनी मेहर करके सृष्टि को टिकाए रखने के लिए 'धरम' रूप नियम बना दिया है)। इस धरम ने अपनी मर्यादा अनुसार संतोष को जन्म दिया है। यदि कोई मनुष्य (ऊपर दिए हुए विचारों को) समझ ले तो वह इस योग्य हो जाता है कि उसके अंदर अकाल-पुरख का प्रकाश हो जाए। (वरना, सोच के तो देखो कि) बैल पे धरती का कितना बेअंत भार है (वह बेचारा इतने भार को कैसे उठा सकता है?), (दूसरी बात ये भी है कि अगर

धरती के नीचे बैल है, उस बैल को सहारा देने के लिए नीचे और धरती हुई, उस) धरती के और बैल, उसके नीचे (धरती के नीचे) और बैल, फिर और बैल, (इसी तरह आखिरी) बैल के भार का सहारा बनने के लिए और कौन सा आसरा होगा?

जीअ जात रंगा के नाव । सभना लिखिआ वुड़ी कलाम । एहु लेखा लिख जाणै कोइ । लेखा लिखिआ केता होइ । केता ताण सुआलिह रूप । केती दात जाणै कौण कूत । कीता पसाउ एको कवाउ । तिस ते होए लख दरीआउ ।

अर्थः (सृष्टि में) कई जातियों के, कई किस्मों के और कई नामों के जीव हैं। इन सब का एक तार चलती कलम से (अकाल-पुरख की कुदरत का) लेखा लिखा गया है। (पर) कोई विरला मनुष्य ही ये लेखा लिखना जानता है। (भाव, परमात्मा की कुदरत का अंत कोई भी जीव नहीं पा सकता)। (यदि) लेखा लिख (भी लिया जाए, तो ये अंदाजा नहीं लग सकता कि लेखा) कितना बड़ा हो जाए। अकाल-पुरख का बेअंत बल है, बेअंत सुंदर रूप है, बेअंत उसकी दात है; इसका कौन अंदाजा लगा सकता है? (अकाल-पुरख ने) अपने हुक्म के अनुसार ही सारा संसार बना दिया, उसके हुक्म से ही (जिंदगी के) लाखों दरिया बन गए।

कुदरत कवण कहा वीचार । वारिआ न जावा एक वार । जो तुध भावै साई भली कार । तू सदा सलामत निरंकार ।16।

अर्थः (सो) मेरी क्या ताकत है कि (करते की कुदरत की) विचार कर सकूँ? (हे अकाल-पुरख!) मैं तो आप पर एक बार भी सदके होने के काबिल नहीं हूँ (अर्थात मेरी हस्ती बहुत ही तुच्छ है)। हे निरंकार! तू सदा अटल रहने वाला है जो आपको अच्छा लगता है वही काम भला है (भाव तेरी रज़ा में रहना ही ठीक है)।16।

असंख जप असंख भाउ । असंख पूजा असंख तप ताउ ।

अर्थः (अकाल-पुरख की रचना में) अनगिनत जीव तप करते हैं, बेअंत जीव (औरों के साथ) प्यार (का बरताव) कर रहे हैं। कई जीव पूजा कर रहे हैं। और अनगिनत जीव तप साधना कर रहे हैं।

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ । असंख जोग मनि रहहि उदास ।

अर्थः बेअंत जीव वेदों व और धार्मिक पुस्तकोंके पाठ मुंह से कर रहे हैंयोग साधना करने वाले बेअंत मनुष्य अपने मन में (माया की ओर से) उपराम रहते हैं।

असंख भगत गुण गिआन वीचार । असंख सती असंख दातार ।

अर्थः (अकाल-पुरख की कुदरत में) अनगिनत भक्त हैं, जो अकाल-पुरख के गुणों और ज्ञान की विचार कर रहे है, अनेक ही दानी व दाते हैं।

असंख सूर मुह भख सार । असंख मोनि लिव लाइ तार ।

अर्थः (अकाल-पुरख की रचना में) बेअंत शूरवीर हैं जो अपने मुँह पे (भाव, सनमुख हो के) शास्त्रों के वार सहन करते हैं, अनेक मौनी हैं, जो निरंतर बिर्ती जोड़ के बैठे हैं।

कुदरत कवण कहा वीचार । वारिआ न जावा एक वार । जो तुध भावै साई भली कार । तू सदा सलामत निरंकार ।17।

अर्थ: मेरी क्या ताकत है कि मैं करते की कुदरत की विचार कर सकूँ? (हे अकाल-पुरख!) मैं तो आप पर एक बार भी सदके होने के लायक नहीं हूँ (भाव मेंरी हस्ती बहुत तुच्छ है)। हे निरंकार! तू सदा अटल रहने वाला है, जो तुझे ठीक लगता है वही काम भला है (भाव, तेरी रजा में रहना ही ठीक है)।17।

असंख मूरख अंध घोर । असंख चोर हरामखोर ।
असंख अमर कर जाह जोर ।

अर्थ: (निरंकार की रची हुई सृष्टि में) अनेक ही महामूर्ख हैं, अनेको ही चोर हैं, जो पराया माल (चुरा चुरा के) इस्तेमाल कर रहे हैं और अनेक ही ऐसे मनुष्य भी हैं जो (दूसरों पे) हुक्म चला के ज़ोर जबरदस्ती कर करके (अंत में इस संसार से) चले जाते हैं।

असंख गलवढ हतिआ कमाह । असंख पापी पापु कर जाह ।

अर्थ: अनेक ही खूनी मनुष्य लोगों का गला काट रहे हैं और अनेक ही पापी मनुष्य पाप कमा के (आखिर) इस दुनिया से चले जाते हैं।

असंख कूड़िआर कूड़े फिराह । असंख मलेछ मल भख खाह।

अर्थ: अनेकां ही झूठ बोलने वाले स्वभावके मनुष्य झूठ में ही लिप्त रहते हैं और अनेक ही खोटी बुद्धि वाले मनुष्य मल (अभक्ष) ही खाए जा रहे हैं।

असंख निंदक सिर करह भार । नानक नीच कहै वीचार ।

अर्थ: अनेक ही निंदक (निंदा कर के) अपने सिर ऊपर (निंदा का) भार उठा रहे हैं। (हे निरंकार!) अनेक और जीव कई और कुकर्मों में फसे होंगे, मेरी क्या ताकत है कि तेरी कुदरत का पूरा विचार कर सकूँ? नानक विचारा (तो) ये (उपरोक्त तुच्छ सी) विचार पेश करता है।

वारिआ न जावा एक वार । जो तुध भावै साई भली कार । तू सदा सलामत निरंकार ।18।

अर्थ: (हे अकाल-पुरख!) मैं तो आप पर एक बार भी सदके होने के लायक नहीं हूँ (भाव, मैं तेरी बेअंत कुदरत का पूरा विचार करने के लायक नहीं हूँ)। हे निरंकार! तू सदा अटल रहने वाला है, जो तुझे ठीक लगता है वही काम भला है (भाव, तेरी रजा में रहना ही ठीक है; तेरी स्तुति करते रहें हम जीवों के लिए यही भली बात है कि तेरी रज़ा में रहें)।

असंख नाव असंख थाव । अगम अगम असंख लोअ ।
असंख कहह सिर भार होइ ।

अर्थ: (कुदरत के अनेक जीवों व अन्य बेअंत पदार्तों के) असंखों ही नाम हैं। असंखों ही (उनके) स्थान-ठिकाने हैं। (कुदरत में) असंखों ही भवण हैं जिस तक मनुष्य की पहुँच नहीं हो सकती। (पर, यदि मनुष्य कुदरत का लेखा करने के वास्ते शब्द) असंख (भी) कहते हैं, (उनके) सिर पे भार ही होता है (भाव, वो भी भूल करते हैं, 'असंख' शब्द भी प्रयाप्त नहीं है)।

अखरी नाम अखरी सालाह । अखरी गिआन गीत गुण गाह । अखरी लिखण बोलण बाण । अखरा सिर संजोग वखाण । जिन एह लिखे तिस सिर नाह। जिव फुरमाए तिव तिव पाह।

अर्थः (हलाकि, अकाल-पुरख की कुदरत का लेखा करने के लिए शब्द 'असंख' तो कहां रहा, कोई भी शब्द काफी नहीं है, पर) अकाल-पुरख का नाम भी अक्षरों द्वारा ही (लिया जा सकता है), उसकी स्तुति भी अक्षरों द्वारा ही की जा सकती है। अकाल-पुरख का ज्ञान भी अक्षरों द्वारा ही (विचारा जा सकता है)। अक्षरों के द्वारा ही असके गीत और गुणों से वाकिफ हो सकते हैं। बोली का लिखना और बोलना भी अक्षरों के द्वारा ही संभव है। (इस लिए शब्द 'असंख' इस्तेमाल किया गया है, वैसे) जिस अकाल-पुरख ने (जीवों के संजोग के) ये अक्षर लिखे हैं, उसके स्वयं के सिर पर कोई लेख नहीं है (भाव, कोई मनुष्य उस अकाल-पुरख का लेखा नहीं कर सकता)। जैसे जैसे वह अकाल-पुरख हुक्म करता है वैसे ही (जीव अपने संजोग) भोगते हैं।

जेता कीता तेता नाउ । विण नावै नाही को थाउ ।

अर्थः ये सारा संसार, जो अकाल-पुरख ने बनाया है, ये उसका स्वरूप है ('इह विसु संसारु तुम देखदे, इहु हरि का रूपु है, हरि रूपु नदरी आइआ')। कोई भी जगह अकाल-पुरख के स्वरूप से खाली नहीं है, (भाव, जो भी जगह या पदार्थ देखें वही अकाल-पुरख का स्वरूप दिखाई देता है, सृष्टि का जर्रा-जर्रा ईश्वर का ही स्वरूप है)।

कुदरत कवण कहा वीचार । वारिआ न जावा एक वार । जो तुध भावै साई भली कार । तू सदा सलामत निरंकार ।19।

अर्थः मेरी क्या ताकत है कि मैं कुदरत का विचार कर सकूँ? (हे अकाल-पुरख!) मैं तो तेरे ऊपर एक बार भी सदके होने के लायक नहीं हूँ। (भाव, मेरी हस्ती तो बहुत तुच्छ है)। हे निरंकार! तू सदैव स्थिर रहने

वाला है, जो तुझे ठीक लगता है वही काम भला है, (भाव, तेरी रज़ा में रहना ही हम जीवों के लाभदायक है)।19।

भरीऐ हथ पैर तन देह । पाणी धोतै उतरस खेह ।

अर्थः अगर हाथ या पैर या शरीर मैला हो जाए, तो पानी से धोने से वह मैल उतर जाती है।

मूत पलीती कपड़ होइ । दे साबूण लईऐ ओह धोइ ।

अर्थः अगर (कोई) कपड़ा मूत्र से गंदा हो जाए, तो साबुन लगा के उसको धो लेते हैं।

भरीऐ मत पापा कै संग । ओह धोपै नावै कै रंग ।

अर्थः (पर) यदि (मनुष्य की) बुद्धि पापों से मलीन हो जाए, तो वह पाप अकाल-पुरख के नाम में प्यार करने से ही धोया जा सकता है।

पुंनी पापी आखण नाह । कर कर करणा लिख लै जाह । आपे बीज आपे ही खाह । नानक हुकमी आवह जाह ।20।

अर्थः हे नानक! 'पुनी' या 'पापी' निरे नाम नहीं हैं (भाव, निरे कहने की बातें नहीं है, सच-मुच ही) जिस तरह के कर्म तू करेगा वैसे ही संस्कार अपने अंदर अंकुरित करके साथ ले कर अंकुरित करके ले कर जाएगा। जो कुछ तू खुद बीजेगा, उसका फल स्वयं ही खाएगा। (अपने बीजे मुताबिक) अकाल पुरख के हुक्म में जनम मरण के चक्कर में पड़ा रहेगा।20।

तीरथ तप दइआ दत दान । जे को पावै तिल का मान ।

अर्थः तीर्तों, यात्राएं, तपों की साधना, (जीवों पे) दया करनी, दिया हुआ दान- (इन कर्मों के बदले) अगर किसी मनुष्य को कोई आदर-सत्कार मिल भी जाए, तो वह नाम मात्र ही है।

सुणिआ मनिआ मन कीता भाउ । अंतरगत तीरथ मल नाउ ।

अर्थः (पर जिस मनुष्य ने अकाल-पुरख के नाम में) तवज्जो जोड़ी है, (जिस का मन नाम में) पतीज गया है, (और जिसने अपने मन) में (अकाल-पुरख का) प्यार पैदा किया है, उस मनुष्य ने (मानों) अपने भीतर के तीर्थ में मलमल के स्नान कर लिया है (भाव, उस मनुष्य ने अपने अंदर बस रहे अकाल-पुरख में जुड़ के अच्छी तरह अपने मन की मैल उतार ली है)।

सभ गुण तेरे मै नाही कोइ । विण गुण कीते भगत न होइ । सुअसत आथ बाणी बरमाउ । सत सुहाण सदा मन चाउ ।

अर्थः (हे अकाल-पुरख!) अगर तू (स्वयं खुद) गुण (मेरे में) पैदा ना करें तो मुझसे तेरी भक्ति नहीं हो सकती। मेरी कोई बिसात नहीं है (कि मैं तेरे गुण गा सकूँ)। ये सब तेरी ही महानता है। (हे निरंकार!) तेरी सदा जै हो! तू स्वयं ही माया है। तू स्वयं ही वाणी है, तू सवयं ही ब्रह्मा है। (भाव, इस सृष्टि को बनाने वाली माया, वाणी या ब्रह्मा तुझसे अलग हस्ती वाले नहीं हैं, जो लोगों ने माने हुए हैं), तू सदा स्थिर हैं, सुंदर है, तेरा मन हमेशा प्रसन्नता से भरा हुआ है (तू ही जगत को रचने वाला है, तुम्ही को पता है कि इसे तुमने कब बनाया)।

कवण सु वेला वख़त कवण कवण थित कवण वार । कवण सि रुती माहु कवण जित होआ आकार ।

अर्थः वह कौन सा वक्त व समय था, कौन सी तिथि थी, कौन सा दिन था, कौन सी ऋतुऐं थीं और वह कौन सा महीना था, जब ये संसार बना था?

वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेख पुराण । वख़त न पाइओ कादीआ जि लिखन लेख कुराण ।

अर्थः (कब ये संसार बना?) उस समय का पण्डितों को भी पता ना लगा, नहीं तो (इस मसले पे भी) एक पुराण लिखा होता। उस समय के क़ाज़ियों को भी ख़बर ना लगी वर्ना वे भी लिख देते जैसे उन्होंने (आयतें इकट्ठी करके) कुरान (लिखी थी)।

थित वार ना जोगी जाणै रुत माह ना कोई । जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ।

अर्थः (जब जगत बना था तब) कौन सी तिथि थी, (कौन सा) दिन वार था, ये बात कोई जोगी भी नहीं जानता। कोई मनुष्य नहीं (बता सकता) कि तब कौन सी ऋतु थी और कौन सा महीना था। जो निर्माता इस जगत को पैदा करता है, वह स्वयं ही जानता है (कि जगत कब रचा)।

किव कर आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा । नानक आखण सभ को आखै इक दू इक सिआणा ।

अर्थः मैं किस तरह (अकाल-पुरख की वडियाई) बताऊँ, किस तरह अकाल-पुरख की महिमा करूँ, किस तरह (अकाल-पुरख की बड़ाई)

का वर्णन करूँ और किस तरह उसे समझ सकूँ? हे नानक! हरेक जीव अपने आप को दूसरे से ज्यादा समझदार समझ के (अकाल-पुरख की वडियाई) बताने का प्रयत्न करता है (पर बता नहीं सकता)।

वडा साहिब वडी नाई कीता जा का होवै । नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ।21।

अर्थः अकाल-पुरख (सबसे) बड़ा है, उसकी बड़ाई ऊँची है। जो कुछ जगत में हो रहा है, उसीका किया ही हो रहा है। हे नानक! यदि कोई मनुष्य अपनी अक्ल के आसरे (प्रभु की वडियाई का अंत पाने का) प्रयत्न करे, वह अकाल-पुरख के दर पर जा के आदर मान नहीं पाता।21।

पाताला पाताल लख आगासा आगास । ओड़क ओड़क भाल थके वेद कहन इक वात ।

अर्थः (सारे) वेद एक जुबान हो के कहते हैं, "पातालों के नीचे और भी लाखों पाताल हैं और आकाशों के ऊपर और भी लाखों आकाश हैं (बेअंत ऋषी मुनी) जगत के आखिरी छोर को ढूँढढूँढ के थक गए हैं (पर ढूँढ नहीं सके)"।

सहस अठारह कहन कतेबा असुलू इक धात । लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणास ।

अर्थः (मुसलमान व इसाई धर्म की चारों) कतेबें कहती हैं, "कुल अठारह हजार आलम हैं, जिनका आरंभ एक अकाल-पुरख है। (पर सच्ची बात तो ये है कि शब्द) 'हजारों' और 'लाखों' भी कुदरत की गिनती में इस्तेमाल नहीं किए ना सकते (अकाल-पुरख की कुदरत का) लेखा तभी लिखा जा सकता है जो लेखा संभव हो (ये लेखा तो हो ही नहीं सकता,

लेखा करते करते) लेखे का ही खात्मा हो जाता है (गिनती के हिंदसे ही खत्म हो जाते हैं)।

नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आप ।22।

अर्थः हे नानक! जिस अकाल-पुरख को (सारे जगत में) बड़ा कहा जा रहा है, वह स्वयं ही अपने आप को जानता है (वह अपनी वडियाई स्वयं ही जानता है)।22।

सालाही सालाह एती सुरत न पाईआ । नदीआ अतै वाह पवह समुंद न जाणीअह ।

अर्थः सालाहने योग्य अकाल-पुरख की महानताओं का वर्णन कर करके किसी भी मनुष्य ने इतनी समझ नहीं पाई कि वो अंत पा सके कि अकाल-पुरख कितना बड़ा है (महिमा करने वाले मनुष्य उस अकाल-पुरख में ही लीन हो जाते हैं)। (जैसे) नदियां और नाले समुंदर में जा मिलते हैं (और फिर उनका अलग अस्तित्व नहीं रहता) और वह पहचाने नहीं जा सकते (बीच में ही लीन हो जाते हैं, और समुंदर की थाह नहीं पा सकते)।

समुंद साह सुलतान गिरहा सेती माल धन । कीड़ी तुल न होवनी जे तिस मनह न वीसरह ।23।

अर्थः समुंद्रों के बादशाहों के सुल्तान (जिनके खजानों में) पहाड़ जितने धन-पदार्तों के (ढेर हों) (प्रभु की महिमा करने वाले की नजरों में) एक कीड़ी के भी बराबर नहीं होते, यदि (हे अकाल-पुरख!) उस कीड़ी के मन में से तू ना बिसर जाए।23।

अंत न सिफती कहण न अंत । अंत न करणै देण न अंत । अंत न वेखण सुणण न अंत । अंत न जापै किआ मन मंत ।

अर्थः (अकाल-पुरख के) गुणों की कोई हद-बंदी, सीमा नहीं है, गिनने से भी (गुणों का) अंत नहीं पाया जा सकता। (गिने नहीं जा सकते)। अकाल-पुरख की रचना और दातों का अंत नहीं पाया जा सकता। देखने और सुनने से भी उसके गुणों का पार नहीं पा सकते। उस अकाल - पुरख के मन में क्या सलाह हैइस बात का अंत भी नहीं पाया जा सकता।

अंत न जापै कीता आकार । अंत न जापै पारावार ।

अर्थः अकाल-पुरख ने यह जगत (जो दिखाई दे रहा है) बनाया है, पर इस का आखीर, इसके इसपार-उसपार का छोर दिखाई नहीं देता।

अंत कारण केते बिललाह । ता के अंत न पाए जाह ।

अर्थः कई मनुष्य अकाल-पुरख की हदें, सीमाएं तलाशने में व्याकुल हो रहे हैं, पर वे उस की सीमाओं को नहीं ढूँढ सकते।

एह अंत न जाणै कोइ । बहुता कहीऐ बहुता होइ ।

अर्थः (अकाल पुरख के गुणों का) इन सीमाओं को (जिसकी बेअंत जीव तलाश में लगे हुए हैं) कोई मनुष्य नहीं पा सकता। ज्यों ज्यों ये बात कहते जाएं कि वह बड़ा है, त्यों त्यों वह और भी बड़ा, और भी बेअंत प्रतीत होने लग पड़ता है।

वडा साहिब ऊचा थाउ । ऊचे उपर ऊचा नाउ । एवड ऊचा होवै कोइ । तिस ऊचे कउ जाणै सोइ ।

अर्थः अकाल-पुरख बहुत बड़ा है, उसका ठिकाना ऊँचा है। उसकी शोहरत भी ऊँची है। अगर कोई और उसके जितना बड़ा हो, वह ही उस ऊचे अकाल-पुरख को समझ सकता है (कि वह कितना बड़ा है)।

जेवड आप जाणै आप आप । नानक नदरी करमी दात ।24।

अर्थः अकाल-पुरख स्वयं ही जानता है कि वह खुद कितना बड़ा है। हे नानक! (हरेक) दात, मिहर की नज़र करने वाले अकाल पुरख की बख़्शिश से ही मिलती है।24।

बहुता करम लिखिआ ना जाइ । वडा दाता तिल न तमाइ ।

अर्थः अकाल-पुरख बहुत सी दातें देने वाला है, उसे तिलमात्र भी लालच नहीं है। उसकी बख्शिश इतनी बड़ी है कि लिखने में नहीं लाई जा सकती।

केते मंगह जोध अपार । केतिआ गणत नही वीचार । केते खप तुटह वेकार ।

अर्थः बेअंत शूरवीर व कई और ऐसे, जिनकी गिनती पे विचार नहीं हो सकती, (अकाल-पुरख के दर पे) मांग रहे हैं। कई जीव (उसकी दातें बरत के) विकारों में ही खप खप नाश हो रहे हैं।

केते लै लै मुकर पाह । केते मूरख खाही खाह ।

अर्थः बेअंत जीव (अकाल-पुरख के दर से पदार्थ) प्राप्त कर के मुकर जाते हैं (भाव, कभी शुक्राने में आ के ये नहीं कहते कि सभ पदार्थ प्रभु स्वयं दे रहा है)। अनेक मूर्ख (पदार्थ ले कर) खाए ही जाते हैं (पर दातार को याद नहीं रखते)।

केतिआ दूख भूख सद मार । एह भि दात तेरी दातार ।

अर्थः अनेक ही जीवों को सदैव मार, कष्ट व भूख (ही भाग्य में लिखे हैं)। (पर) हे देनहार अकाल-पुरख! ये भी तेरी बख़्शिश ही है (क्योंकि, इन दुखों, कष्टों के कारण ही मनुष्य को रजा में चलने की समझ पड़ती है)।

बंद खलासी भाणै होइ । होर आख न सकै कोइ ।

अर्थः और (माया के मोह रूप) बंधन से छुटकारा अकाल-पुरख की रज़ा में चलने से ही होता है। रज़ा के बग़ैर कोई और तरीका कोई मनुष्य नहीं बता सकता (भाव, कोई मनुष्य नहीं बता सकता कि ईश्वर की रज़ा में चलने के अलावा मोह से छुटकारे का और कोई तरीका भी हो सकता है)।

जे को खाइक आखण पाइ । ओह जाणै जेतीआ मुह खाइ ।

अर्थः (पर) यदि कोई मनुष्य (माया से छुटकारे का और कोई साधन) बताने का प्रयत्न करे तो वही जानता है जितनी चोटें वह (इस मूर्खता के कारण) अपने मुंह पे खाता है (भाव, 'झूठ' से बचने का एक ही तरीका है कि मानव रजा में चले। पर अगर कोई मूर्ख कोई और तरीका ढूँढता है तो इस 'झूठ' से बचने की बजाए बलिक ज्यादा दुखी होता है)।

आपे जाणै आपे देइ । आखहि सि भि केई केइ ।

अर्थः (सारे ना-शुक्रे ही नहीं हैं) अनेकां लोग ये बात भी कहते हैं कि अकाल-पुरख स्वयं ही (जीवों की जरूरतों को) जानता है तथा स्वयं ही (दातें) देता है।

जिस नो बखसे सिफत सालाह । नानक पातिसाही पातिसाह ।25।

अर्थः हे नानक! जिस मनुष्य को अकाल-पुरख अपनी महिमा की बख्शिश करता है, वह बादशाहों का बादशाह बन जाता है। (महिमा ही सब से ऊँची दात है)।25।

अमुल गुण अमुल वापार । अमुल वापारीए अमुल भंडार । अमुल आवह अमुल लै जाह । अमुल भाइ अमुला समाह ।

अर्थः (अकाल-पुरख के) गुण अमोलक हैं (उसके गुणों का मुल्य नहीं पड़ सकता, अमुल्य हैं), (इन गुणों के) व्यापार करने भी अमुल्य हैं। उन मनुष्यों का भी मुल्य नहीं पड़ सकता, जो (अकाल-पुरख के गुणों का) व्यापार करते हैं, (गुणों के) खजाने (भी) अमुल्य हैं। उन मनुष्यों का मूल्य नहीं पड़ सकता, जो (इस व्यापार के लिए जगत में) आते हैं। वो भी अति भाग्यशाली हैं, जो (ये सौदा खरीद के) ले जाते हैं। जो मनुष्य अकाल-पुरख के प्रेम में हैं और जो मनुष्य उस अकाल-पुरख में लीन हुये हुए हैं वह भी अमुल्य हैं।

अमुल धरम अमुल दीबाण । अमुल तुल अमुल परवाण । अमुल बखसीस अमुल नीसाण । अमुल करम अमुल फुरमाण ।

अर्थः अकाल-पुरख का कानून और उसका राज दरबार अनमोल हैं। वह तराजू भी अनमोल है और वह बाँट भी अनमोल है (जिससे वह जीवों के अच्छे-बुरे कर्मों को तौलता है)। उसकी रहिमत व रहिमत के निशान भी अमोलक हैं। अकाल-पुरख की बख्शिश तथा हुक्म भी मुल्यों से परे हैं। (किसी का भी अंदाजा नहीं लग सकता)।

अमुलो अमुल आखिआ न जाइ । आख आख रहे लिव लाइ।

अर्थः अकाल-पुरख सभ अंदाजों से परे है, उसका कोई अंदाजा नहीं लग सकता। जो मनुष्य ध्यान लगा लगा के अकाल-पुरख का अंदाजा लगाते हैं, वह (अंत को) रह जाते हैं।

आखह वेद पाठ पुराण । आखह पड़े करह वखिआण । आखह बरमे आखह इंद । आखह गोपी तै गोविंद ।

अर्थः वेद मंत्र व पुराण अकाल-पुरख का अंदाजा लगा लेते हैं। विद्वान लोग भी, जो (और लोगों को) उपदेश करते है, (अकाल-पुरख का) बयान करते हैं। कई ब्रह्मा, कई इंद्र, गोपियां और कई कान्हें अकाल-पुरख का अंदाजा लगा रहे हैं।

आखह ईसर आखह सिध । आखह केते कीते बुध । आखह दानव आखह देव । आखह सुर नर मुन जन सेव ।

अर्थः कई शिव और सिद्ध, अकाल-पुरख के पैदा किये हुए बेअंत बुद्ध, राक्षस और देवते, देव स्वभाव मनुष्य, मुनि जन तथा सेवक अकाल-पुरख का अंदाजा लगाते हैं।

केते आखह आखण पाह । केते कह कह उठ उठ जाह । एते कीते होर करेह । ता आख न सकह केई केइ ।

अर्थः बेअंत जीव अकाल-पुरख का अंदाजा लगा रहे हैं, और बेअंत ही लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं। बेअंत जीव अंदाजा लगा लगा के इस जगत से चले जा रहे हैं। जगत में इतने (बेअंत) जीव पैदा किये हुए हैं (जो बयान कर रहे हैं), (पर, हे हरि!) अगर तू और भी (बेअंत जीव) पैदा कर दे तो भी कोई जीव तेरा अंदाजा नहीं लगा सकता।

जेवड भावै तेवड होइ । नानक जाणै साचा सोइ । जे को आखै बोल विगाड़ । ता लिखीऐ सिर गावारा गावार ।26।

अर्थः हे नानक! परमात्मा जितना चाहता है उतना ही बड़ा हो जाता है (अपनी कुदरत बढ़ा लेता है)। वह सदा स्थिर रहने वाला हरि स्वयं ही जानता है (कि वह कितना बड़ा है)। अगर कोई बड़बोला मनुष्य ये बताने लगे (कि अकाल पुरख कितना बड़ा है) तो वह मनुष्यों में महा मूर्ख गिना जाता है।26।

सो दर केहा सो घर केहा जित बह सरब समाले । वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे । केते राग परी सिउ कहीअन केते गावणहारे ।

अर्थः वह दर बड़ा ही आश्चर्य भरा है जहाँ बैठ के (हे निरंकार!) तू सारे जीवों की संभाल कर रहा है। (तेरी इस रची हुई कुदरत में) अनेक और अनगिनत वाजे (संगीत-यंत्र) और राग हैं; बेअंत ही जीव उन बाजों को बजाने वाले हैं, रागनियों समेतबेअंत ही राग कहे जाते हैं, और अनेको ही जीव (इन रागों के) गाने वाले हैं (जो तुझे गा रहे हैं)।

गावह तुहनो पउण पाणी बैसंतर गावै राजा धरम दुआरे । गावह चित गुपत लिख जाणह लिख लिख धरम वीचारे ।

अर्थः (हे निरंकार!) पवन, पानी, अग्नि तेरा गुण गान कर रहे हैं। धर्मराज तेरे दर पे (खड़ा होकर) तेरी स्तुति कर रहा है। वह चित्रगुप्त भी

जो (जीवों के अच्छे-बुरे कर्मों के लेखे) लिखने जानते हैं और जिनके लिखे हुए को धर्मराज विचारता है, तेरी महानताओं का गुणगान कर रहे हैं।

गावह ईसर बरमा देवी सोहन सदा सवारे । गावह इंद इदासण बैठे देवतिआ दर नाले ।

अर्थः (हे अकाल पुरख!) देवियां, शिव व ब्रह्मा, जो तेरे संवारे हुए हैं, तुझे गा रहे हैं। कई इंद्र अपने तख्त पे बिराजमान देवताओं समेत तेरी स्तुति कर रहे हैं।

गावह सिध समाधी अंदर गावन साध विचारे । गावन जती सती संतोखी गावह वीर करारे ।

अर्थः सिद्ध लोग समाधियां लगा के तुझे गा रहे हैं, साधु जन चिंतन कर कर के तुझे सालाह रहे हैं। जत-धारी, दान करने वाले और संतोषी पुरष तेरा गुणगान कर रहे हैं और (बेअंत) महाबली योद्धे तेरी स्तुति कर रहे हैं।

गावन पडित पड़न रखीसर जुग जुग वेदा नाले । गावह मोहणीआ मन मोहन सुरगा मछ पइआले ।

अर्थः (हे अकाल-पुरख!) पण्डित और महाऋिषी जो (वेदों को) पढ़ते हैं। वेदों समेत तुझे गा रहे हैं। सुंदर स्त्रीयां जो स्वर्ग, मात लोक व पाताल लोक में (अर्थात, हर जगह) मानव मन को मोह लेती हैं, भी तुझे गा रही हैं।

गावन रतन उपाए तेरे अठसठ तीरथ नाले । गावह जोध महाबल सूरा गावह खाणी चारे । गावह खंड मंडल वरभंडा कर कर रखे धारे ।

अर्थः (हे निरंकार!) तेरे पैदा किए हुए रतन अढ़सठ तीर्थों समेत तुझे गा रहे हैं। महाबली योद्धे व शूरवीर भी तेरी स्तुति कर रहे हैं। चारों खानों के जीव-जन्तु तुझे गा रहे हैं। सारी सृष्टि, सृष्टि के सारे खण्ड और चक्कर, जो तूने पैदा करके टिका रखे हैं, तुझे गाते हैं।

सेई तुधुनो गावह जो तुध भावन रते तेरे भगत रसाले । होर केते गावन से मै चित न आवन नानक किआ वीचारे ।

अर्थः (हे अकाल-पुरख!) (असल में तो) वही तेरे प्रेम में रंगे हुए रसिए भक्तजन तुझे गाते हैं (भाव उनका गाना ही सफल है) जो तुझे अच्छे लगते हैं। अनेक और जीव तुझे गा रहे हैं, जो मुझसे गिने भी नहीं जा सकते। (भला) नानक (विचारा) क्या विचार कर सकता है?

सोई सोई सदा सच साहिब साचा साची नाई । है भी होसी जाइ न जासी रचना जिन रचाई ।

अर्थः जिस अकाल-पुरख ने यह सृष्टि पैदा की है, वह इस वक्त मौजूद है, सदैव रहेगा, ना वह जन्मा है ना ही मरेगा। वह अकाल-पुरख सदा स्थिर है, वह सच्चा मालिक है, उसकी महानता भी सदा अटल है।

रंगी रंगी भाती कर कर जिनसी माइआ जिन उपाई । कर कर वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ।

अर्थः जिस अकाल-पुरख ने कई रंगों, किस्मों, जिनसों की माया रच दी है, वह जैसे उसकी रज़ा है, (भाव, जितना बड़ा वह स्वयं है उतने बड़े जिगरे से जगत को रच के) अपने पैदा किये हुए की संभाल भी कर रहा है।

जो तिस भावै सोई करसी हुकम न करणा जाई ।
सो पातिसाह साहा पातिसाहिब नानक रहण रजाई ।27।

अर्थः जो कुछ अकाल-पुरख को भाता है, वह वही करता है। कोई भी जीव अकाल-पुरख को आगे से हुक्म नहीं कर सकता (उसे ये नहीं कह सकता कि "तू ऐसे कर, ऐसे ना कर")। अकाल-पुरख बादशाह है, बादशाहों का भी बादशाह है। हे नानक! (जीवों का) उसकी रजा में रहना (ही फबता है)।27।

मुंदा संतोख सरम पत झोली धिआन की करह बिभूत । खिंथा काल कुआरी काइआ जुगत डंडा परतीत ।

अर्थः (हे योगी!) अगर तू संतोष को अपनी मुंद्राएं बनाए, मेहनत को खप्पर और झोली, और अकाल-पुरख के ध्यान की राख (शरीर पर मले), मौत (का भय) तेरी गुदड़ी हो, शरीर को विकारों से बचा के रखना तेरे लिये योग की रहित मर्यादा हो और श्रद्धा को डंडा बनाए (तो अंदर से झूठ की दीवार टूट सकती है।)

आई पंथी सगल जमाती मन जीतै जग जीत । आदेस तिसै आदेस । आद अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ।28।

अर्थः जो मनुष्य सारी सृष्टि को अपने सज्जन-मित्र समझता है (असल में) वही आई पंथ वाला है। अगर अपना मन जीत लिया जाए तो सारा जगत ही जीत लिया जाता है (भाव, तब जगत की माया परमात्मा से विछोड़ नहीं सकती)। (सो, झूठ की दीवार गिराने के लिए) केवल उस को (अकाल-पुरख) प्रणाम करो, जो (सब का) आरम्भ है, जो शुद्ध-स्वरूप है,

जिसका कोई अंत नहीं (ढूँढ सकता), जो नाश रहित है और जो सदैव इकसार रहता है।28।

भुगत गिआन दइआ भंडारण घट घट वाजह नाद । आप नाथ नाथी सभ जा की रिध सिध अवरा साद । संजोग विजोग दुइ कार चलावह लेखे आवह भाग ।

अर्थ: (हे जोगी! यदि) अकाल-पुरख की सर्वव्यापकता का ज्ञान तेरे लिए भण्डारा (चूरमा) हो, दया इस (ज्ञान रूप) भण्डारे को बाँटने वाली हो, हरेक जीव के अंदर जो (जिंदगी की) लहर चल रही है, (भण्डारा खाने के समय यदि तेरे अंदर) यह नादी बज रही हो, तेरा नाथ स्वयं अकाल-पुरख हो, जिसके वस में सारी सृष्टि है (तो झूठ की दीवार तेरे अंदर से टूट के परमात्मा से तेरी दूरी खतम हो सकती है। योग साधनों से प्राप्त हुई रिद्धियां व्यर्थ हैं, ये) रिद्धियां और सिद्धियां (तो) दूसरास्वाद हैं (ईश्वर की राह से परे ले जाते हैं)। अकाल-पुरख की 'संजोग' सत्ता व 'विजोग' सत्ता दोनों (मिल के इस संसार की) कार को चला रहे हैं (भाव, पिछले संयोगों सदके परिवार आदि के जीव यहाँ आ के एकत्र होते हैं। फिर रजा में बिछड़ के अपनी-अपनी बारी यहाँ से चले जाते हैं) और (सभ जीवों के किये कर्मों के) लेख अनुसार (दर्जा-ब-दर्जा सुख-दुख के) छादे मिल रहे हैं (अगर ये यकीन बन जाए तो अंदर से झूठ की दीवार टूट जाती है।)

आदेस तिसै आदेस । आद अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ।29।

अर्थ: (सो, झूठ की दीवार दूर करने के लिए) केवल उस को (अकाल-पुरख) प्रणाम करो, जो (सब का) आरम्भ है, जो शुद्ध-स्वरूप है,

जिसका कोई अंत नहीं (ढूँढ सकता), जो नाश रहित है और जो सदैव इकसार रहता है।29।

एका माई जुगत विआई तिन चेले परवाण । इक संसारी इक भंडारी इक लाए दीबाण ।

अर्थः (लोगों में ये ख़्याल आम प्रचलित है कि) अकेली माया (किसी) जुगति (युक्ति) से गर्भवती हुई और प्रत्यक्ष तौर पे उसके तीन पुत्र पैदा हो गए। उनमें से एक (ब्रह्मा) घरबारी बन गया (भाव, जीव-जन्तुओं को पैदा करने लग पड़ा), एक (विष्णु) भण्डारे का मालिक बन गया (भाव, जीवों को रिजक पहुँचाने का काम करने लगा), और एक (शिव) कचहरी लगाता है (भाव, जीवों को संहारता है)।

जिव तिस भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाण । ओह वेखै ओना नदर न आवै बहुता एहु विडाण ।

अर्थः (पर असल में बात ये है कि) जिस तरह उस अकाल-पुरख को ठीक लगता है और जैसे उसका हुक्म होता है, वैसे ही वह संसार की (कार) कार्यवाही चला रहा है, (इन ब्रह्मा, विष्णु और शिव के हाथ में कुछ नहीं)। ये बड़ा आश्चर्य जनक चमत्कार है कि वह अकाल-पुरख (सभी जीवों को) देख रहा है, पर जीवों को अकाल-पुरख नहीं दिखाई देता।

आदेस तिसै आदेस । आद अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ।30।

अर्थः (सो, ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि की जगह) केवल उस को (अकाल-पुरख) प्रणाम करो, जो (सब का) आरम्भ है, जो शुद्ध-स्वरूप है, जिसका कोई अंत नहीं (ढूँढ सकता), जो नाश रहित है और जो सदैव एक जैसा ही रहता है (यही है तरीका उस प्रभु से दूरी दूर करने का)।30।

आसण लोइ लोइ भंडार । जो किछ पाइआ सु एका वार । कर कर वेखै सिरजणहार । नानक सचे की साची कार ।

अर्थः अकाल-पुरख के भण्डारों का ठिकाना हरेक भवन में है (भाव, हरेक भवन में अकाल-पुरख के भण्डारे चल रहे हैं)। जो कुछ (अकाल-पुरख ने उन भण्डारों में) डाला है, एक बार में ही डाल दिया है (भाव, उसके भण्डारे सदा अतुट हैं)। सृष्टि को पैदा करने वाला अकाल-पुरख (जीवों को) पैदा करके (उनकी) सम्भाल कर रहा है। हे नानक! सदा स्थिर रहने वाले (अकाल-पुरख) की (सृष्टि की संभाल वाली) यह कार सदा अटल है।

आदेस तिसै आदेस । आद अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ।31।

अर्थः (सो) केवल उस को (अकाल-पुरख) प्रणाम करो, जो (सब का) आरम्भ है, जो शुद्ध-स्वरूप है, जिसका कोई अंत नहीं (ढूँढ सकता), जो नाश रहित है और जो सदैव एक जैसा ही रहता है (यही है तरीका उस प्रभु से दूरी मिट सकती है)।31।

इक दू जीभौ लख होह लख होवह लख वीस । लख लख गेड़ा आखीअह एक नाम जगदीस ।

अर्थः यदि एक जीभ (जिहवा) से लाखों जीभें हो जाएं, और लाखों जीभों से बीस लाख बन जाएं, (इन बीस लाख जीभों से) अकाल-पुरख के एक नाम को एक-एक लाख बार कहें (तो भी झूठे मनुष्य की झूठी ही ठीस है, अर्थात, जो ये सोचे कि मैं अपनी मेहनत के बल पर इस

तरह नाम स्मरण करके अकाल-पुरख को पा सकता हूँ, तो ये एक झूठा अहंकार है)।

एत राह पत पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस । सुण गला आकास की कीटा आई रीस ।

अर्थ: इस रास्ते में (परमात्मा से दूरी दूर करने वाले राह में) अकाल-पुरख को मिलने के लिए जो सीढ़ीयां हैं, उन के ऊपर स्वैभाव गवा के ही चढ़ सकते हैं। (लाखों जीभों के साथ भी गिनती के स्मरण से कुछ नहीं बनता। अहम् भाव दूर करने के बिना इन गिनती के पाठों का उद्यम यूँ है, मानों) आकाश की बातें सुन के कीड़ियों को भी ये रीस आ गयी है (कि हम भी आकाश पर पहुँच जाएं)।

नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ।32।

अर्थ: हे नानक! यदि अकाल-पुरख मेहर की नज़र करे, तभी उससे मिला जा सकता है, (वर्ना) झूठे मनुष्य की खुद की निरी झूठी ही वडियाई है (कि मैं स्मरण कर रहा हूँ)।33।

आखणि जोर चुपै नह जोर । जोर न मंगण देण न जोर । जोर न जीवण मरण नह जोर । जोर न राज माल मन सोर।

अर्थ: बोलने में और चुप रहने में भी हमारा कोई अपना इख्तियार नहीं है। ना ही मांगने में हमारी मन-मर्जी चलती है और ना ही देने में। जीने में और मरने में भी हमारी कोई ताकत (काम नहीं देती)। इस राज व वैभव की प्राप्ति में भी हमारा कोई जोर नहीं चलता (जिस राज माल की वजह से हमारे) मन में इतनी फूँ-फां होती है।

जोर न सुरती गिआन वीचार । जोर न जुगती छुटै संसार । जिस हथ जोर कर वेखै सोइ । नानक उतम नीच न कोइ ।33।

अर्थ: आत्मिक जागृति अवस्था में, ज्ञान में और विचार में रहने की भी हमारी स्मर्था नहीं है। उस जुगती में रहने के लिए भी हमारा इख्तियार नहीं है कि जिससे जनम मरण खत्म हो सके। वही अकाल-पुरख रचना रच के (उसकी हर प्रकार से) सम्भाल करता है, जिसके हाथ में स्मर्था है। हे नानक! अपने आप में ना कोई मनुष्य उत्तम है और ना ही नीच (भाव, जीवों को सदाचारी या दुराचारी बनाने वाला भी वह प्रभु स्वयं ही है) (अगर नाम जपने की बरकत से ये निश्चय बन जाए तो ही प्रमात्मा से जीव का फासला दूर होता है।33।

राती रुती थिती वार । पवण पाणी अगनी पाताल । तिस विच धरती थाप रखी धरम साल । तिस विच जीअ जुगत के रंग । तिन के नाम अनेक अनंत ।

अर्थ: रातें, ऋतुएं, तिथिआं और वार, हवा, पानी, अग्नि व पाताल- इन सभी की एकत्रता में (अकाल-पुरख ने) धरती को धर्म कमाने का स्थान बना के टिका दिया है। इस धरती पर कई जुगतियों और रंगों के जीव (बसते हैं), जिनके अनेक और अनगिनत नाम हैं।

करमी करमी होइ वीचार । सचा आप सचा दरबार । तिथै सोहन पंच परवाण । नदरी करम पवै नीसाण ।

अर्थ: (इन अनेक नामों और रंगों वाले जीवों के) अपने-अपने किये कर्मों के अनुसार (अकाल-पुरख के दर पे) निर्णय होता है (जिसमें कोई कोताही नहीं होती क्योंकि न्याय करने वाला) अकालपुख खुद सच्चा

है, उसका दरबार भी सच्चा है। उस दरबार में संत जन प्रत्यक्ष तौर पे शोभायमान होते हैं और मेहर की नजर करने वाले अकाल-पुरख की बख्शिश से (उन संत जनों के माथे पे) वडियाई का निशान चमक पड़ता है।

कच पकाई ओथै पाइ । नानक गइआ जापै जाइ ।34।

अर्थः (यहाँ संसार में किसी का बड़ा छोटा कहलाना कोई मायने नहीं रखता, इनके) कच्चे-पक्के की परख तो अकाल-पुरख के दर पे होती है। हे नानक! अकाल-पुरख के दर पर पहुँच के ही ये समझ आती है (कि असल में कौन पक्का है कौन कच्चा)।

धरम खंड का एहो धरम । गिआन खंड का आखहु करम ।

अर्थः धर्म खण्ड का मात्र यही कर्तव्य है, (जो ऊपर बताया गया है)। अब ज्ञान खण्ड के कर्तव्यों को भी समझ लो (जो अगली तुकों में है)।

केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस । केते बरमे घाड़त घड़ीअह रूप रंग के वेस ।

अर्थः (अकाल-पुरख की रचना में) कई प्रकार की पवन, पानी और अग्नियां हैं, कई कृष्ण हैं और कई शिव हैं। कई ब्रह्मा पैदा किए जा रहे हैं, जिस के कई रूप, कई रंग और कई वेश हैं।

केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस । केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस । केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ।

अर्थः (अकाल-पुरख की कुदरत में) बेअंत धरतियां हैं, बेअंत मेरु पर्वत, बेअंत ध्रुअ भक्त व उनके उपदेश हैं। बेअंत इंद्र देवते, चंद्रमा,

बेअंत सूरज और बेअंत भवन-चक्र हैं। बेअंत सिद्ध हैं, बेअंत बुद्ध अवतार हैं, बेअंत नाथ हैं और बेअंत देवियों के पहिरावे हैं।

केते देव दानव मुन केते केते रतन समुंद । केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद । केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंत न अंत ।३५।

अर्थः (अकाल-पुरख की रचना में) बेअंत देवते व दैंत हैं, बेअंत मुनि हैं, बेअंत प्रकार के रतन तथा (रत्नों के) समुंदर हैं। (जीव रचना की) बेअंत खाणीयां हैं। (जीवों की बोली भी चार नहीं) बेअंत बाणियां हैं। बेअंत बादशाह और राजे हैं, बेअंत प्रकार के ध्यान हैं (जो जीव मन द्वारा लगाते हैं), बेअंत सेवक हैं। हे नानक! कोई अंत नहीं पा सकता।३५।

गिआन खंड मह गिआन परचंड । तिथै नाद बिनोद कोड अनंद ।

अर्थः ज्ञानखण्ड में (भाव मनुष्य की ज्ञान अवस्था में) ज्ञान ही बलवान होता है। इस अवस्था में (मानों) सभी रागों, तमाशों व चमत्कारों का आनन्द आ जाता है।

सरम खंड की बाणी रूप । तिथै घाड़त घड़ीऐ बहुत अनूप ।

अर्थः श्रम अवस्था की बनावट सुंदरता है (भाव, इस अवस्था में आ के मन दिनों दिन खूबसूरत बनना शुरू हो जाता है)। इस अवस्था में (नई) घाढ़त के कारण मन बहुत सुंदर घढ़ा जाता है।

ता कीआ गला कथीआ ना जाह । जे को कहै पिछै पछुताइ।

अर्थः उस अवस्था की बातें ब्यान नहीं की जा सकतीं। यदि कोई मनुष्य बयान करता है, तो बाद में पछताता है (क्योंकि वह बयान करने से असमर्थ रहता है)।

तिथै घड़ीऐ सुरत मत मन बुध । तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुध ।36।

अर्थः उस मेहनत वाली अवस्था में मनुष्य की तवज्जो और मति घढ़ी जाती है, (भाव, श्रुति और मति ऊँची हो जाती है) और मन में जागृति पैदा हो जाती है। श्रम खण्ड में देवताओं और सिद्धों वाली बुद्धि (मनुष्य के भीतर) बन जाती है।36।

करम खंड की बाणी जोर । तिथै होर न कोई होर । तिथै जोध महाबल सूर । तिन मह राम रहिआ भरपूर ।

अर्थः बख्शिश, रहिमत वाली अवस्था की बनावट बल है, (भाव, जब मनुष्य पर अकाल-पुरख की मेहर की नज़र होती है, तो उसके अंदर ऐसा बल पैदा होता है कि विषय-विकार उस पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते), क्योंकि उस अवस्था में (मनुष्य के अंदर) अकाल-पुरख के बिना और कोई दूसरा बिल्कुल नहीं रहता। उस अवस्था में (जो मनुष्य हैं वह) योद्धे, महांबली व सूरमें हैं, उन के रोम रोम में अकाल-पुरख बस रहा है।

तिथै सीतो सीता महिमा माह । ता के रूप न कथने जाह । ना ओह मरह न ठागे जाह । जिन कै राम वसै मन माह ।

अर्थः उस (बख्शिश) अवस्था में पहुँचे हुए मनुष्य का मन पूरी तरह से अकाल-पुरख की वडिआईमें परोया रहता है, (उनके शरीर ऐसे कंचन सी चमक वाले हो जाते हैं कि) उनके सुंदर रूप का वर्णननहीं किया

जा सकता। (उनके मुख पर नूर ही नूर लिशकारे मारता है)। (इस अवस्था में) मन में अकाल-पुरख बसता है, वे आत्मिक मौत नहीं मरतेऔर माया उनको ठग नहीं सकती।

तिथै भगत वसह के लोअ । करह अनंद सचा मन सोइ ।

अर्थ: उस अवस्था में कई भवनों के भक्तजन बसते हैं, जो सदा प्रसन्न रहते हैं, (क्योंकि) वह सच्चा अकाल पुरख उनके मन में (मौजूद) है।

सच खंड वसै निरंकार । कर कर वेखै नदर निहाल ।

अर्थ: सच खंड में (भाव, अकाल-पुरख के साथ एकरूप होने वाली अवस्था में) मनुष्य के अंदर वह अकाल-पुरख खुद ही बसता है, जो सृष्टि को रच रच के मेहर की नजर से उसकी संभाल करता है।

तिथै खंड मंडल वरभंड । जे को कथै त अंत न अंत । तिथै लोअ लोअ आकार । जिव जिव हुकम तिवै तिव कार । वेखै विगसै कर वीचार । नानक कथना करड़ा सार ।37।

अर्थ: उस अवस्था में (भाव, अकाल-पुरख के साथ एकरूप होने वाली अवस्था में) मनुष्य को बेअंत खण्ड, मण्डल व बेअंत ब्रह्मिण्ड (दिखाई देते हैं, इतने बेअंत कि) यदि कोई मनुष्य उनका कथन करने लगे, तो उसकी कमी नहीं पड़ सकती,कभी ना खत्म होने वाला सिलसिला। उस अवस्था में बेअंत भवन तथा आकार दिखाई देते हैं (जिस सभी में) उसी तरह कार-व्यवहार चल रहा है जिस तरह अकाल-पुरख का हुक्म होता है (भाव, इस अवस्था में पहुँच के मनुष्य को हर जगह अकाल-पुरख की रजा वर्तती दिखती है)। (उसको प्रत्यक्ष दिखाई देता है कि) अकाल-पुरख विचार करके (सभ जीवों की) संभाल करता है और खुश होता है। हे नानक! इस

अवस्था का कथन करना बहुत मुश्किल है (भाव, ये अवस्था बयान नहीं हो सकती, अनुभव ही की जा सकती है बस!)।37।

जत पाहारा धीरज सुनिआर । अहरण मत वेद हथीआर ।

अर्थः (यदि) अकाल-पुरख का डर धौंकनी (हो), मेहनत आग (हो), प्रेम कुठाली हो, तो (हे भाई!) उस (कुठाली) में अकाल-पुरख का अमृत साथ गलाओ, (क्योंकि ऐसी ही) सच्ची टकसाल में (गुरु का) शब्द घढ़ा जा सकता है।

भउ खला अगन तप ताउ । भांडा भाउ अम्रित तित ढाल । घड़ीऐ सबद सची टकसाल ।

अर्थः (यदि) अकाल-पुरख का डर धौंकनी (हो), मेहनत आग (हो), प्रेम कुठाली हो, तो (हे भाई!) उस (कुठाली) में अकाल-पुरख का अमृत साथ गलाओ, (क्योंकि ऐसी ही) सच्ची टकसाल में (गुरु का) शब्द घढ़ा जा सकता है।

जिन कउ नदर करम तिन कार । नानक नदरी नदर निहाल ।38। सलोक ।

अर्थः ये कार्य-व्यवहार उन्हीं मनुष्यों का ही है, जिस पे मेहर की नजर होती है। हे नानक! वे मनुष्य अकाल-पुरख की कृपा-दृष्टि से निहाल हो जाते हैं।38।

पवण गुरू पाणी पिता माता धरत महत । दिवस रात दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगत ।

अर्थः प्राण (शरीर में इस प्रकार हैं जैसे) गुरु (जीवों की आत्मा के लिए) है। पानी (सभी जीवों का) पिता है और धरती (सबकी) बड़ी माँ है। दिन और रात दोनों खेल खिलाने वाला और खिलाने वाली हैं, सारा

संसार खेल रहा है (भाव, संसार के सारे जीव रात को सोने में और दिन के कार्य-व्यवहार में परखे जा रहे हैं) ।

चगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरम हदूर । करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूर ।

अर्थः धर्मराज अकाल पुरख की हज़ूरी में (जीवों के किये हुए) सही कामों को विचारता है। अपने-अपने (इन किए हुये) कर्मों के अनुसार कई जीव अकाल-पुरख के नज़दीक हो जाते हैं और कई अकाल-पुरख से दूर रह जाते हैं।

जिनी नाम धिआइआ गए मसकत घाल । नानक ते मुख उजले केती छुटी नाल ।1।

अर्थः हे नानक! जो मनुष्यों ने अकाल-पुरख का नाम स्मरण किया है, वे अपनी मेहनत सफल कर गये हैं। (अकाल-पुरख के दर पर) वे उज्जवल मुख वाले हैं और (और भी) कई जीव, उनकी संगत में (रह के) ('कूड़ की पालि' गिरा के माया के बंधनों से) आज़ाद हो गए हैं।1।

2. "जाप साहिब"

श्री वाहिगुरू जी की फ़तह ।

चक्र चिहन अर बरन जात अर पात नहिन जिह । रूप रंग अर रेख भेख कोऊ कह न सकत किह । अचल मूरत अनभउ प्रकास अमितोज कहिजै । कोट इंद्र इंद्राण साहु साहाण गणिजै । त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेत नेत बन त्रिण कहत । त्व सरब नाम कथै कवन करम नाम बरणत सुमत ।1।

हे प्रभु, आप ऐसे सत्तावान हैं, जिनका कोई भौतिक स्वरूप नहीं है, जैसे रूप, रंग, आकार, चिह्न, प्रतीक और वेश। आप किसी जाति, वर्ग या वंश से संबंधित नहीं हैं। आप अपरिवर्तनीय (अपरिवर्तनशील) हैं। स्वयं प्रकाशमान हैं और अपने तेज से हर जगह चमकते हैं। आपके पास असीम शक्तियाँ हैं। आप अरबों इंद्रों जैसे राजाओं के निर्माता हैं । आप राजाओं के राजा हैं। आप तीनों लोकों के स्वामी हैं। देवताओं, मनुष्यों और राक्षसों के अलावा, वनों में रहने वाले सभी वनस्पति प्राणी भी कहते हैं: आप अनंत हैं, आप अनंत हैं। आपके सभी नामों का वर्णन कौन कर सकता है। बुद्धिमान पुरुषों ने आपके केवल क्रियात्मक नामों का ही उल्लेख किया है। (1)

भुजंग प्रयात छंद । नमसत्वं अकाले । नमसत्वं क्रिपाले । नमसत्वं अरूपे । नमसत्वं अनूपे ।२।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं । आप कालातीत (शाश्वत), दयालु, निराकार होते हुए भी सुंदर हैं। (२)

नमसतं अभेखे । नमसतं अलेखे । नमसतं अकाए । नमसतं अजाए ।३।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आपको वस्त्रों की आवश्यकता नहीं है, कोई भी आपका चित्र नहीं बना सकता, आपका कोई शरीर नहीं है, न ही आप किसी स्त्री से पैदा हुए हैं। (३)

नमसतं अगंजे । नमसतं अभंजे । नमसतं अनामे । नमसतं अठामे ।४।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आपको न तो हराया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है। हे प्रभु, आपका कोई नाम नहीं है और न ही रहने के लिए कोई विशेष स्थान है। (४)

नमसतं अकरमं । नमसतं अधरमं । नमसतं अनामं । नमसतं अधामं ।५।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप तक पहुँचने के लिए हमें किसी अनुष्ठान या किसी निर्धारित धार्मिक प्रथा का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। आपका कोई विशेष नाम नहीं है, न ही कोई विशेष निवास स्थान है। (५)

नमसतं अजीते । नमसतं अभीते । नमसतं अबाहे । नमसतं अढाहे ।६।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। न तो कोई आपको हरा सकता है और न ही आपको डरा सकता है। न ही कोई आपको हिला सकता है और न ही आपको (आदर्शों से) गिरा सकता है। (६)

नमसतं अनीले । नमसतं अनादे । नमसतं अछेदे । नमसतं अगाधे ।७।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं । आप हर किसी के जीवन का आधार हैं। कोई नहीं जान सकता कि आप कब अस्तित्व में आए। आप अविभाज्य हैं (हर जगह पूर्ण रूप में मौजूद हैं) और आपका ज्ञान अथाह है। (7)

नमसतं अगंजे । नमसतं अभंजे । नमसतं उदारे । नमसतं अपारे ।८।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आपको पराजित और नष्ट नहीं किया जा सकता। आप सबसे उदार और अनंत हैं। (८)

नमसतं सु एकै । नमसतं अनेकै । नमसतं अभूते । नमसतं अजूपे ।९।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं । आपके अलावा कोई और नहीं है। असंख्य प्राणी आपसे ही हैं। आपका कोई भौतिक रूप नहीं है। आपको पशुओं की बलि की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह आपका प्रकाश है जो पशुओं में मौजूद है, जिसे मनुष्य आपको बलि के रूप में चढ़ाते हैं। (९)

नमसतं त्रिकरमे । नमसतं त्रिभरमे । नमसतं त्रिदेसे । नमसतं त्रिभेसे ।१०।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आपसे मिलने के लिए हमें किसी धार्मिक अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं है। आप किसी भी अंधविश्वास से परे हैं। आप किसी विशेष देश या किसी सांस्कृतिक विशिष्टता से संबंधित नहीं हैं। (10)

नमसतं त्रिनामे । नमसतं त्रिकामे । नमसतं त्रिधाते । नमसतं त्रिघाते ।११।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आपका कोई विशेष नाम नहीं है, और आप इच्छा रहित हैं। आप पाँच तत्वों से नहीं बने हैं और कोई भी आपको चोट नहीं पहुँचा सकता। (11)

नमसतं त्रिधूते । नमसतं अभूते । नमसतं अलोके । नमसतं असोके ।१२।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप अपने निश्चय से अडिग हैं। आप स्वरूप में प्राणियों से भिन्न हैं। आप अदृश्य हैं और आपको कोई शोक नहीं है। (१२)

नमसतं त्रितापे । नमसतं अथापे । नमसतं त्रिमाने । नमसतं निधाने ।१३।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप सभी क्लेशों से मुक्त हैं, आपको स्थापित नहीं किया जा सकता, तीनों लोकों के जीव आपके सामने झुकते हैं, और आप सभी गुणों के भंडार हैं। (१३)

नमसतं अगाहे । नमसतं अबाहे । नमसतं त्रिबरगे । नमसतं असरगे ।१४।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आपकी गहराई अथाह है, और आप ऐसे पर्वत के समान हैं, जिसे हिलाया नहीं जा सकता। आप अकेले ही तीन प्रकार के दान (धर्म, अर्थ और मोक्ष - आध्यात्मिक अनुशासन, भौतिक धन और बंधन से मुक्ति) के दाता हैं, लेकिन कोई भी आपको नहीं बना सकता। (१४)

नमसतं प्रभोगे । नमसतं सुजोगे । नमसतं अरंगे । नमसतं अभंगे ।१५।

हे प्रभु! हम आपको नमस्कार करते हैं । आप ही हैं जो संसार की भौतिक सम्पदा का उपभोग करते हैं, क्योंकि आप प्रत्येक प्राणी में पूर्ण रूप में विद्यमान हैं। साथ ही, चूँकि प्राणियों में उपस्थित होने पर आपका कोई रूप नहीं होता, इसलिए आप सांसारिक वस्तुओं का उपभोग करते समय स्वयं को नष्ट नहीं करते। (15)

नमसतं अगमे । नमसतसतु रमे । नमसतं जलासरे । नमसतं निरासरे ।१६।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप सभी ज्ञान से परे हैं। आप सभी सौंदर्य हैं। आप महासागर की तरह विशाल हैं, और आपको किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है। (16)

नमसतं अजाते । नमसतं अपाते । नमसतं अमजबे । नमसतसतु अजबे ।१७।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप जातिविहीन, वंश और धर्मविहीन हैं। आप अद्भुत रूप से सुंदर व्यक्तित्व वाले हैं। (17)

अदेसं अदेसे । नमसतं अभेसे । नमसतं त्रिधामे । नमसतं त्रिबामे ।१८।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप किसी एक देश के नहीं हैं और निराकार हैं। आपका कोई विशेष घर और कोई पत्नी नहीं है। (18)

नमो सरब काले । नमो सरब दिआले । नमो सरब रूपे । नमो सरब भूपे ।१९।

हे प्रभु, हम आपको प्रणाम करते हैं। आप सबके संहारक हैं, और सबके आधार भी हैं। आप सभी में विद्यमान हैं, और सभी के अधिपति हैं। (१९)

नमो सरब खापे । नमो सरब थापे । नमो सरब काले । नमो सरब पाले ।२०।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप सभी के संहारक हैं, और आधार भी हैं। आप सभी की मृत्यु हैं और पालनकर्ता भी हैं। (20)

नमसतसत देवै । नमसतं अभेवै । नमसतं अजनमे । नमसतं सुबनमे ।२१।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप सत्य के प्रकाश हैं। आपका रहस्य कोई नहीं जानता। आप जन्म नहीं लेते, आपका रंग सुंदर है। (२१)

नमो सरब गउने । नमो सरब भउने । नमो सरब रंगे । नमो सरब भंगे ।२२।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप सभी प्राणियों तक पहुँचते हैं और आप हर जगह मौजूद हैं। आप सभी में सभी रंगों में मौजूद हैं, और उनके संहारक भी हैं। (२२)

नमो काल काले । नमसतसत दिआले । नमसतं अबरने । नमसतं अमरने ।२३।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप मृत्यु को नष्ट कर सकते हैं और दयालु हैं। आप केवल एक रंग तक ही सीमित नहीं हैं, और मृत्यु भी आपको नष्ट नहीं कर सकती। (23)।

नमसतं जरारं । नमसतं क्रितारं । नमो सरब धंधे । नमो सत अबंधे ।२४।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप पर उम्र का कोई प्रभाव नहीं है, और आप सभी के निर्माता हैं। यह आप ही हैं, जिन्होंने सभी को विभिन्न कार्यों में लगाया है। आप एक वास्तविकता हैं और सभी बंधनों से मुक्त हैं। (24)

नमसतं त्रिसाके । नमसतं त्रिबाके । नमसतं रहीमे । नमसतं करीमे ।२५।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आपका कोई सगा-संबंधी नहीं है, और आप निडर हैं। आप दयालु और कृपालु हैं। (25)

नमसतं अनते । नमसतं महंते । नमसतसत रागे । नमसतं सुहागे ।२६।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप अनंत और सबसे महान हैं। आप प्रेम और सत्य हैं, सबसे आदरणीय और सम्माननीय हैं। (26)

नमो सरब सोखं । नमो सरब पोखं । नमो सरब करता । नमो सरब हरता ।२७।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आपकी इच्छा के तहत जीव नष्ट हो जाते हैं, और आप ही उनकी रक्षा भी करते हैं। आप ही सबके रचयिता और संहारक हैं। (27)

नमो जोग जोगे । नमो भोग भोगे । नमो सरब दिआले । नमो सरब पाले ।२८।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप सबसे महान विरक्त व्यक्तित्व हैं, और गृहस्थों में, आप उनमें सबसे महान हैं। आप सभी पर दयालु हैं और उन्हें अपनी सुरक्षा प्रदान करते हैं। (२८)

चाचरी छंद । त्वप्रसाद । अरूप हैं । अनूप हैं ।
अजू हैं । अभू हैं ।२९।

हे प्रभु, आपका कोई एक रूप नहीं है, कोई भी आपके समान नहीं है, आप अपरिवर्तनीय हैं (सदैव एकरूप) और कभी जन्म नहीं लेते (२९)

अलेख हैं । अभेख हैं । अनाम हैं । अकाम हैं ।३०।

हे प्रभु, कोई भी आपका चित्र नहीं बना सकता, आपके पास पहनने के लिए कोई विशेष पोशाक नहीं है, आप नामहीन और इच्छाहीन हैं। (३०)

अधे हैं । अभे हैं । अजीत हैं । अभीत हैं ।३१।

हे भगवान, आप समझ से परे और रहस्यमय हैं। आप अजेय और निडर हैं। (31)

त्रिमान हैं । निधान हैं । त्रिबरग है । असरग हैं ।३२।

हे प्रभु, तीनों लोकों के लोग आपको नमन करते हैं। आप तीनों प्रकार के धन (धर्म, अर्थ और मोक्ष - आध्यात्मिक अनुशासन, भौतिक धन और बंधन से मुक्ति) के भंडार हैं और सभी आप से मांगते हैं, और आप अजन्मा हैं। (३२)

अनील हैं । अनाद हैं । अजे हैं । अजाद हैं ।३३।

हे प्रभु, आप सबके आधार हैं और अनादि हैं। आप अजेय हैं और आप अजन्मे हैं, लेकिन सभी के लिए जीवन का स्रोत हैं। (३३)

अजनम हैं । अबरन हैं । अभूत हैं । अभरन हैं ।३४।

हे प्रभु, आप जन्म नहीं लेते, आप वर्णहीन हैं, शरीर बनाने वाले पांच तत्वों से मुक्त हैं, किसी पर निर्भर नहीं हैं। (३४)

अगंज हैं । अभंज हैं । अझूझ हैं । अझंझ हैं ।३५।

हे भगवान, कोई तुम्हें जीत नहीं सकता, कोई तुम्हें तोड़ नहीं सकता, कोई तुमसे लड़ नहीं सकता, कोई तुम्हें उलझा नहीं सकता। (३५)

अमीक हैं । रफ़ीक हैं । अधंध हैं । अबंध हैं ।३६।

हे प्रभु, आप अथाह सागर हैं, सबके मित्र हैं, संसार के सभी उलझनों से मुक्त हैं, और किसी बंधन के अधीन नहीं हैं। (३६)

त्रिबूझ हैं । असूझ हैं । अकाल हैं । अजाल हैं ।३७।

हे भगवान, आपके रहस्यों को कोई नहीं समझ सकता, आपका ज्ञान मानव समझ से परे है, आप अमर हैं और बंधन से मुक्त हैं। (37)

अलाह हैं । अजाह हैं । अनंत हैं । महंत हैं ।३८।

हे प्रभु, आप अल्लाह हैं (जो नहीं मिल सकते), जिसका कोई निश्चित निवास स्थान नहीं, अनन्त और महानतम हैं। (38)

अलीक हैं । त्रिस्रीक हैं । त्रिल्मभ हैं । असमभ हैं ।३९।

हे प्रभु, आप अनंत हैं, आपका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है, आपको सहारे की आवश्यकता नहीं है, आप समझ से परे हैं। (३९)

अगम हैं । अजम हैं । अभूत हैं । अछूत हैं ।४०।

हे प्रभु, आप पहुँच से परे हैं, आप जन्म नहीं लेते, आप पाँच तत्वों से नहीं बने हैं, आप इंद्रिय बोध से परे हैं। (४०)

अलोक हैं । असोक हैं । अकरम हैं । अभरम हैं ।४१।

हे प्रभु, आप हैं - अदृश्य, कोई दुःख और चिंता नहीं, कर्मकांडों से मुक्त, कोई अंधविश्वास नहीं। (४१)

अजीत हैं । अभीत हैं । अबाह हैं । अगाह हैं ।४२।

हे भगवान, आप अजेय हैं, निडर हैं, अपरिवर्तनीय हैं, आप अथाह हैं। (42)

अमान हैं । निधान हैं । अनेक हैं । फिर एक हैं ।४३।

हे प्रभु, आप अपरम्पार हैं, आप समस्त सम्पत्तियों के भण्डार हैं, आपने एक रूप से अनेक रूप बना दिए हैं, फिर भी आप एक हैं। (४३)

भुजंग प्रयात छंद । नमो सरब माने । समसती निधाने । नमो देव देवे । अभेखी अभेवे ।४४।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। सभी प्राणी आपकी सेवा करते हैं। आप सभी गुणों के खजाने हैं। आप सभी देवताओं के देवता हैं। आपके विविध रूप हैं, और कोई भी आपके रहस्यों को नहीं जान सकता। (४४)

नमो काल काले । नमो सरब पाले । नमो सरब गउणे । नमो सरब भउणे ।४५।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप मृत्यु के नाश करने वाले हैं। आप प्राणियों की रक्षा करते हैं। आप हर जगह मौजूद हैं (४५)

अनंगी अनाथे । न्रिसंगी प्रमाथे । नमो भान भाने । नमो मान माने ।४६।

आप बिना शरीर के हैं और बिना गुरु के हैं, आपके समान कोई नहीं है। आप सभी के संहारक हैं। हम आपको नमन करते हैं। आप सूर्यों के सूर्य हैं, जिनकी सभी पूजा करते हैं। (४६)

नमो चंद्र चंद्रे । नमो भान भाने । नमो गीत गीते । नमो तान ताने ।४७।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप चंद्रमाओं और सूर्यों में प्रकाश हैं। आप संगीत और गीतों की सुंदरता हैं। (४७)

नमो न्रित न्रिते । नमो नाद नादे । नमो पान पाने । नमो बाद बादे ।४८।

प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप एक महान और सुंदर नृत्य की तरह हैं। आप सभी संगीतों की धुन हैं (जिसने पूरी सृष्टि को आकर्षित किया है)। आप महान ढोलकिया हैं, जिन्होंने ढोल की थाप से दुनिया भर के लोगों की भीड़ को इकट्ठा किया।(४८)

अनंगी अनामे । समसती सरूपे । प्रभंगी प्रमाथे । समसती बिभूते ।४९।

हे प्रभु, आप अपनी सृष्टि में प्रकट होने वाले सर्वव्यापी आत्मा हैं, आपका कोई अंग नहीं है, न ही कोई विशेष नाम है। सभी प्राणी आपके ही स्वरूप हैं। आप सभी के संहारक हैं, और आपके पास चमत्कारी शक्तियाँ हैं। (४९)

कलंकं बिना नेकलंकी सरूपे । नमो राज राजेस्वरं परम रूपे ।५०।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं । आप किसी भी दोष से रहित हैं और शुद्ध और परिपूर्ण हैं। आप राजाओं के राजा हैं, और सबसे महान हैं। (५०)

नमो जोग जोगेस्वरं परम सि्धे । नमो राज राजेस्वरं परम ब्रिधे ।५१।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप योगियों के स्वामी और परम सिद्ध हैं। आप राजाओं के राजा और सर्वोच्च शासक हैं। (५१)

नमो ससत्र पाणे । नमो असत्र माणे । नमो परम गिआता । नमो लोक माता ।५२।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप शस्त्र धारण करते हैं और मिसाइल भी चलाते हैं। आप हर किसी की आंतरिक भावनाओं को जानते हैं, और आप सभी को एक माँ की तरह प्यार करते हैं। (52)

अभेखी अभरमी अभोगी अभुगते । नमो जोग जोगेस्वरं परम जुगते ।५३।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप सभी योगियों के भगवान योगी हैं और आपके तरीके परिपूर्ण हैं। आपके पास कोई वेश नहीं है। आप किसी भी अंधविश्वास से रहित हैं और भौतिक चीज़ों की कोई इच्छा नहीं रखते। आप खुद को भौतिक चीज़ों में शामिल नहीं करते और इस तरह अपनी शक्ति को कमज़ोर नहीं करते। (53)

नमो नि्त नाराइणे क्रूर करमे । नमो प्रेत अप्रेत देवे सुधरमे ।५४।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं । आप सदैव प्राणियों की रक्षा करते हैं और उनके संहारक भी हैं। सभी अच्छे और बुरे प्राणी आपसे हैं, वे आपके परिवार के सदस्य हैं और आप उनकी रक्षा करते हैं। (54)

नमो रोग हरता । नमो राग रूपे । नमो साह साहं । नमो भूप भूपे ।५५।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप रोगों को दूर करने वाले हैं। आप प्रेम के अवतार हैं। आप राजाओं के राजा हैं, सभी शासकों के शासक हैं। (५५)

नमो दान दाने । नमो मान माने । नमो रोग रोगे । नमसतं सनाने ।५६।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप दान देने वाले और सम्मान देने वाले हैं। आप बीमारियों के नाश करने वाले और दोषों को दूर करने वाले हैं। (56)

नमो मंत्र मंत्रं । नमो जंत्र जंत्रं । नमो इसट इसटे । नमो तंत्र तंत्रं ।५७।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आपका नाम सबसे महान शब्द, प्रतीक और सभी जादू का मास्टर जादूगर है, क्योंकि आप मेरी भक्ति का एकमात्र उद्देश्य हैं। (57)

सदा स्चदानंद सरबं प्रणासी । अनूपे अरूपे समसतुल निवासी ।५८।

हे प्रभु, आप सर्वव्यापी हैं, चैतन्य हैं, और सभी का नाश करने वाले हैं । आपका रूप और स्वरूप अद्वितीय है । आप सभी प्राणियों में निवास करते हैं। (58)

सदा सिधिदा बुधिदा ब्रिध करता । अधो उरध अरधं अघं ओघ हरता ।५९।

आप आध्यात्मिक पूर्णता, ज्ञान और जीवन में सफलता के दाता हैं। आप पाताल, पृथ्वी, आकाश और अंतरिक्ष में मौजूद हैं। आप व्यक्तियों में असंख्य बुराइयों का नाश करने वाले हैं। (59)

परं परम परमेस्वरं प्रोछ पालं । सदा सरबदा सिध दाता दिआलं ।६०।

हे प्रभु, आप महान स्वामी हैं, आप प्राणियों को अदृश्य रहते हुए भी उनका पालन करते हैं। आप लोगों को आध्यात्मिक शक्तियाँ प्रदान करते हैं और सदा दयालु हैं। (60)

अछेदी अभेदी अनामं अकामं । समसतो पराजी समसतसत धामं ।६१।

आप अजेय और अविनाशी हैं। आप नामहीन और इच्छाहीन हैं। तू सब का स्वामी है, और सब में वास करता है। (61)

तेरा जोर । चाचरी छंद । जले हैं । थले हैं । अभीत हैं । अभे हैं ।६२।

हे प्रभु, तू जल और थल में विद्यमान है। आप निडर और अथाह हैं। (62)

प्रभू हैं । अजू हैं । अदेस हैं । अभेस हैं ।६३।

आप सबके स्वामी हैं, आप अपरिवर्तनीय हैं, आप किसी एक देश के नहीं हैं और न ही आपके पास पहनने के लिए कोई विशेष पोशाक है। (६३)

भुजंग प्रयात छंद । अगाधे अबाधे । अनंदी सरूपे । नमो सरब माने । समसती निधाने ।६४।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप अथाह हैं, कोई भी आपके मार्ग में बाधा नहीं डाल सकता, और आप सदैव आनंद में रहते हैं। सभी आपको नमन करते हैं और आप सभी गुणों के स्रोत हैं। (६४)

नमसत्वं त्रिनाथे । नमसत्वं प्रमाथे । नमसत्वं अगंजे । नमसत्वं अभंजे ।६५।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं । आपका कोई स्वामी नहीं है, आप सभी के विनाशक हैं, कोई भी आपसे आगे नहीं बढ़ सकता और आप अविनाशी हैं। (६५)

नमसत्वं अकाले । नमसत्वं अपाले । नमो सरब देसे । नमो सरब भेसे ।६६।

हे प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं। आप शाश्वत हैं, आपको किसी की रक्षा की आवश्यकता नहीं है। आप हर देश में निवास करते हैं , और लोग जो भी वस्त्र पहनते हैं , वे आपके ही वस्त्र हैं। (६६)

नमो राज राजे । नमो साज साजे । नमो साह साहे । नमो माह माहे ।६७।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप राजाओं के राजा हैं, सभी के निर्माता हैं। आप सभी शासकों के शासक हैं, सभी चन्द्रमाओं के चन्द्रमा हैं (यह चन्द्रमाओं में उनकी ही रोशनी प्रतिबिंबित होती है)। (67)

नमो गीत गीते । नमो प्रीत प्रीते । नमो रोख रोखे । नमो सोख सोखे ।६८।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप सबसे सुंदर और मधुर गीत हैं, जो सारी सृष्टि को आकर्षित करता है। आप प्रेम के अवतार हैं, जो पूरी सृष्टि का संरक्षण करते हैं। आप भयंकर क्रोध भी हैं, जिससे पूरी सृष्टि आपसे डरती है। आप महान वायु प्रलय हैं, जो सृष्टि को नष्ट कर देती है। (६८)

नमो सरब रोगे । नमो सरब भोगे । नमो सरब जीतं । नमो सरब भीतं ।६९।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप हर किसी की मृत्यु का कारण हैं। आप ही हैं जो प्राणियों के माध्यम से संसार की भौतिक वस्तुओं के सुखों का आनंद ले रहे हैं। आप सभी को जीतते हैं और सभी आपसे डरते हैं। (६९)

नमो सरब गिआनं । नमो परम तानं । नमो सरब मंत्रं । नमो सरब जंत्रं ।७०।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप सभी प्राणियों के मन से पूरी तरह वाकिफ हैं। आपने ही इस विशाल सृष्टि का निर्माण किया है और आप ही इसे नियत्रित करते हैं (अपने नाम के माध्यम से।) (70)

नमो सरब द्रिसं । नमो सरब क्रिसं । नमो सरब रंगे । त्रिभंगी अनगे ।७१।

आप सभी का ख्याल रखते हैं और सभी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। आप सभी परिस्थितियों में मौजूद हैं। आप तीनों लोकों के संहारक हैं।(७१)

नमो जीव जीवं । नमो बीज बीजे । अख्रिजे अभिजे । समसतं प्रसिजे ।७२।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप सबके जीवन हैं, और सबके मूल कारण (सबके बीज) हैं। कोई भी आपको चोट नहीं पहुँचा सकता। कोई भी आपकी महानता को पूरी तरह से नहीं समझ सकता। आप सभी को आशीर्वाद देते हैं। (७२)

क्रिपालं सरूपे । कुकरमं प्रणासी । सदा सरबदा रिधि सिधं निवासी ।७३।

आप दया के अवतार हैं. आप बुराई के नाश करने वाले हैं. सभी आध्यात्मिक शक्तियाँ हमेशा आप में ही रहती हैं. (73)

चरपट छंद । त्वप्रसाद । अम्रित करमे । अमब्रित धरमे । अखिल जोगे । अचल भोगे ।७४।

हे प्रभु, आपके कार्य शाश्वत हैं। कोई भी आपके नियमों में बाधा नहीं डाल सकता। आप पूरी सृष्टि के साथ एक हैं और आपका नियम शाश्वत है। (74)

अचल राजे । अटल साजे । अखल धरमं । अलख करमं ।७५।

हे प्रभु, आपकी रचना और आपका नियम शाश्वत है। आपके नियम अपरिवर्तनीय हैं, फिर भी आपके कार्य समझ से परे हैं। (७५)

सरबं दाता । सरबं गिआता । सरबं भाने । सरबं माने ।७६।

आप सबको दाता हैं, आप सबके हृदय में क्या है यह जानते हैं, आप सबको ज्ञान देने वाले हैं, और सभी आपकी पूजा करते हैं। (७६)

सरबं प्राणं । सरबं त्राणं । सरबं भुगता । सरबं जुगता ।७७।

हे प्रभु, आप सभी के जीवन और आधार हैं। आपका आदेश सभी पर प्रभावी है और आप सभी में निवास करते हैं। (77)

सरबं देवं । सरबं भेवं । सरबं काले । सरबं पाले ।७८।

हे प्रभु, आप सम्पूर्ण सृष्टि के पूज्य हैं, आप सबके गुप्त रहस्यों को जानते हैं, आप सबके संहारक हैं और सभी की रक्षा भी करते हैं। (७८)

रूआल छंद । त्वप्रसादि । आद रूप अनाद मूरत अजोन पुरख अपार । सरब मान त्रिमान देव अभेव आद उदार । सरब पालक सरब घालक सरब को पुन काल । जत्र तत्र बिराजही अवधूत रूप रिसाल ।७९।

हे भगवान, आप आदि प्राणी हैं, आपकी उत्पत्ति के बारे में कोई नहीं बता सकता। आप जन्म नहीं लेते, आप सभी में स्थित हैं और अनंत हैं। सभी प्राणी आपको नमस्कार करते हैं, तीनों लोकों के प्राणी आपकी पूजा करते हैं। आप प्रकाश रूप में हैं, समझ से परे हैं, आप संपूर्ण सृष्टि और उदार मन के स्रोत हैं। आप सभी के संरक्षक और संहारक दोनों हैं। आप सभी की मृत्यु का कारण हैं। आप सर्वव्यापी हैं, सभी का स्रोत हैं। समस्त सांसारिक

सुखों को भोगते हुए भी वे स्वयं इन सांसारिक सुखों से अप्रभावित रहते हैं। (७९)

नाम ठाम न जात जाकर रूप रंग न रेख । आद पुरख उदार मूरत अजोन आद असेख । देस अउर न भेस जाकर रूप रेख न राग । जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग ।८०।

हे भगवान, आपका कोई नाम नहीं, कोई निवास स्थान नहीं, कोई जाति नहीं, कोई आकार या रंग या कोई चिन्ह नहीं। आप सभी के स्रोत हैं और हर एक में मौजूद हैं। आप दयालु और सौम्य हैं. आप जन्म नहीं लेते, आप आदि सत्ता हैं, पूर्णतया परिपूर्ण (कोई दोष नहीं)। आप किसी देश के नहीं हैं, न ही कोई वस्त्र पहनते हैं। आपका कोई आकार या कोई निशान नहीं है। आप प्रेम के रूप में सभी दिशाओं में सर्वत्र व्याप्त हैं। (८०)

नाम काम बिहीन पेखत धाम हूं नह जाह । सरब मान सरब्र मान सदैव मानत ताह । एक मूरत अनेक दरसन कीन रूप अनेक । खेल खेल अखेल खेलन अंत को फिर एक ।८१।

हे भगवान, आप नामहीन और इच्छाहीन हैं। ऐसा कोई दृश्य स्थान नहीं है जहाँ आप रहते हों। सर्वत्र आपकी पूजा होती है और प्राणी आपको प्रणाम करते हैं। आप अकेले हैं, लेकिन कई आकृतियों में दिखाई देते हैं। आप स्वयं को अनेक रूपों में प्रकट करते हैं। आप सृष्टि का खेल खेलते हैं और इस खेल को खेलने के बाद आप सृष्टि को विलीन कर देते हैं और अकेले रह जाते हैं। (८१)

देव भेव न जानही जिह बेद अउर कतेब । रूप रंग न जात पात सु जानई किह जेब । तात मात न जात जाकर जनम मरन बिहीन । चक्र बक्र फिरै चतुर चक मान ही पुर तीन ।८२।

हे भगवान, आपका रहस्य न तो देवी-देवताओं को पता है, न ही (हिन्दू धार्मिक पुस्तकों) वेदों और सामी पुस्तकों (बाइबिल, तोरा, जंबूर और कुरान) को। कोई नहीं जानता कि आप कैसे दिखते हैं, आपका रंग कैसा है, आपकी जाति और वंश क्या है। आपका न कोई पिता है, न माता, न कोई जाति, न जन्म से मुक्त है और न ही मरण से। आपकी प्रचंड संहार शक्ति चारों लोकों में व्याप्त है। सृष्टि के कोने-कोने में स्थित सभी प्राणी आपको नमन करते हैं। (82)

लोक चउदह के बिखै जग जाप ही जिह जाप । आद देव अनाद मूरत थापिओ सबै जिह थाप । परम रूप पुनीत मूरत पूरन पुरख अपार । सरब बिस्व रचिओ सुय्मभव गड़न भंजनहार ।८३।

हे भगवान, आपके नाम का चिंतन सभी चौदह लोकों (हिन्दू धार्मिक ग्रंथों, पुराणों के अनुसार 14 लोक हैं) यानी संपूर्ण ब्रह्मांड के लोग करते हैं। आप आदि प्रकाश हैं, पूजा के योग्य हैं। आपने, जिसने ब्रह्मांड का निर्माण किया, कोई भी आपके अस्तित्व के स्रोत को नहीं पा सका। आप सर्वोच्च भगवान हैं, शुद्ध स्वरूप, सर्वसिद्धि, सभी सृष्टि में व्याप्त हैं और अनंत हैं। आपने ही सृष्टि का निर्माण किया है। आप स्वयंभू हैं, अतः आप ही ब्रह्माण्ड के रचयिता हैं और साथ ही इसके संहारक भी हैं। (83)

काल हीन कला संजुगत अकाल पुरख अदेस । धरम धाम सु भरम रहत अभूत अलख अभेस । अंग राग न रंग जा कह जात पात न नाम । गरब गंजन दुसट भंजन मुकत दाइक काम ।८४।

हे भगवान, आप मृत्यु (कालातीत या शाश्वत) के प्रभाव से मुक्त हैं। आप सर्वशक्तिमान हैं. आप शाश्वत हैं, समस्त सृष्टि में व्याप्त हैं और किसी एक देश के नहीं हैं। आप धर्म के घर हैं, आपको शरीर से कोई लगाव नहीं है और न ही कोई अंधविश्वास है। आपके पास पाँच तत्वों का शरीर नहीं है। आप कपड़े नहीं पहनते और अदृश्य हैं। आप रंगहीन, जातिहीन और वंशहीन हैं और नामहीन। आप अहंकारियों का अभिमान तोड़ते हैं और दुष्टों का नाश करते हैं। आप भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करने वाले मुक्तिदाता, दयालु हैं। (८४)

आप रूप अमीक अनउसतत एक पुरख अवधूत । गरब गंजन सरब भंजन आद रूप असूत । अंह हीन अभंग अनातम एक पुरख अपार । सरब लाइक सरब घाइक सरब को प्रतिपार ।८५।

आप अकेले ही सारी सृष्टि में व्याप्त हैं, फिर भी आप विरक्त रहते हैं (माया या पदार्थ से प्रभावित नहीं होते)। आप अहंकारियों (घमंडी लोगों) का अभिमान तोड़ते हैं। आप सभी के संहारक हैं। आप अनादि और अजन्मे हैं। आप शरीर रहित हैं और शाश्वत हैं। आप सभी जीवन के स्रोत हैं। जीव आपके भीतर अलग-अलग नहीं रहते। आप ही सभी जीवों में मौजूद हैं और अनंत हैं। आप सर्वशक्तिमान हैं, सभी के संहारक हैं और उनके संरक्षक भी हैं। (८५)

सरब गंता सरब हंता सरब ते अनभेख । सरब सासत्र न जानही जिह रूप रंग अर रेख । परम बेद पुराण जाकह नेत भाखत नित । कोट सिम्रित पुरान सासत्र न आवई वहु चित् ।८६।

हे प्रभु, आप सभी प्राणियों तक पहुँच सकते हैं। आप सबका नाश करने वाले हैं। आप सबसे अलग हैं. आपके रूप, रंग और चिन्हों के विषय में शास्त्र आदि सभी हिन्दू धार्मिक ग्रन्थ मौन हैं। आप ऐसे हैं कि वेद और पुराण आपको अनंत बताते हैं और कहते हैं कि आपके समान कोई नहीं है। करोड़ों हिंदू धार्मिक पुस्तकें जैसे सिमरीतियाँ, पुराण और शास्त्र भी आपके स्वरूप को नहीं समझ सकते। (८६)

मधुभार छंद । त्वप्रसाद । गुन गन उदार । महिमा अपार । आसन अभंग । उपमा अनंग ।८७।

हे प्रभु, आप अनंत गुणी और उदार हैं। आपकी महिमा वर्णन से परे है। आपका अधिकार अडिग है। आपकी स्तुति अतुलनीय है। (कोई अन्य ऐसा नहीं है जिसकी तुलना की जा सके)। (८७)

अनभउ प्रकास । निस दिन अनास । आजान बाह । साहान साह ।८८।

आत्मज्ञानी। आप सदा अमर हैं। सृष्टि के सभी साधन आपके नियंत्रण में हैं। आप राजाओं के राजा हैं। (88)

राजान राज । भानान भान । देवान देव । उपमा महान ।८९।

आप राजाओं के राजा हैं, आप सूर्य में प्रकाश हैं, आप देवताओं के ईश्वर हैं, आपकी प्रशंसा महान है। (८९)

इंद्रान इंद्र । बालान बाल । रंकान रंक । कालान काल ।९०।

हे प्रभु, आप भगवान इन्द्र के निर्माता हैं, सबसे ऊंचे, सबसे गरीब, सभी मृत्युओं के मृत्यु। (९०)

अनभूत अंग।आभा अभंग।गत मित अपार।गुन गन उदार ।९१।

आप पाँच तत्वों के शरीर और अंगों से रहित हैं। आपका प्रकाश शाश्वत है। आपकी महानता का वर्णन नहीं किया जा सकता। आप असीमित गुणों वाले हैं और दान देने में उदार हैं। (91)

मुन गन प्रनाम । निरभै निकाम । अत दुत प्रचंड । मित गत अखंड ।९२।

हे प्रभु, आप निर्भय और इच्छा रहित हैं। असंख्य ऋषिगण आपको नमन करते हैं। आपकी तेजस्वी ज्योति को कोई भी सहन नहीं कर सकता। कोई भी आपकी महानता को कम नहीं कर सकता। (९२)

आलिस्य करम । आद्रिस्य धरम । सरबा भरणाढय । अनडंड बाढय ।९३।

हे प्रभु, आप जो करना चाहते हैं, उसे करने के लिए आपको कोई विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी कर्म के प्रति आपकी निष्ठा का उदाहरण सृष्टि के लिए आदर्श है। आपके नियम अदृश्य हैं। आप बहुतों को आभूषणों से सजाते हैं, लेकिन कोई भी आपको (असमान वितरण के लिए) दोषी नहीं ठहरा सकता। (93)

चाचरी छंद । त्वप्रसाद । गुबिंदे । मुकंदे । उदारे । अपारे ।९४।

आप सबके स्वामी हैं, आप सबके मुक्तिदाता हैं, आप उदार स्वामी हैं, और अनंत हैं। (९४)

हरीअं । करीअं । त्रिनामे । अकामे ।९५।

आप सबके नाश करने वाले हैं और उनके रचयिता भी हैं । आप नामरहित और निष्काम हैं । (९५)

भुजंग प्रयात छंद । चत्र चक्र करता । चत्र चक्र हरता । चत्र चक्र दाने । चत्र चक्र जाने ।९६।

आप ब्रह्मांड में हर जगह सभी के निर्माता और संहारक हैं। आप ब्रह्मांड में हर जगह सभी को देने वाले हैं और उनके दिल की भावनाओं को भी जानते हैं। (९६)

चत्र चक्र वरती । चत्र चक्र भरती । चत्र चक्र पाले । चत्र चक्र काले ।९७।

हे प्रभु, आप सर्वव्यापी (चारों दिशाओं में) हैं। आप सभी जीवन के संरक्षक हैं। आप सभी जगह सभी जीवन की रक्षा करते हैं, और आप उन सभी को नष्ट कर देते हैं। (97)

चत्र चक्र पासे । चत्र चक्र वासे । चत्र चक्र मानयै । चत्र चक्र दानयै ।९८।

आप चारों दिशाओं में हर जगह मौजूद हैं। हर जगह सभी आपकी पूजा करते हैं और आप सभी को उपहार देते हैं। (98)

चाचरी छंद । न स्त्रै । न म्रित्रै । न भरमं । न भ्रित्रै ।९९।

तुम्हारा किसी से कोई बैर नहीं है, और न ही किसी से मित्रता है। तुम्हें किसी प्रकार का मोह या भय नहीं है। (९९)

न करमं । न काए । अजनमं । अजाए ।१००।

हे प्रभु, आप न तो कर्मों के प्रभाव के अधीन हैं, न ही आप उस कारण से जन्म लेते हैं। आप कभी जन्म नहीं लेते, आप किसी स्त्री से पैदा नहीं हुए। (१००)

न चित्रै । न मित्रै । परे हैं । पवित्रै ।१०१।

कोई भी आपका चित्र नहीं बना सकता, आपका कोई मित्र नहीं है। आप सृष्टि से अलग रहते हैं, और शुद्ध और परिपूर्ण हैं। (१०१)

प्रिथीसै । अदीसै । अद्रिसै । अक्रिसै ।१०२।

हे प्रभु, आप पृथ्वी के स्वामी हैं, आप शुरू से ही स्वामी हैं, आप अदृश्य हैं, आप कभी कमजोर नहीं पड़ते। (१०२)

भगवती छंद । त्वप्रसाद कथते । कि आछिज देसै । कि आभिज भेसै । कि आगंज करमै । कि आभंज भरमै ।१०३।

हे प्रभु, आपका क्षेत्र अविनाशी है और आपका रूप भी अविनाशी है। कोई भी अनुष्ठान आपको जीत नहीं सकता और अंधविश्वास आपको प्रभावित कर सकता है। (103)

कि आभिज लोकै । कि आदित सोकै । कि अवधूत बरनै । कि बिभूत करनै ।१०४।

हे प्रभु, आपका निवास शाश्वत है। आप सूर्य के प्रकाश को नष्ट करने में सक्षम हैं। आप माया या भौतिक चीजों के प्रभाव से मुक्त हैं। आप सभी धन के स्रोत हैं।(104)

कि राजं प्रभा हैं । कि धरमं धुजा हैं । कि आसोक बरनै । कि सरबा अभरनै ।१०५।

हे प्रभु, सांसारिक राजाओं की महिमा आपके कारण है। धर्म की सुंदरता आपकी सुंदरता है। आप सभी चिंताओं से मुक्त हैं, और सभी प्राणियों का आधार हैं। (105)

कि जगतं क्रिती हैं । कि छत्रं छत्री हैं । कि ब्रहमं सरूपै । कि अनभउ अनूपै ।१०६।

हे प्रभु, आप ब्रह्मांड के रचयिता हैं। आप सबसे महान योद्धा हैं। आप सभी सौंदर्य के स्रोत हैं। आपका आत्म-साक्षात्कार का एक अद्वितीय उदाहरण है। (१०६)

कि आद अदेव हैं । कि आप अभेव हैं । कि चि्त्रं बिहीनै । कि एकै अधीनै ।१०७।

हे प्रभु, आप आदि से ही हैं। आपके अलावा कोई नहीं है। आप स्वयंभू हैं, इसलिए कोई भी आपके रहस्यों का पता नहीं लगा सकता। कोई भी आपकी तस्वीर नहीं बना सकता। आप स्वयं नियंत्रित इकाई हैं। (१०७)

कि रोजी रजाकै । रहीमै रिहाकै । कि पाक बिऐब हैं । कि गैबुल ग़ैब हैं ।१०८।

हे प्रभु, आप सभी को रोज़ाना रोटी देते हैं। आप सभी पर दयालु हैं। आप जीवों को उनके दुखों से मुक्ति दिलाते हैं। आप शुद्ध और निष्पाप हैं, रहस्यमय और अदृश्य हैं। (108)

कि अफवुल गुनाह हैं । कि शाहान शाह हैं । कि कारन कुनिंद हैं । कि रोज़ी दिहिंद हैं ।१०९।

हे प्रभु, आप मनुष्यों के पापों को क्षमा करते हैं। आप राजाओं के राजा हैं। आप सभी कारणों के कारण (सभी चीजों के कर्ता) हैं। आप सभी प्राणियों को जीवन देते हैं। (१०९)

कि राज़क रहीम हैं । कि करमं करीम हैं । कि सरबं कली हैं । कि सरबं दली हैं ।११०।

हे प्रभु, आप दयालु हैं, आप सभी को जीवन प्रदान करते हैं। आप लोगों पर कृपा करने वाले हैं। आप सर्वशक्तिमान हैं और सभी का नाश करने वाले हैं। (११०)

कि सरबत्र मानियै । कि सरबत्र दानियै । कि सरबत्र गउनै । कि सरबत्र भउनै ।१११।

हे प्रभु, हर जगह आपकी पूजा की जाती है. हर जगह आप उपहार दे रहे हैं. आप सभी प्राणियों तक पहुँचते हैं और आप उनमें से प्रत्येक में मौजूद हैं. (111)

कि सरबत्र देसै । कि सरबत्र भेसै । कि सरबत्र राजै । कि सरबत्र साजै ।११२।

हे प्रभु, आप हर जगह हर देश में मौजूद हैं। हर जगह अलग-अलग वेश-भूषा में, सिर्फ़ आप ही मौजूद हैं। सब कुछ आपने ही बनाया है, हर जगह आपका ही साम्राज्य है। (११२)

कि सरबत्र दीनै । कि सरबत्र लीनै । कि सरबत्र जाहो । कि सरबत्र भाहो ।११३।

हे प्रभु, आप हर जगह प्राणियों को अपना उपहार दे रहे हैं। आप हर जगह मौजूद हैं और सबके मालिक हैं। (113)

कि सरबत्र देसै । कि सरबत्र भेसै । कि सरबत्र कालै । कि सरबत्र पालै ।११४।

हे प्रभु, आप सभी देशों में सर्वत्र विद्यमान हैं और अपने-अपने वेश धारण करते हैं। आप सभी के संहारक हैं और उनके रक्षक भी हैं। (114)

कि सरबत्र हंता । कि सरबत्र गंता । कि सरबत्र भेखी । कि सरबत्र पेखी ।११५।

हे प्रभु, आप हर जगह जीवों के संहारक हैं। आप हर जगह पहुँच सकते हैं। सभी वेशों में आप हर जगह दिखाई देते हैं, और हर जगह आप जीवों की रक्षा करते हैं। (115)

कि सरबत्र काजै । कि सरबत्र राजै । कि सरबत्र सोखै । कि सरबत्र पोखै ।११६।

हे प्रभु, आप सभी कार्यों के कर्ता हैं। हर जगह आपकी रोशनी दिखती है। आप हर जगह के विनाशक हैं और उनके संरक्षक भी हैं। (116)

कि सरबत्र त्राणै । कि सरबत्र प्राणै । कि सरबत्र देसै । कि सरबत्र भेसै ।११७।

हे प्रभु, आप हर जगह अपनी शक्ति का उपयोग कर रहे हैं, और आपके द्वारा दिया गया जीवन प्राणियों में प्रकट होता है। आप सभी देशों में हर जगह मौजूद हैं और सभी वेशों में आपको देखा जाता है। (117)

कि सरबत्र मानियैं । सदैवं प्रधानियैं । कि सरबत्र जापियै । कि सरबत्र थापियै ।११८।

हे प्रभु, सभी जगह प्राणी आपकी पूजा कर रहे हैं। आप सर्वत्र सर्वोच्च हैं। हर जगह आपको याद किया जाता है और वहीं पाया जाता है। (118)

कि सरबत्र भानै । कि सरबत्र मानै । कि सरबत्र इंद्रै । कि सरबत्र चंद्रै ।११९।

हे प्रभु, आप सूर्य की तरह हर जगह अपना प्रकाश फैला रहे हैं। सभी लोग आपकी हर जगह पूजा करते हैं। आप ब्रह्मांड के भगवान हैं। आप चंद्रमा की तरह हैं जो हर जगह अपना सुखद प्रकाश फैला रहे हैं। (119)

कि सरबं कलीमै । कि परमं फ़हीमै । कि आकिल अलामै । कि साहिब कलामै ।१२०।

हे प्रभु, सृष्टि में निवास करते हुए, आप अच्छे शब्द बोल रहे हैं। आप सर्वज्ञ हैं। आप बुद्धि, ज्ञान और वाणी के स्वामी हैं। (१२०)

कि हुसनल वजू हैं । तमामुल रुजू हैं । हमेसुल सलामै । सलीखत मुदामैं ।१२१।

हे प्रभु, आप सुंदरता के अवतार हैं। आप सभी प्राणियों का ख्याल रखते हैं। आप अपरिवर्तनीय हैं और आपके तरीके शाश्वत हैं। (१२१)

ग़नीमुल शिकसतै । गरीबुल परसतै । बिलंदुल मकानै । ज़मीनुल ज़मानै ।१२२।

हे प्रभु, आप शत्रुओं को हराने वाले हैं, और नम्र लोगों की रक्षा करते हैं। आप सर्वत्र सर्वोच्च हैं। आप पृथ्वी पर सर्वत्र विद्यमान हैं। (122)

तमीज़ुल तमामैं । रुजूअल निधानैं । हरीफ़ुल अजीमैं । रज़ाइक यकीनै ।१२३।

ही सबका शरणस्थान है। तू ही दुष्टों का महान शत्रु है। यह सत्य है कि तू ही सब प्राणियों को जीविका प्रदान करता है।(123)

अनेकुल तरंग हैं । अभेद हैं अभंग हैं । अज़ीज़ुल निवाज़ हैं । ग़नीमुल खिराज हैं ।१२४।

हे प्रभु, आप एक बड़े महासागर की तरह हैं, और प्राणी इसकी असंख्य लहरें हैं। कोई भी आपके अस्तित्व को नहीं जानता, आप नष्ट नहीं हो सकते (आप शाश्वत हैं)। आप अपने भक्तों को सम्मान देते हैं, और उनके शत्रुओं का नाश करते हैं। (१२४)

निरुकत सरूप हैं । त्रिमुकत बिभूत हैं । प्रभुगत प्रभा हैं । सुजुगत सुधा हैं ।१२५।

पर तीन गुणों की माया का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सभी जीव आपके प्रकाश से ही जीवन प्राप्त करते हैं। आप ऐसे महान अमृत हैं , जो सभी जीवों में एकाकार हैं। (125)

सदैवं सरूप हैं । अभेदी अनूप हैं । समसतो पराज हैं । सदा सरब साज हैं ।१२६।

हे भगवान, आप शाश्वत हैं, आपके अलावा कोई दूसरा नहीं है। जो कोई तेरा विरोध करता है, वह कुचला जाता है। आप सभी के निर्माता हैं. (126)

समसतुल सलाम हैं । सदैवल अकाम हैं । न्रिबाध सरूप हैं । अगाध हैं अनूप हैं ।१२७।

हे प्रभु, आप सभी प्राणियों के रक्षक हैं। आप सदैव इच्छा रहित हैं। कोई भी आपके मार्ग में बाधा उत्पन्न नहीं कर सकता। आप अथाह हैं और अद्वितीय हैं। (१२७)

ओअं आदि रूपे । अनादि सरूपै । अनंगी अनामे । त्रिभंगी त्रिकामे ।१२८।

हे प्रभु, आप समस्त सृष्टि के जीवन हैं। आप आदि सत्ता हैं । कोई नहीं जानता कि आप कब अस्तित्व में आए। आपका न तो कोई शरीर है और

न ही कोई नाम। आप तीनों लोकों (ऊपरी लोक, निचले लोक और पृथ्वी) के संहारक हैं और इन लोकों के प्राणियों की इच्छाएँ भी पूरी करते हैं।(१२८)

त्रिबरगं त्रिबाधे । अगंजे अगाधे । सुभं सरब भागे । सु सरबा अनुरागे ।१२९।

हे प्रभु, आप तीन प्रकार के उपहारों (धर्म, अर्थ और मोक्ष - आध्यात्मिक अनुशासन, भौतिक धन और बंधन से मुक्ति) के दाता हैं। आप तीनों क्षेत्रों के प्राणियों पर नियंत्रण रखते हैं। आप अविनाशी और अनंत हैं। आपकी सारी रचना सुंदर है, और आप सभी से प्रेम करते हैं। (१२९)

त्रिभुगत सरूप हैं । अछिज हैं अछूत हैं । कि नरकं प्रणास हैं । प्रिथीउल प्रवास हैं ।१३०।

हे प्रभु, तीनों लोकों के प्राणी आपके दान से सुख पाते हैं। काल का आपके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। आप अविनाशी हैं। आप नरक के नाश करने वाले हैं। पृथ्वी पर प्राणियों के रूप में आपका रहना एक यात्री के समान है। (१३०)

निरुकत प्रभा हैं । सदैवं सदा हैं । बिभुगत सरूप है । प्रजुगत अनूप हैं ।१३१।

हे प्रभु , आपकी महिमा अवर्णनीय है । आप सर्वत्र विद्यमान हैं। सभी प्राणी आपसे सुख पाते हैं। आप सम्पूर्ण सृष्टि में समाहित हैं, किन्तु आप जैसा कोई नहीं है। (१३१)

निरुकत सदा हैं । बिभुगत प्रभा हैं । अनउकत सरूप हैं । प्रजुगत अनूप हैं ।१३२।

हे प्रभु, आपका व्यक्तित्व अवर्णनीय है। सभी प्राणी आपके प्रकाश से शक्ति प्राप्त करते हैं और जीवन का आनंद लेते हैं। आपका स्वरूप अवर्णनीय है। आप सभी प्राणियों में समाहित हैं , लेकिन आपके जैसा कोई नहीं है।(132)

चाचरी छंद । अभंग हैं । अनंग हैं । अभेख हैं । अलेख हैं ।१३३।

हे प्रभु, आप अविनाशी हैं। आप अंगहीन हैं (कोई शरीर नहीं)। आपके पास कोई वस्त्र नहीं है। कोई भी आपका चित्र नहीं बना सकता। (१३३)

अभरम हैं । अकरम हैं । अनाद हैं । जुगाद हैं ।१३४।

हे प्रभु, आप सभी प्रकार के संदेह, अंधविश्वास और भ्रम से ऊपर हैं। आपको धार्मिक अनुष्ठान करने की आवश्यकता नहीं है। आप अनादि हैं, आप युगों के आरंभ से पहले से ही अस्तित्व में थे। (१३४)

अजै हैं । अबै हैं । अभूत हैं । अधूत हैं ।१३५।

हे भगवान, आप अजेय और अविनाशी हैं। आपके पास पाँच तत्वों का शरीर नहीं है। आप अपरिवर्तनीय हैं. (135)

अनास हैं । उदास हैं । अधंध हैं । अबंध हैं ।१३६।

हे भगवान, आप अविनाशी हैं, आपको कोई चिंता नहीं है, कोई उलझन नहीं है और आप बंधन में नहीं हैं। (136)

अभगत हैं । बिरकत हैं । अनास हैं । प्रकास हैं ।१३७।

हे प्रभु, आप विरक्त रहते हैं, क्योंकि आपके द्वारा बनाई गई भौतिक वस्तुएँ आपको आकर्षित नहीं करती हैं। आप अविनाशी और सर्व प्रकाशवान हैं। (137)

निचिंत हैं । सुनिंत हैं । अलि्ख हैं । अदि्ख हैं ।१३८।

हे प्रभु, आपको कोई चिंता नहीं है, आप शाश्वत हैं। न तो कोई आपकी तस्वीर बना सकता है, न ही आप उसे दिखाई देते हैं। (138)

अलेख हैं । अभेख हैं । अढाह हैं । अगाह हैं ।१३९।

हे प्रभु, कोई भी आपकी तस्वीर नहीं बना सकता। आप कोई पोशाक नहीं पहनते। कोई भी आपको हरा नहीं सकता। आप अनंत हैं। (१३९)

असम्भ हैं । अग्मभ हैं । अनील हैं । अनाद हैं ।१४०।

हे प्रभु, आप प्राणियों के लिए अज्ञेय हैं। आपका प्रकाश ही प्राणियों के जीवन का स्रोत है। आप प्राणियों के जीवन हैं और अनादि हैं। (१४०)

अनित हैं । सुनित हैं । अजात हैं । अजाद हैं ।१४१।

हे भगवान, आप अकारण हैं, आप शाश्वत हैं, आप अजन्मा हैं, लेकिन सभी के जीवन का स्रोत हैं। (141)

चरपट छंद । त्वप्रसाद । सरबं हंता । सरब गंता ।
सरबं खिआता । सरबं गिआता ।१४२।

हे प्रभु, आप सभी के संहारक हैं। आप सभी प्राणियों तक पहुँच सकते हैं, और वे सभी आपसे भली-भाँति परिचित हैं। आप सभी के आंतरिक भावों को जानते हैं। (142)

सरबं हरता । सरबं करता । सरबं प्राणं । सरबं त्राणं ।१४३।

हे प्रभु, आप ही हैं जो जीवों से जीवन वापस लेते हैं और आप ही हैं जो उन्हें जीवन देते हैं। आप ही हर एक का जीवन हैं, और आप ही हैं, जो सभी के पीछे की शक्ति हैं। (143)

सरबं करमं । सरबं धरमं । सरबं जुगता । सरबं मुकता ।१४४।

हे प्रभु, आप ही सब में विद्यमान होकर सभी कर्म करते हैं और धर्म करने का दायित्व लेते हैं। आप प्राणियों में विद्यमान होकर उनसे सर्वथा पृथक हैं। (१४४)

रसावल छंद । त्वप्रसाद । नमो नरक नासे । सदैवं प्रकासे । अनंगं सरूपे । अभंगं बिभूते ।१४५।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं । आप प्राणियों के नरक का नाश करते हैं। (वास्तविक नरक प्रभु को भूल जाना है)। आप शाश्वत प्रकाश हैं। आप शरीरहीन और शाश्वत हैं। आपकी महिमा अविनाशी है। (१४५)

प्रमाथं प्रमाथे । सदा सरब साथे । अगाध सरूपे । न्रिबाध बिभूते ।१४६।

हे प्रभु, आप अत्याचारियों के भी संहारक हैं। आप (विनम्र लोगों के) सनातन साथी हैं। आपकी शक्ति अपरम्पार है। आपकी महिमा में कोई बाधा नहीं डाल सकता। (१४६)

अनंगी अनामे । त्रिभंगी त्रिकामे । न्रिभंगी सरूपे । सरबंगी अनूपे ।१४७।

हे प्रभु, आप शरीर रहित और नामहीन हैं । आप तीनों लोकों के संहारक हैं और इन लोकों के लोगों की इच्छाएँ भी पूरी करते हैं। आपका स्वरूप अविनाशी है। आप सर्वसिद्ध हैं और आपके समान कोई दूसरा नहीं है। (१४७)

न पोत्रै न पुत्रै । न सत्रै न मित्रै । न तातै न मातै । न जातै न पातै ।१४८।

हे प्रभु, आपका न तो कोई पुत्र है, न ही कोई पौत्र। आपका न तो कोई शत्रु है, न ही कोई मित्र। आपका न तो कोई पिता है, न ही माता। आपकी न तो कोई जाति है, न ही वंश। (१४८)

ञ्रिसाकं सरीक हैं । अमितो अमीक हैं । सदैवं प्रभा हैं । अजै हैं अजा हैं ।१४९।

हे प्रभु, आपसे कोई सम्बन्धी नहीं है, आपका कोई प्रतिद्वंद्वी भी नहीं है। आपका व्यक्तित्व अथाह है। आप अखंड ज्योति हैं। आपको कोई जीत नहीं सकता। आप जन्म नहीं लेते। (१४९)

भगवती छंद । त्वप्रसाद । कि ज़ाहिर ज़हूर हैं । कि हाज़िर हज़ूर हैं । हमेसुल सलाम हैं । समसतुल कलाम हैं ।१५०।

हे भगवान, आपका वैभव हर जगह दिखाई देता है, जैसे आप हर जगह मौजूद हैं। आप शाश्वत हैं और सभी आपकी स्तुति करते हैं। (150)

कि साहिब दिमाग हैं । कि हुसनल चराग हैं । कि कामल करीम हैं । कि राज़क रहीम हैं ।१५१।

हे प्रभु, आप सर्वज्ञ हैं और सभी सौंदर्य के स्रोत हैं। आप दयालु और पूर्ण व्यक्तित्व हैं। आप दयालु हैं और हमें हमारा जीवन देते हैं। (151)

कि रोज़ी दिहिंद हैं । कि राज़क रहिंद हैं । करीमुल कमाल हैं । कि हुसनल जमाल हैं ।१५२।

हे प्रभु, आप हमारी रोज़ी रोटी के दाता हैं। आप हमारी भौतिक ज़रूरतों को पूरा करते हैं और मोक्ष देते हैं। आप दया में सर्वोच्च हैं और आपकी सुंदरता शानदार है। (152)

ग़नीमुल ख़िराज हैं । ग़रीबुल निवाज़ हैं । हरफ़िुल शिकंन हैं । हिरासुल फिकंन हैं ।१५३।

हे भगवान, आप शत्रुओं (अत्याचारियों) का विनाशक हैं, और नम्र और गरीबों की रक्षा करते हैं। आप सभी भय दूर कर दीजिए. (153)

कलकं प्रणास हैं । समसतुल निवास हैं । अगंज़ुल गनीम हैं । रजाइक रहीम हैं ।१५४।

हे प्रभु, आप अपने भक्तों के पापों को दूर करते हैं। आप हर एक में मौजूद हैं। दुश्मन आपको जीत नहीं सकते। आप सभी को भौतिक संपत्ति प्रदान करते हैं। आप सभी के लिए दयालु हैं। (154)

समसतुल जुबां हैं । कि साहिब किरां हैं । कि नरकं प्रणास हैं । बहिसतुल निवास हैं ।१५५।

हे प्रभु, आप लोगों की ज़बानों के ज़रिए बोलते हैं। आपकी महिमा महान है। आप नरक के नाश करने वाले हैं। आप स्वर्ग में रहते हैं। (155)

कि सरबुल गवंन हैं । हमेसुल रवंन हैं । तमामुल तमीज हैं । समसतुल अजीज हैं ।१५६।

हे भगवान, आप सभी प्राणियों तक पहुँच सकते हैं। आप सदैव आनंद में रहें। आप सभी प्राणियों की देखभाल करते हैं और सभी से प्रेम करते हैं। (156)

परं परम ईस हैं । समसतुल अदीस हैं । अदेसुल अलेख हैं । हमेसुल अभेख हैं ।१५७।

हे प्रभु, आप सबसे महान प्रभु हैं। आरंभ से ही आप स्वामी हैं। ऐसा कोई विशेष स्थान नहीं है, जहाँ आप निवास करते हों और जहाँ आप कोई वस्त्र नहीं पहनते हों। (157)

ज़मीनुल ज़मां हैं । अमीकुल इमां हैं । करीमुल कमाल हैं । कि जुरअत जमाल हैं ।१५८।

हे प्रभु, आप धरती और आकाश में मौजूद हैं। आप अत्यंत रहस्यमय हैं। आप सबसे उदार, सबसे साहसी और सुंदर हैं। (158)

कि अचलं प्रकास हैं । कि अमितो सुबास हैं । कि अजब सरूप हैं । कि अमितो बिभूत हैं ।१५९।

हे भगवान, आप अपरिवर्तनीय हैं। आप सभी गुणों के अवतार हैं. आपका स्वरूप अद्भुत है और महिमा अनन्त है। (159)

कि अमितो पसा हैं । कि आतम प्रभा हैं । कि अचलं अनंग हैं । कि अमितो अभंग हैं ।१६०।

हे प्रभु, आप ब्रह्मांड की असीम रचना के स्वामी हैं। आप स्वयं प्रकाशमान हैं, आप हमेशा अपरिवर्तित रहते हैं, आपका कोई शरीर नहीं है। आप अनंत और अविनाशी हैं। (१६०)

मधुभार छंद । त्वप्रसाद । मुन मन प्रनाम । गुन गन मुदाम । अर बर अगंज । हर नर प्रभंज ।१६१।

हे प्रभु, ऋषिगण आपके सामने झुकते हैं। आप सद्गुणों के शाश्वत स्रोत हैं। बड़े-बड़े विरोधी आपको नुकसान नहीं पहुँचा सकते। (१६१)

अनगन प्रनाम । मुन मन सलाम । हर नर अखंड । बर नर अमंड ।१६२।

हे प्रभु, अनगिनत लोग आपको नमन करते हैं। ऋषिगण आपका ध्यान करते हैं। आप सर्वोच्च और पूर्ण प्राणी हैं। मनुष्यों में सबसे सुंदर। (162)

अनभव अनास । मुन मन प्रकास । गुन गन प्रनाम । जल थल मुदाम ।१६३।

हे प्रभु, आप स्वयं प्रकाशित हैं और शाश्वत हैं । भक्तों का मन आपके प्रकाश से प्रकाशित होता है। पुण्यात्मा लोग आपको नमन करते हैं । आप भूमि और समुद्र पर हर जगह मौजूद हैं । (१६३)

अनिछ्ज अंग । आसन अभंग । उपमा अपार । गत मित उदार ।१६४।

हे प्रभु, आप बूढ़े नहीं होते, आप हमेशा अपरिवर्तित रहते हैं। आपकी महिमा की कोई सीमा नहीं है, और कोई भी आपके जैसा नहीं है । आप कितने महान हैं, यह बताना किसी के लिए भी बहुत बड़ी बात है। (164)

जल थल अमंड । दिस विस अभंड । जल थल महंत । दिस विस बिअंत ।१६५।

हे प्रभु, आप भूमि, समुद्र और हर जगह मौजूद हैं। आपको खुद को दिखाने के लिए किसी सजावट की आवश्यकता नहीं है। आप ही भूमि और समुद्र और सभी दिशाओं में अनंत सत्ता के रूप में पूजे जाते हैं। (165)

अनभव अनास । ध्रित धर धुरास । आजान बाहु । एकै सदाहु ।१६६।

हे प्रभु, आप स्वयं प्रकाशित हैं और पृथ्वी के प्रमुख हैं। सृष्टि के सभी साधन आपके नियंत्रण में हैं। आपके अलावा कोई नहीं है। (१६६)

ओअंकार आद । कथनी अनाद । खल खंड खिआल । गुर बर अकाल ।१६७।

हे प्रभु, आप हर जगह हमेशा अपरिवर्तित रूप से मौजूद हैं। आप सभी सृष्टि के स्रोत हैं। कोई भी वर्णन आपकी उत्पत्ति को स्पष्ट नहीं कर सकता। आप एक पल में सभी दुष्टों का नाश कर देते हैं। आप सबसे महान और शाश्वत हैं। (167)

घर घर प्रनाम । चित चरन नाम । अनिछज गात । आजिज न बात ।१६८।

हे प्रभु, आप हर घर में लोग पूजे जाते हैं। आपके चरण और नाम लोगों के मन में बसते हैं। आप कभी बूढ़े नहीं होते और आप किसी भी मामले में किसी पर निर्भर नहीं हैं। (168)

अनझंझ गात । अनरंज बात । अनटुट भंडार । अनठट अपार ।१६९।

हे प्रभु, आप सभी प्रकार के झगड़ों से ऊपर हैं. आप किसी भी बात पर प्राणियों पर क्रोधित नहीं होते. आपके भंडार अक्षय हैं और आप सभी को देते हैं. कोई भी आपको मूर्ति के रूप में स्थापित नहीं कर सकता. आप अनंत प्रभु हैं. (169)

आडीठ धरम । अत ढीठ करम । अणब्रण अनंत । दाता महंत ।१७०।

आपके मार्ग और साधन (धर्म) अनुकरणीय हैं। आपके कार्य निर्भीक और निडर हैं। आप अनंत, अजेय और सर्वोच्च दाता हैं। (170)

हरि बोल मना छंद । त्वप्रसाद । करुणालय हैं । अर घालय हैं । खल खंडन हैं । मह मंडन हैं ।१७१।

हे प्रभु, आप दया के अवतार हैं। आप शत्रुओं (उपद्रवियों) के संहारक हैं। आप दुष्ट व्यक्तियों के विनाशक हैं। आप पृथ्वी की रक्षा करते हैं। (171)

जगतेस्वर हैं । परमेस्वर हैं । कल कारण हैं । सरब उबारण हैं ।१७२।

हे प्रभु , आप सृष्टि के स्वामी हैं। आप सबसे महान हैं। आप सभी संघर्षों के कारण हैं। आप इन संघर्षों में लोगों के उद्धारकर्ता हैं। (172)

ध्रित के ध्रण हैं । जग के क्रण हैं । मन मानिय हैं । जग जानिय हैं ।१७३।

हे प्रभु, आप पृथ्वी के आधार हैं, और ब्रह्मांड के निर्माता हैं। आप सभी मनों को जानते हैं। प्राणी आपकी सत्ता को स्वीकार करते हैं। (173)

सरबं भर हैं । सरबं कर हैं । सरब पासिय हैं । सरब नासिय हैं ।१७४।

हे प्रभु, आप सबके रचयिता और पालनहार हैं। आप सबके साथ रहते हैं और सबका नाश भी करते हैं। (174)

करुणाकर हैं । बिस्वम्भर हैं । सरबेस्वर हैं । जगतेस्वर हैं ।१७५।

हे भगवान, आप दया के स्रोत हैं। आप प्राणियों के पालनकर्ता हैं। आप सबके और ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं। (175)

ब्रहमंडस हैं । खल खंडस हैं । पर ते पर हैं । करुणाकर हैं ।१७६।

हे प्रभु , आप पूरे ब्रह्मांड के स्वामी और दुष्टों के संहारक हैं। आप सबसे महान और दया के स्रोत हैं। (176)

अजपा जप हैं । अथपा थप हैं । अक्रिताक्रित हैं । अम्रिताम्रित हैं ।१७७।

हे प्रभु, आप तक केवल कुछ शब्दों के उच्चारण से नहीं पहुंचा जा सकता है, (जैसे जादूगर अपने देवताओं को बदल देते हैं) और न ही आपको मूर्ति के रूप में स्थापित किया जा सकता है (जैसा कि हिंदू अपने मंदिरों में करते हैं)। किसी ने भी आपका व्यक्तित्व नहीं बनाया है, आप शाश्वत सत्ता हैं। (१७७)

अम्रिताम्रित हैं । करुणाक्रित हैं । अक्रिताक्रत हैं । धरणीध्रित हैं ।१७८।

हे प्रभु, आप शाश्वत हैं और दया के घर हैं। कोई भी आपकी मूर्ति नहीं बना सकता। आप पृथ्वी के आधार हैं। (178)

अम्रितेस्वर हैं । परमेस्वर हैं । अक्रिताक्रित हैं । अम्रिताम्रित हैं ।१७९।

हे प्रभु, आप असीमित शक्तियों के स्वामी हैं। आप सबसे महान हैं। कोई भी आपकी मूर्ति नहीं बना सकता। आप शाश्वत हैं। (१७९)

अजबाक्रित हैं । अम्रिताअम्रित हैं । नर नाइक हैं । खल घाइक हैं ।१८०।

हे प्रभु, आपका रूप अद्भुत है, आप सनातन है। आप सभी मनुष्यों के स्वामी हैं, और सभी दुष्टों के संहारक हैं। (१८०)

बिस्म्भर हैं । करुणालय हैं । न्रिप नाइक हैं । सरब पाइक हैं ।१८१।

हे प्रभु, आप पूरे ब्रह्मांड को बनाए रखते हैं, और दया के घर हैं। आप राजाओं के स्वामी और सभी के उद्धारकर्ता हैं। (181)

भव भंजन हैं । अर गंजन हैं । रिप तापन हैं । जप जापन हैं ।१८२।

हे प्रभु, आप हमें बार-बार जन्म-मरण के चक्र से बचाते हैं। आप शत्रुओं (बुरे विचारों) के विजेता हैं। यह आप ही हैं, जो हमें आपसे प्रेम करने में सक्षम बनाते हैं। (182)

अकलक्रित हैं । सरबाक्रित हैं । करता कर हैं । हरता हरि हैं ।१८३।

हे प्रभु, आप सभी दोषों से मुक्त हैं, और हर चीज के रचयिता हैं। आप ब्रह्मा के भी रचयिता हैं (जिन्हें दुनिया का निर्माण करने वाला कहा जाता है), आप शिव के भी संहारक हैं (जिन्हें दुनिया का नाश करने वाला कहा जाता है)। (183)

परमातम हैं । सरबातम हैं । आतम बस हैं । जस के जस हैं ।१८४।

आप परमात्मा हैं, सभी प्राणियों की आत्माएँ आपके ही अंश हैं। आप आत्म-नियंत्रण रखते हैं, और आप अपरिवर्तनीय हैं। (184)

भुजंग प्रयात छंद । नमो सूरज सुरजे नमो चंद्र चद्रे । नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे । नमो अंधकारे नमो तेज तेजे । नमो ब्रिंद ब्रिंदे नमो बीज बीजे ।१८५।

हे भगवान, हम आपको प्रणाम करते हैं। सूर्यों की चमक भी आपकी ही तेज है और चंद्रमाओं की शीतल रोशनी भी आपकी ही रोशनी है। आप राजाओं के राजा और इन्द्रों के स्वामी हैं। आप पूर्णतया अन्धकार और पूर्ण तेजोमय भी हैं। यह महासमुदाय आपका ही स्वरूप है और इसके प्रलय में सूक्ष्म बीज भी आपका ही स्वरूप है। (१८५)

नमो राजसं तामसं साति रूपे । नमो परम त्तं अततं सरूपे । नमो जोग जोगे नमो गिआन गिआने । नमो मंत्र मत्रे नमो धिआन धिआने ।१८६।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। पदार्थ के तीन गुण हैं , जिनसे ब्रह्माण्ड का निर्माण हुआ, रजस, तमस् और सत्व। लेकिन आपका प्रकाश और रूप पदार्थ से नहीं बना था। आप सर्वोच्च आत्मा (परमात्मा) हैं, जो पदार्थ से नहीं है। सर्वोच्च ज्ञान आपके पास है। आप सर्वोच्च शब्द हैं, आप सर्वोच्च ध्यान हैं। (आपका नाम शब्द, ज्ञान, चिंतन और गहन ध्यान है) (186)

नमो जुध जुधे नमो गिआन गिआने । नमो भोज भोजे नमो पान पाने । नमो कलह करता नमो साति रूपे । नमो इंद्र इंद्रे अनादं बिभूते ।१८७।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। कोई भी आपसे युद्ध में सफलतापूर्वक नहीं लड़ सकता। आपका नाम ज्ञान का खजाना है। सभी प्राणियों का भरण-पोषण आपके हाथों में है और आप ही उन पर नियंत्रण रखते हैं। आप

सभी अशाति के कारण हैं और शाति के स्वरूप भी हैं। आप इंद्र जैसे राजाओं के राजा हैं। तेरी महिमा अनादि है।(187)

कलंकार रूपे अलंकार अलके । नमो आस आसे नमो बांक बंके । अभंगी सरूपे अनंगी अनामे । त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी अकामे ।१८८।

हे प्रभु, हम आपको नमन करते हैं। आप निष्कलंक हैं। सुंदर व्यक्ति अपनी सुंदरता के लिए आपके ऋणी हैं। आप प्रत्येक की आकांक्षाओं की आशा हैं। आप अत्यंत सुंदर हैं। आप शाश्वत , अंगहीन और नामहीन हैं। आप भूत, वर्तमान और भविष्य में तीनों लोकों के संहारक हैं। आप शरीरहीन हैं और इच्छाहीन भी हैं। (188)

एक अछरी छंद । अजै । अलै । अभै । अबै ।१८९।

हे प्रभु, आपको कोई जीत नहीं सकता। आप शाश्वत हैं। आप निर्भय हैं। समय का आप पर कोई प्रभाव नहीं है। (189)

अभू । अजू । अनास । अकास ।१९०।

हे प्रभु, आप अजन्मा, अपरिवर्तनीय, अविनाशी और हर जगह मौजूद हैं।

अगंज । अभंज । अलख । अभख ।१९१।

हे प्रभु, आपको कोई जीत नहीं सकता। आपको कोई तोड़ नहीं सकता। आप अदृश्य हैं। जीने के लिए आपको भोजन की आवश्यकता नहीं है।

अकाल । दिआल । अलेख । अभेख ।१९२।

हे प्रभु, मृत्यु आपको प्रभावित नहीं करती। आप दयालु हैं। आपका कोई चित्र नहीं बनाया जा सकता। आप कोई वस्त्र नहीं पहनते। (192)

अनाम । अकाम । अगाह । अढाह ।१९३।

हे प्रभु, आप नामहीन हैं। आप इच्छारहित हैं। आपका ज्ञान अथाह है। आप असीम हैं। (193)

अनाथे । प्रमाथे । अजोनी । अमोनी ।१९४।

हे प्रभु, आपसे श्रेष्ठ कोई नहीं है। आप सभी के संहारक हैं। आप जन्म नहीं लेते। आप पूर्ण मौन में नहीं बैठते। (194)

न रागे । न रंगे । न रूपे । न रेखे ।१९५।

हे प्रभु, आप किसी भी चीज़ से आसक्त नहीं होते। आपका कोई रंग नहीं है। आपका कोई रूप नहीं है। आपका कोई निशान नहीं है। (195)

अकरमं । अभरमं । अगंजे । अलेखे ।१९६।

हे प्रभु, आपको कोई धार्मिक अनुष्ठान करने की आवश्यकता नहीं है। आपको कोई भ्रम या अंधविश्वास नहीं है। कोई भी आपको जीत नहीं सकता, और कोई भी आपकी मूर्ति नहीं बना सकता। (196)

भुजंग प्रयात छंद । नमसतुल प्रणामे समसतुल प्रणासे । अगंजुल अनामे समसतुल निवासे । त्रिकामं बिभूते । समसतुल सरूपे । कुकरमं प्रणासी सुधरमं बिभूते ।१९७।

प्रभु, हम आपको नमस्कार करते हैं । आप सभी के विनाशक हैं। आप नामहीन हैं और जीते नहीं जा सकते और सभी प्राणियों में निवास करते हैं। आप अपनी इच्छाहीनता के लिए जाने जाते हैं। सारी सृष्टि आपका ही रूप है। आप बुराई के नाश करने वाले और धर्म के पोषक हैं। (१९७)

सदा स्चिदानंद स्त्रं प्रणासी । करीमुल कुनिंदा समसतुल निवासी । अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे । हरीअं करीअं करीमुल रहीमे ।१९८।

हे भगवान, सदैव विद्यमान सच्चे, चेतना और आनंद, आप शत्रुओं (बुराई और दुष्टता) का विनाशक हैं। आप सबका कल्याण करने वाले विधाता हैं। आप सभी प्राणियों में निवास करते हैं। आप अद्भुत हैं प्रभु. आप अत्याचारियों के लिए आतंक हैं। आप संहारक भी हैं और सृजनकर्ता भी। तू दयालु और कृपालु है। (198)

चत्र चक्र वरती चत्र चक्र भुगते । सुय्मभव सुभं सरबदा सरब जुगते । दुकालं प्रणासी दिआलं सरूपे । सदा अंग संगे अभंगं बिभूते ।१९९।

हे प्रभु, आप चारों दिशाओं में व्याप्त हैं। आप चारों दिशाओं में सर्वोच्च हैं । स्वयंभू , सर्व सुन्दर और सभी प्राणियों के साथ सदैव एकरूप। आप प्राणियों के जन्म-मरण के दुखों का नाश करने वाले, दया के स्वरूप हैं और सदैव प्राणियों के साथ उपस्थित रहते हैं। तेरी महिमा सदा अविनाशी है। (199)

3. "अनंद साहिब"

੧ੴ सतिगुर प्रसादि ।

अनंद भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ । सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मन वजीआ वाधाईआ । राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ । सबदो त गावहु हरी केरा मन जिनी वसाइआ । कहै नानक अनंद होआ सतिगुरू मै पाइआ ।1।

अर्थः हे भाई माँ! (मेरे अंदर) पूर्ण खिड़ाव (आनंद) पैदा हो गया है (क्योंकि) मुझे गुरु मिल गया है। मुझे गुरु मिला है, और साथ ही अडोल अवस्था भी प्राप्त हो गई है (भाव, गुरु के मिलने से मेरा मन डोलने से हट गया है); मेरे मन में (मानो) खुशी के बाजे बज उठे हैं, सुंदर राग अपने परिवार और रागनियों सहित (मेरे मन में, जैसे) प्रभु की महिमा के गीत गाने आ गए हैं। (हे भाई! तुम भी) प्रभु की महिमा के गीत गाओ। जिस-जिस ने महिमा के शब्द मन में बसाए हैं (उनके अंदर सम्पूर्ण आनंद पैदा हो जाता है)। नानक कहता है (मेरे अंदर भी) आनंद बन गया है (क्योंकि) मुझे सतिगुरु मिल गया है।1।

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हर नाले । हर नाल रहु तू मंन मेरे दूख सभ विसारणा । अंगीकार ओहु करे तेरा कारज सभ सवारणा । सभना गला समरथ सुआमी सो किउ मनहु विसारे । कहै नानक मंन मेरे सदा रहु हर नाले ।2।

अर्थः हे मेरे मन! तू सदा प्रभु के साथ जुड़ा रह। हे मेरे मन! तू सदा प्रभु को याद रख। वह प्रभु सारे दुख दूर करने वाला है। वह सदा तेरी सहायता करने वाला है तेरे सारे काम सफल करने के समर्थ है। (हे भाई!) उस मालिक को क्यों (अपने) मन से भुलाता है जो सारे काम करने योग्य है? नानक कहता हैः हे मेरे मन! तू सदा प्रभु के चरणों में जुड़ा रह।2।

साचे साहिबा किआ नाही घर तैरै । घर त तैरै सभ किछ है जिस देह सु पावए । सदा सिफत सलाह तेरी नाम मन वसावए । नाम जिन कै मन वसिआ वाजे सबद घनेरे । कहै नानक सचे साहिब किआ नाही घर तैरै ।3।

अर्थः हे सदा कायम रहने वाले मालिक (-प्रभु)! (मैं तेरे दर से मन का आनंद माँगता हूं, पर) तेरे घर में कौन सी चीज नहीं है? तेरे घर में तो हरेक चीज मौजूद है, वही मनुष्य प्राप्त करता है जिसको तू स्वयं देता है (फिर, वह मनुष्य) तेरा नाम और तेरी महिमा (अपने) मन में बसाता है (जिसकी इनायत से उसके अंदर आनंद पैदा हो जाता है)। जिस लोगों के मन में (तेरा) नाम बसता है (उनके अंदर, मानो) बेअंत साजों की (मिली जुलीं) सुरें बजने लग पड़ती हैं (भाव, उनके मन में वह खुशी का चाव पैदा होता है जो कई साजों का मिश्रित राग सुन के पैदा होता है)। नानक कहता हैः हे सदा कायम रहने वाले मालिक! तेरे घर में किसी चीज की कमी नहीं है (और, मैं तेरे दर से आनंद का दान माँगता हूँ)।3।

साचा नाम मेरा आधारो । साच नाम अधार मेरा जिन भुखा सभ गवाईआ । कर सांत सुख मन आइ वसिआ जिन इछा सभ पुजाईआ । सदा कुरबाण कीता गुरू विटहु

जिस दीआ एह वडिआईआ । कहै नानक सुणहु संतहु सबद धरहु पिआरो । साचा नाम मेरा आधारो ।5।

अर्थः (प्रभु की मेहर से उसका) सदा-स्थिर रहने वाला नाम मेरी जिंदगी का आसरा (बन गया) है। जिस (हरि-नाम) ने मेरे सारे लालच दूर कर दिए हैं, जिस (हरि-नाम) ने मेरे मन की सारी कामनाएं पूरी कर दी हैं, जो हरि-नाम (मेरे अंदर) शाति और सुख पैदा करके मेरे मन में आ टिका है, वह सदा कायम रहने वाला नाम मेरी जिंदगी का आसरा बन गया है।

मैं (अपने आप को) अपने गुरु से सदके करता हूँ, क्योंकि ये सारी बरकतें गुरु की ही हैं। नानक कहता हैः हे संत जनो! (गुरु का शब्द) सुनो, गुरु के शब्द में प्यार बनाओ। (सतिगुरु की मेहर से ही प्रभु का) सदा कायम रहने वाला नाम मेरी जिंदगी का आसरा (बन गया) है।5।

वाजे पंच सबद तित घर सभागै । घर सभागै सबद वाजे कला जित घर धारीआ । पंच दूत तुध वस कीते काल कंटक मारिआ । धुर करम पाइआ तुध जिन कउ सि नाम हर कै लागे । कहै नानक तह सुख होआ तित घर अनहद वाजे ।6।

अर्थः जिस (हृदय-) घर में (हे प्रभु! तूने) सत्ता डाली है, उस भाग्यशाली (हृदय-) घर में (मानो) पाँच किस्मों के साजों की मिश्रित सुरें बज पड़ती हैं (भाव, उस हृदय में पूर्ण आनंद बन जाता है), (हे प्रभु!) उसके पाँचों कामादिक वैरी तू काबू कर देता है, और डराने वाला काल (भाव, मौत का डर) दूर कर देता है। पर, सिर्फ वही मनुष्य हरि-नाम में जुड़ते हैं जिनके भाग्यों में तूने धुर से ही अपनी मेहर से (स्मरण के लेख लिख के) रख दिए

हैं। नानक कहता है: उस हृदय-घर में सुख पैदा होता है, उस हृदय में (मानो) एकरस (बाजे) बजते हैं।5।

साची लिवै बिन देह निमाणी । देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ । तुध बाझ समरथ कोइ नाही क्रिपा कर बनवारीआ । एस नउ होर थाउ नाही सबद लाग सवारीआ । कहै नानक लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ।6।

अर्थ: सदा-स्थिर प्रभु के चरणों की लगन (के आनंद) के बिना ये (मनुष्य) शरीर निआसरा सा ही रहता है। प्रभु-चरणों की प्रीति के बिना निआसरा होया हुआ ये शरीर जो कुछ भी करता है नकारे काम ही करता है। हे जगत के मालिक! तेरे बिना और कोई जगह नहीं जहाँ ये शरीर सही तरफ लग सके, कोई और इस को सही दिशा में लगाने के लायक ही नहीं। तू ही कृपा कर, ता कि ये गुरु के शब्द में लग के सुधर जाए। नानक कहता है: प्रभु-चरणों की प्रीति के बिना पराधीन (भाव, माया के प्रभाव तले) है और जो कुछ करता है निकम्मे काम ही करता है।6।

आनंद आनंद सभ को कहै आनंद गुरू ते जाणिआ । जाणिआ आनंद सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ । कर किरपा किलविख कटे गिआन अंजन सारिआ । अंदरह जिन का मोह तुटा तिन का सबद सचै सवारिआ । कहै नानक एहु अनंद है आनंद गुर ते जाणिआ ।7।

अर्थ: कहने को तो हर कोई कह देता है कि मुझे आनंद प्राप्त हो गया है, पर (असल) आनंद की सूझ गुरु से ही मिलती है। हे प्यारे भाई! (असल) आनंद की सूझ सदा गुरु से ही मिलती है। (वह मनुष्य असल आनंद पाता है, जिस पर गुरु) कृपा करता है। गुरु मेहर करके (उसके) (अंदर से) पाप

काट देता है, और (उसकी विचार वाली आँखों में) आत्मिक जीवन की सूझ का सुरमा डालता है। जिस मनुष्यों के मन में से माया का मोह समाप्त हो जाता है, अकाल-पुरख उनके बोल ही अच्छे और मीठे कर देता है। नानक कहता है: असल आनंद ही यही है, और यह आनंद गुरु से ही समझा जा सकता है।7।

बाबा जिस तू देह सोई जन पावै । पावै त सो जन देह जिस नो होर किआ करह वेचारिआ । इक भरम भूले फिरह दह दिस इक नाम लाग सवारिआ । गुर परसादी मन भइआ निरमल जिना भाणा भावए । कहै नानक जिस देह पिआरे सोई जन पावए ।8।

अर्थ: हे प्रभु जिस मनुष्य को तू (आत्मिक आनंद की दाति) देता है वह प्राप्त करता है, वही मनुष्य (इस दाति को) भोगता है जिसको तू देता है, और बेचारों की (माया के तुफान के आगे) कोई पेश नहीं चलती। कई लोग (माया की) भटकना में (असल रास्ते से) भूले हुए दसों दिशाओं में दौड़ते-फिरते हैं, कई (भाग्यशालियों को) तू अपने नाम में जोड़ के (उनका जनम) सवार देता है। (इस तरह तेरी मेहर से) जिन्हें तेरी रजा प्यारी लग जाती है, गुरु की कृपा से उनका मन पवित्र हो जाता है (और वह आत्मिक आनंद पाते हैं, पर) नानक कहता है: (हे प्रभु!) जिस को तू (आत्मिक आनंद की दाति) बख्शता है वही इसका आनंद पा सकते हैं।8।

आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी । करह कहाणी अकथ केरी कित दुआरै पाईऐ । तन मन धन सभ सउप गुर कउ हुकम मनिऐ पाईऐ । हुकम मनिहु गुरू

केरा गावहु सची बाणी । कहै नानक सुणहु संतहु कथिह अकथ कहाणी ।९।

अर्थः हे प्यारे संत जनो! आओ, हम (मिल के) बेअंत गुणों वाले परमात्मा की महिमा की बातें करें, उस प्रभु की कहानियाँ सुने सुनाएं जिसके गुण बयान से परे हैं। (पर यदि तुम पूछो कि) वह प्रभु किस ढंग से मिलता है (तो उत्तर ये है कि अपना आप माया के हवाले करने की बजाए) अपना तन मन धन सब कुछ गुरु के हवाले करो (इस तरह) यदि गुरु का हुक्म मीठा लग जाए तो परमात्मा मिल जाता है। (सो, संत जनो!) गुरु के हुक्म पर चलो और सदा कायम रहने वाले प्रभु की महिमा की वाणी गाया करो। नानक कहता है: हे संत जनो सुनो, (उसको मिलने का और आत्मिक आनंद पाने का सही रास्ता यही है कि) उस अकथ प्रभु की कहानियाँ कहा करो।९।

ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ । चतुराई न पाइआ किनै तू सुण मंन मेरिआ । एह माइआ मोहणी जिन एत भरम भुलाइआ । माइआ त मोहणी तिनै कीती जिन ठगउली पाईआ । कुरबाण कीता तिसै विटहु जिन मोह मीठा लाइआ । कहै नानक मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ।10।

अर्थः हे चंचल मन! चालाकियों से किसी ने भी (आत्मिक आनंद) हासिल नहीं किया। हे मेरे मन! तू (ध्यान से) सुन ले कि किसी जीव ने भी चतुराई से (परमात्मा के मिलाप का आनंद) प्राप्त नहीं किया, (अंदर से सुंदर माया में भी फसा रहे, और, बाहर से सिर्फ बातों से आत्मिक आनंद चाहे, ये नहीं हो सकता)। ये माया जीवों को अपने मोह-जाल में फसाने के लिए बहुत बलवान है, इसने ये भुलेखा डाला हुआ है कि मोह मीठी चीज है, इस कुमार्ग पर डाले रखती है। (पर, जीव के भी क्या वश?) जिस प्रभु ने माया के मोह

की ठग-बूटी (जीवों को) चिपका दी है उसी ने ही ये मोहनी माया पैदा की है। (सो, हे मेरे मन! अपने आप को माया पर कुर्बान करने की बजाए) उस प्रभु पर से कुर्बान कर जिसने मीठा मोह लगाया है (तब जाकर ये मीठा मोह खत्म होता है)। नानक कहता है: हे (मेरे) चंचल मन! चतुराईयों से किसी ने (परमात्मा के मिलाप का आत्मिक आनंद) नहीं पाया।10।

ए मन पिआरिआ तू सदा सच समाले । एहु कुट्मबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले । साथि तेरै चलै नाही तिस नाल किउ चितु लाईऐ । ऐसा कमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ । सतिगुरू का उपदेस सुण तू होवै तेरै नाले । कहै नानक मन पिआरे तू सदा सच समाले ।11।

अर्थ: हे प्यारे मन! (अगर तू हमेशा आत्मिक आनंद चाहता है तो) सदा सच्चे प्रभु को (अपने अंदर) संभाल के रख! ये जो परिवार तू देखता है, इसने तेरे साथ नहीं निभना। (हे भाई!) इस परिवार के मोह में क्यों फंस जाता है? इसने तेरा साथ आखिर तक नहीं निभा सकना। जिस काम को करने से आखिर में हाथ मलने पड़ें, वह काम कभी भी नहीं करना चाहिए। (हे भाई!) सतिगुरु की शिक्षा (ध्यान से) सुन, ये गुरु अपदेश हमेशा याद रखना चाहिए। नानक कहता है: हे प्यारे मन! (यदि तू आनंद चाहता है तो) सदा स्थिर परमात्मा को हर वक्त (अपने अंदर) संभाल के रख।11।

अगम अगोचरा तेरा अंत न पाइआ । अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आप तू जाणहे । जीअ जंत सभ खेल तेरा किआ को आख वखाणए । आखह त वेखह सभ तूहै जिन जगतु उपाइआ । कहै नानक तू सदा अगम है तेरा अंत न पाइआ ।12।

अर्थः (हे मेरे प्यारे मन! सदा प्रभु को अपने अंदर संभाल के रख, और उसके आगे ऐसे अरजोई कर-) हे अगम्य (पहुँच से परे) हरि! हे इन्द्रियों की पहुँच से परे रहने वाले प्रभु! (तेरे गुणों का) किसी ने अंत नहीं पाया। अपने (असल) स्वरूप को तू स्वयं ही जानता है, और कोई जीव तेरे गुणों का अंत नहीं पा सकता। कोई और जीव (तेरे गुणों को) कह के बयान करे भी किस तरह? ये सारे जीव (तो) तेरे ही रखे हुए एक खेल हैं। हरेक जीव में तू खुद ही बोलता है, हरेक जीव की स्वयं ही संभाल करता है (तू ही करता है) जिसने ये संसार पैदा किया है। नानक कहता हैः (हे मेरे प्यारे मन! प्रभु के आगे अरदास कर-) तू सदा अगम्य (पहुँच से परे) है, (किसी जीव ने तेरे गुणों का कभी) अंत नहीं पाया।12।

सुर नर मुन जन अम्रित खोजदे सु अम्रित गुर ते पाइआ । पाइआ अम्रित गुरि क्रिपा कीनी सचा मन वसाइआ । जीअ जंत सभ तुध उपाए इक वेखि परसण आइआ । लब लोभ अहंकार चूका सतिगुर भला भाइआ । कहै नानक जिस नो आप तुठा तिन अम्रित गुर ते पाइआ ।13।

अर्थः (आत्मिक आनंद एक ऐसा) अमृत (है जिस) को देवते मनुष्य मुनि लोग तलाशते फिरते हैं, (पर) यह अमृत गुरु से ही मिलता है। जिस मनुष्य पर गुरु ने मेहर की उसने (यह) अमृत प्राप्त कर लिया (क्योंकि) उसने सदा कायम रहने वाला प्रभु अपने मन में टिका लिया। हे प्रभु! सारे जीव-जंतु तूने ही पैदा किए हैं (तू ही इनको प्रेरित करता है, तेरी प्रेरणा से ही) कई जीव (गुरु के) दीदार करके (उसके) चरण छूने आते हैं, सतिगुरु उनको प्यारा लगता है (सतिगुरु की कृपा से उनका) लब-लोभ व अहंकार दूर हो जाता है। नानक कहता हैः प्रभु जिस मनुष्य पर प्रसन्न होता है, उस मनुष्य ने (आत्मिक आनंद रूप) अमृत गुरु से प्राप्त कर लिया है।13।

भगता की चाल निराली । चाला निराली भगताह केरी बिखम मारग चलणा । लब लोभ अहंकार तज त्रिसना बहुत नाही बोलणा । खनिअह तिखी वालह निकी एत मारग जाणा । गुर परसादी जिनी आप तजिआ हरि वासना समाणी । कहै नानक चाल भगता जुगह जुग निराली ।14।

अर्थः (जो सौभाग्यशाली लोग आत्मिक आनंद भोगते हैं वही भकत हैं और उन) भक्तों की जीवन-जुगति (दुनिया के लोगों से सदा) अलग होती है, (ये पक्की बात है कि उन) भक्तों की जीवन-जुगति (औरों से) अलग होती है। वह (बड़े) मुश्किल रास्ते पर चलते हैं, वे लब-लोभ-अहंकार और माया की तृष्णा त्यागते हैं और ज्यादा नहीं बोलते (भाव, अपनी शोभा नहीं करते-फिरते)। इस रास्ते पर चलना (बड़ी मुश्किल खेल है क्योंकि ये रास्ता) खंडे की धार से ज्यादा नुकीला है और बाल से भी ज्यादा बारीक है (इस पर से गिरने की संभावना हमेशा बनी रहती है क्योंकि दुनियावी वासना मन की अडोलता को धक्का दे देती है)। पर जिन्होंने गुरु की कृपा से स्वै भाव छोड़ दिया है, उनकी (मायावी) वासना हरि-प्रभु की याद में समाप्त हो जाती है। नानक कहता है: (आत्मिक आनंद भोगने वाले) भक्त-जनों की जीवन-जुगति सदा से ही (दुनिया से ही) अलग चली आ रही है।14।

जिउ तू चलाइह तिव चलह सुआमी होर किआ जाणा गुण तेरे । जिव तू चलाइह तिवै चलह जिना मारग पावहे । कर किरपा जिन नाम लाइह स हर हर सदा धिआवहे । जिस नो कथा सुणाइह आपणी स गुरदुआरै सुख पावहे । कहै नानक सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ।15।

अर्थः हे मालिक प्रभु! जैसे तू (हम जीवों को जीवन-मार्ग पर) चलाता है, वैसे ही हम चलते हैं (बस! मुझे इतनी ही समझ पड़ी है), तेरे गुणों का और भेद मैं नहीं जानता। (मैंने यही समझा है कि) जिस राह पर तू हमें चलाना चाहता है, उसी राह पर हम चलते हैं। जिस लोगों को (आत्मिक आनंद भोगने के) रास्ते पर चलाता है, जिस पर मेहर करके अपने नाम में जोड़ता है, वह लोग सदा हरि-नाम स्मरण करते हैं। जिस जिस मनुष्य को तू अपनी महिमा की वाणी सुनाता है (सुनने की ओर प्रेरित करता है), वे लोग गुरु के दर पर (पहुँच के) आत्मिक आनंद भोगते हैं। नानक कहता हैः हे सदा-स्थिर रहने वाले मालिक! जैसे तुझे अच्छा लगता है, उसी तरह तू (हम जीवों को) जीवन-राह पर चलाता है।15।

एहु सोहिला सबद सुहावा । सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुर सुणाइआ । एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ । इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ । कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ।16।

अर्थः (सतिगुरु का) ये सोहाना शब्द (आत्मिक) आनंद देने वाला गीत है, (यकीन जानो कि) सतिगुरु ने सुंदर शब्द सुनाया है वह सदा आत्मिक आनंद देने वाला है। पर ये गुरु-शब्द उनके मन में बसता है जिनके माथे पर धुर से लिखे लेख उघड़ते हैं। बहुत सारे अनेक ऐसे लोग घूम रहे हैं (जिनके मन में गुरु-शब्द तो नहीं बसा, पर ज्ञान की) बातें करते हैं। सिर्फ बातें करने से आत्मिक आनंद किसी को नहीं मिला। नानक कहता हैः सतिगुरु का सुनाया हुआ शब्द ही आत्मिक आनंद-दाता है।16।

पवित होए से जना जिनी हर धिआइआ । हरि धिआइआ पवित होए गुरमुख जिनी धिआइआ । पवित माता पिता कुट्मब सहित सिउ पवित संगत सबाईआ । कहदे पवित सुणदे पवित से पवित जिनी मंन वसाइआ । कहै नानक से पवित जिनी गुरमुख हरि हरि धिआइआ ।17।

अर्थ: (गुरु के शब्द के सदका) जिस लोगों ने परमात्मा का नाम स्मरण किया (उनके अंदर ऐसा आनंद पैदा हुआ कि माया वाले रसों के प्रति उनमें आकर्षण ही ना रहा, और) वे लोग पवित्र जीवन वाले बन गए। गुरु की शरण पड़ कर जिस-जिस ने हरि का नाम स्मरण किया वे शुद्ध आचरण वाले हो गए! (उनकी लाग से) उनके माता-पिता-परिवार के जीव पवित्र जीवन वाले बने, जिस जिस ने उनकी संगति की वह सारे पवित्र हो गए। हरि-नाम (एक ऐसा आनंद का श्रोत है कि इस को) जपने वाले भी पवित्र और सुनने वाले भी पवित्र हो जाते हैं, जो इसको मन में बसाते हैं वे भी पवित्र हो जाते हैं। नानक कहता है: जिस लोगों ने गुरु की शरण पड़ कर हरि-नाम स्मरण किया है वे शुद्ध-आचरण वाले हो गए हैं।17।

करमी सहज न ऊपजै विण सहजै सहसा न जाइ । नह जाइ सहसा कितै संजम रहे करम कमाए । सहसै जीउ मलीण है कित संजम धोता जाए । मंन धोवह सबद लागह हरि सिउ रहह चित लाइ । कहै नानक गुर परसादी सहज उपजै इहु सहसा इव जाइ ।18।

अर्थ: माया के मोह में फंसे रहने से मन में तौख़ला-सहम बना रहता है, (यह) तौखला-सहम आत्मिक आनंद के बिना दूर नहीं होता, (और,) आत्मिक आनंद बाहर से धार्मिक प्रतीत होते कर्म करने से पैदा नहीं हो

सकता। अनेक लोग (ऐसे) कर्म कर-कर के हार गए हैं, पर मन का तौख़ला-सहम ऐसे किसी तरीके से नहीं जाता। (जब तक) मन सहम में (है तब तक) मैला रहता है, मन की यह मैल किसी (बाहरी) जुगति से नहीं धुलती। (हे भाई!) गुरु के शब्द में जुड़ो, परमात्मा के चरणों में सदा चित्त जोड़े रखो, (अगर) मन (धोना है तो इस तरह) धोवो। नानक कहता है: गुरु की कृपा से ही (मनुष्य के अंदर) आत्मिक आनंद पैदा होता है, और इस तरह मन का तौख़ला-सहम दूर हो जाता है।18।

जीअह मैले बाहरह निरमल । बाहरह निरमल जीअह त मैले तिनी जनम जूऐ हारिआ । एह तिसना वडा रोग लगा मरण मनह विसारिआ । वेदा मह नाम उतम सो सुणह नाही फिरह जिउ बेतालिआ । कहै नानक जिन सच तजिआ कूड़े लागे तिनी जनम जूऐ हारिआ ।19।

अर्थ: (सिर्फ बाहर से धार्मिक दिखते कर्म करने वाले लोग) मन में (विकारों से) मैले रहते हैं और सिर्फ देखने में ही पवित्र लगते हैं। पर, जो बाहर से पवित्र दिखें, वैसे मन में विकार हों, उन्होंने अपना जीवन यूँ व्यर्थ गवा लिया समझो जैसे कोई जुआरी जूए में धन हार के आता है। (उनको अंदर-अंदर से) माया की तृष्णा का भारी रोग खाए जाता है, (माया के लालच में) मौत को उन्होंने भुलाया होता है। (लोगों की नजरों में धार्मिक दिखने के लिए वे बाहर से धार्मिक दिखाई देते कर्मों की महिमा बताने के लिए वेद आदि धार्मिक-पुस्तकों में से हवाले देते हैं, पर) वेद आदिक धर्म-पुस्तकोंमें जो प्रभु का नाम जपने का उत्तम उपदेश है उस तरफ वे ध्यान नहीं करते, और भूतों की तरह ही जगत में विचरते रहते हैं (जीवन-ताल से विछुड़े रहते हैं)। नानक कहता है: जिन्होंने परमात्मा का नाम (-स्मरण) छोड़ा हुआ है, और

जो माया के मोह में फसे हुए हैं, उन्होंने अपनी जीवन-खेल जूए में हार ली समझो।

जीअह निरमल बाहरह निरमल । बाहरह त निरमल जीअह निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी । कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सच समाणी । जनम रतन जिनी खटिआ भले से वणजारे । कहै नानक जिन मंन निरमल सदा रहह गुर नाले ।20।

अर्थः जो लोग (आचरण-निर्माण की) वह कमाई करते हैं जिसकी हिदायत गुरु से मिलती है, वे मन से भी पवित्र होते हैं, और बाहर से भी पवित्र होते हैं (भाव, उनका जगत से व्यवहार भी सत्य पर आधारित कुशलता वाला होता है), वे बाहर से भी पवित्र और अंदर से भी स्वच्छ रहते हैं। उनके मन का मायावी विचार स्मरण में समाप्त हो जाता है, (उनके अंदर इतना आत्मिक आनंद बनता है कि) माया के मोह की खबर तक उनके मन तक नहीं पहुँचती। (जीव जगत में आत्मिक आनंद का व्यापार करने आए हैं) वही जीव-व्यापारी बढ़िया कहे जाते हैं जिन्होंने (गुरु के बताए हुए राह पर चल कर नाम-कमाई करके) श्रेष्ठ मानव जन्म को सफल कर लिया। नानक कहता हैः जिस लोगों का मन पवित्र हो जाता है (जिनके अंदर आत्मिक आनंद बन जाता है) वह (अंतरात्मे) सदा गुरु के चरणों में रहते हैं।20।

जे को सिख गुरू सेती सनमुख होवै । होवै त सनमुख सिख कोई जीअह रहै गुर नाले । गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले । आप छड सदा रहै परणै गुर

बिनु अवर न जाणै कोए । कहै नानक सुणहु संतहु सो सिख सनमुख होए ।21।

अर्थ: जो कोई सिख गुरु के सामने सही रास्ते पर चलने वाला होना चाहता है, जो सिख ये चाहता है कि किसी छुपे हुए खोट के कारण उसको गुरु के सामने आँखें ना झुकानी पड़ें (तो रास्ता एक ही है कि) वह सच्चे दिल से गुरु के चरणों में टिके। सिख गुरु के चरणों को अपने हृदय में जगह दे, अपनी अंत आत्मा के अंदर संभाल के रखे, स्वै भाव छोड़ के सदा गुरु के आसरे, गुरु के बिना किसी और को (अपने आत्मिक जीवन का, आत्मिक आनंद की साधन) ना समझे। नानक कहता है: हे संत जनो! सुनो, वह सिख (ही) खुश रह सकता है (उसके अंदर ही आत्मिक आनंद हो सकता है)।21।

जे को गुर ते वेमुख होवै बिन सतिगुर मुकत न पावै । पावै मुकत न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए । अनेक जूनी भरम आवै विण सतिगुर मुकत न पाए । फिर मुकत पाए लाग चरणी सतिगुरू सबद सुणाए । कहै नानक वीचार देखहु विण सतिगुर मुकत न पाए ।22।

अर्थ: (जहाँ माया के मोह के कारण सहम है वहाँ आत्मिक आनंद नहीं फल-फूल सकता, पर) यदि कोई मनुष्य गुरु की और से मुँह मोड़ ले (उसको आत्मिक आनंद नसीब नहीं हो सकता क्योंकि) गुरु के बिना माया के प्रभाव से निजात नहीं मिलती। बेशक, किन्हीं विचारवानों से जा के पूछ लो (और तसल्ली कर लो, ये बात पक्की है कि गुरु के बिना) किसी भी और जगह से मायावी बंधनो से खलासी नहीं मिलती। (माया के मोह में फंसा हुआ मनुष्य) अनेक जूनियों में से भटकता आता है, गुरु की शरण

पड़े बिना इस मोह से निजात नहीं मिलती। आखिर, गुरु के चरण लग के ही माया के मोह से छुटकारा मिलता है। क्योंकि गुरु (सही जीवन-मार्ग का) उपदेश सुनाता है। नानक कहता है: विचार के देख लो, गुरु के बिना माया के बंधनो से आजादी नहीं मिलती, (और इस मुक्ति के बिना आत्मिक आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती)।22।

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी । बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिर बाणी । जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी । पीवहु अम्रितु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी । कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ।23।

अर्थः हे सतिगुरु के प्यारे सिखो! आओ, सदा स्थिर परमात्मा में जोड़ने वाली वाणी (मिल के) गाओ। अपने गुरु की वाणी गाओ, ये वाणी और सब बाणियों से सर्वोपरि है (शिरोमणि है)। ये वाणी उन मनुष्यों के हृदय में ही टिकती है जिस पर परमात्मा की मेहर की नजर हो, बख्शिश हो। (हे प्यारे गुरसिखो!) परमात्मा का नाम स्मरण करो, परमात्मा के प्यार में सदा जुड़े रहो, ये (आनंद देने वाला, आत्मिक हिलौरे देने वाला) नाम-जल पीयो। नानक कहता है: (हे गुरसिखो!) परमात्मा की महिमा वाली ये वाणी सदा गाओ (इसी में आत्मिक आनंद है)।23।

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी । बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी । कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी । हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी । चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी । कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ।24।

अर्थः गुरु आशय के उलट वाणी (माया) की झलक के सामने थिड़का देने वाली होती है। ये बात पक्की है कि गुरु आशै के उलट जाने वाली वाणी को सुनने वालों के मन कमजोर हो जाते हैं, और जो ऐसी वाणी पढ़-पढ़ के व्याख्या करते हैं, वे भी कमजोर मन के हो जाते हैं। यदि वे लोग जीभ से हरि-नाम भी बोलें तो भी जो कुछ वे बोलते हैं उससे उनकी गहरी समीपता (सांझ गुरु से परमेश्वर से) नहीं पड़ती, क्योंकि उनके मन को माया ने मोह रखा है, वे जो कुछ बोलते हैं ऊपर ऊपर से ही बोलते हैं। नानक कहता हैः गुरु आशै के उलट वाणी मनुष्य के मन को आत्मिक आनंद के ठिकाने से नीचे गिराती है।24।

गुर का सबद रतंन है हीरे जित जड़ाउ । सबद रतन जित मंन लागा एह होआ समाउ । सबद सेती मन मिलिआ सचै लाइआ भाउ । आपे हीरा रतन आपे जिस नो देइ बुझाइ । कहै नानक सबद रतन है हीरा जित जड़ाउ ।25।

अर्थः सतिगुरु का शब्द एक ऐसी अमूल्य दाति है जिसमें परमात्मा की महिमाएं भरी हुई हैं। शब्द, मानो, (ऐसा) रतन है, कि उसके द्वारा (मनुष्य का) मन (परमात्मा की याद में) टिक जाता है (परमात्मा में) एक आश्चर्यजनक लीनता बनी रहती है। अगर शब्द में (मनुष्य का) मन जुड़ जाए, तो (इसकी इनायत से) सदा-स्थिर रहने वाले प्रभु में (उसका) प्रेम बन जाता है। (उसके अंदर परमात्मा का) हीरा-नाम ही टिका रहता है, (परमात्मा की महिमा का) रतन-शब्द ही टिका रहता है। (पर ये दाति उसको ही मिलती है) जिसको (प्रभु आप ये) सूझ बख्शता है। नानक कहता हैः गुरु का शब्द, मानो, एक रतन है जिसमें प्रभु का नाम-रूप हीरा जड़ा हुआ है।25।

सिव सकत आप उपाइ कै करता आपे हुकम वरताए । हुकम वरताए आप वेखै गुरमुख किसै बुझाए । तोड़े बंधन होवै मुकत सबद मंनि वसाए । गुरमुख जिस नो आप करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए । कहै नानक आप करता आपे हुकम बुझाए ।26।

अर्थः जीवात्मा और माया पैदा करके परमात्मा स्वयं ही (ये) हुक्म लागू करवाता है कि (माया का जोर जीवों पर पड़ा रहे) प्रभु सवयं ही ये हुक्म बनाए रखता है, स्वयं ही ये खेल (-तमाशा) देखता है (कि किस तरह जीव माया के हाथों पर नाच रहे हैं), किसी-किसी विरले को गुरु के द्वारा (इस खेल की) सूझ देता है। (जिसको समझ बख्शता है उसके) माया (के मोह) के बंधन तोड़ देता है, वह सख्श माया के बंधनो से स्वतंत्र हो जाता है (क्योंकि) गुरु का शब्द अपने मन में बसा लेता है। गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलने योग्य वही मनुष्य होता है जिसको प्रभु ये समर्थता देता है, वह मनुष्य एक परमात्मा के चरणों में तवज्जो जोड़ता है (उसके अंदर आत्मिक आनंद बनता है, और वह माया के मोह में से निकलता है)। नानक कहता हैः परमात्मा खुद ही (जीवात्मा और माया की) रचना करता है और खुद ही (किसी विरले को यह) सूझ बख्शता है (कि माया का प्रभाव भी उसका अपना ही) हुक्म (जगत में बरत रहा) है।26।

सिम्रित सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी । ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी । तिही गुणी संसार भ्रम सुता सुतिआ रैण विहाणी । गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मन वसिआ बोलह अम्रित बाणी । कहै नानक

सो तत पाए जिस नो अनदिन हरि लिव लागै जागत रैण विहाणी ।27।

अर्थः स्मृतियाँ व शास्त्र आदि पढ़ने वाले पण्डित सिर्फ यही विचारें करते हैं कि (इन पुस्तकों के अनुसार) पाप क्या है और पुण्य क्या है, उनको आत्मिक आनंद का रस नहीं आ सकता। (ये बात यकीनी जानिए कि) सतिगुरु की शरण आए बिना आत्मिक आनंद का रस नहीं आ सकता, जगत तीन गुणों में ही भटक-भटक के गाफिल हुआ पड़ा है, माया के मोह में सोए हुए की ही सारी उम्र गुजर जाती है (स्मृतियों-शास्त्रों की विचारें इस नींद में से जगा नहीं सकतीं)। (मोह की नींद में से) गुरु की कृपा से (सिर्फ) वे मनुष्य जागते हैं जिनके अंदर परमात्मा का नाम बसता है जो परमात्मा की महिमा की वाणी उचारते हैं। नानक कहता हैः वही मनुष्य आत्मिक आनंद भोगता है जो हर वक्त प्रभु की याद की लगन में टिका रहता है, और जिसकी उम्र (इस तरह मोह की नींद में से) जागते हुए बीतती है।27।

माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनह विसारीऐ । मनह किउ विसारीऐ एवड दाता ज अगन महि आहार पहुचावए । ओस नो किह पोह न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए । आपणी लिव आपे लाए गुरमुख सदा समालीऐ । कहै नानक एवडु दाता सो किउ मनह विसारीऐ ।28।

अर्थः (अगर आत्मिक आनंद प्राप्त करना है तो) उस परमात्मा को कभी भुलाना नहीं चाहिए, जो माँ के पेट में (भी) पालना करता है, इतने बड़े दाते को मन से भुलाना नहीं चाहिए जो (माँ के पेट की) आग में (भी)

खुराक पहुँचाता है। (ये मोह ही है जो आनंद से तोड़ के रखता है, पर) उस व्यक्ति को (मोह आदिक) कुछ भी छू नहीं सकता जिसको प्रभु अपने चरणों की प्रीति बख्शता है। (पर, जीव के भी क्या वश?) प्रभु स्वयं ही अपनी प्रीति की दाति बख्शता है। (हे भाई!) गुरु की शरण पड़ कर उसको स्मरण करते रहना चाहिए। नानक कहता है: (अगर आत्मिक आनंद की आवश्यक्ता है तो) इतने बड़े दातार प्रभु को कभी भुलाना नहीं चाहिए।28।

जैसी अगन उदर मह तैसी बाहर माइआ । माइआ अगन सभ इको जेही करतै खेल रचाइआ । जा तिस भाणा ता जमिआ परवार भला भाइआ । लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमर वरताइआ । एह माइआ जित हरि विसरै मोह उपजै भाउ दूजा लाइआ । कहै नानक गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ।29।

अर्थ: जैसे माँ के पेट में आग है वैसे ही बाहर जगत में माया (दुखदाई) है। माया और आग एक जैसी ही हैं, कर्तार ने ऐसी ही खेल रच दी है। जब परमात्मा की रजा होती है जीव पैदा होता है परिवार में प्यारा लगता है (परिवार के जीव उस नव-जन्मे बच्चे को प्यार करते हैं, इस प्यार में फंस के उसकी प्रभु-चरणों से) प्रीति की तार टूट जाती है, माया की तृष्णा आ चिपकती है, माया (उस पर) अपना जोर डाल लेती है। माया है ही ऐसी कि इसके कारण ईश्वर भूल जाता है, (दुनिया का) मोह पैदा हो जाता है, (ईश्वर के बिना) और किस्म के प्यार उपज पड़ते हैं (फिर ऐसी हालत में आत्मिक आनंद कहाँ मिले?) नानक कहता है: गुरु की कृपा से जिस लोगों की प्रीत की डोर प्रभु-चरणों में जुड़ी रहती है, उनको माया में रहते हुए ही (आत्मिक आनंद) मिल जाता है।29।

हरि आप अमुलक है मुल न पाइआ जाइ । मुल न पाइआ जाइ किसै विटह रहे लोक विललाइ । ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिर सउपीऐ विचह आप जाइ । जिस दा जीउ तिस मिल रहै हरि वसै मन आइ । हरि आप अमुलक है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ।30।

अर्थः (जब तक परमात्मा का मिलाप ना हो तब तक आनंद नहीं पाया जा सकता, पर) प्रभु का मूल्य नहीं पड़ सकता, परमात्मा (धन आदिक) किसी कीमत से नहीं मिल सकता। जीव खप-खप के हार गए, किसी को (धन आदि) कीमत दे के परमात्मा नहीं मिला। (हाँ,) अगर ऐसा गुरु मिल जाए (जिसके मिलने से मनुष्य के) अंदर से स्वै भाव निकल जाए (और जिस गुरु के मिलने से) जीव उस हरि के चरणों में जुड़ा रहे वह हरि उसके मन में बस जाए जिसका ये पैदा किया हुआ है, तो उस गुरु के आगे अपना सिर भेट कर देना चाहिए (अपना आप अर्पण कर देना चाहिए)। हे नानक! परमात्मा का मूल्य नहीं आँका जा सकता (किसी कीमत पर नहीं मिलता, पर) पर परमात्मा जिनको (गुरु के) लड़ लगा देता है उनके भाग्य जाग उठते हैं (वे आत्मिक आनंद पाते हैं)।30।

हरि रास मेरी मन वणजारा । हरि रास मेरी मन वणजारा सतिगुर ते रास जाणी । हरि हरि नित जपिह जीअह लाहा खटिह दिहाड़ी । एहु धन तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा । कहै नानक हरि रास मेरी मन होआ वणजारा ।31।

अर्थः अपने गुरु से मुझे समझ आई है कि (आत्मिक आनंद की कमाई कमाने के लिए) परमात्मा का नाम ही मेरी राशि-पूंजी (हो सकती है), मेरा मन (इस वणज का) व्यापारी बन गया है। परमात्मा का नाम मेरी राशि-

पूंजी है और मेरा मन व्यापारी हो गया है। (हे भाई!) तुम भी प्रेम से सदा हरि का नाम जपा करो, और हर रोज (आत्मिक आनंद का) लाभ कमाओ। (हरि-नाम का आत्मिक आनंद का) ये धन उनको ही मिलता है, जिन्हें देना प्रभु को खुद अच्छा लगता है। नानक कहता है: परमात्मा का नाम मेरी पूंजी बन गई है (अब गुरु की कृपा से मैं आत्मिक आनंद की कमाई कमाता हूँ)।31।

ए रसना तू अन रस राच रही तेरी पिआस न जाइ । पिआस न जाइ होरत किते जिचर हरि रस पलै न पाइ । हरि रस पाइ पलै पीऐ हरि रस बहुड़ न त्रिसना लागै आइ । एह हरि रस करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिस आइ । कहै नानक होर अन रस सभ वीसरे जा हरि वसै मन आइ ।32।

अर्थ: हे (मेरी) जीभ! तू और ही स्वादों में मस्त हो रही है, (इस तरह) तेरे स्वादों का चस्का दूर नहीं हो सकता। जब तक परमात्मा के स्मरण का आनंद प्राप्त ना हो, (तब तक) किसी और जगह से स्वादों का चस्का मिट नहीं सकता। जिस मनुष्य को परमात्मा के नाम का आनंद मिल जाए, जो मनुष्य हरि-स्मरण का स्वाद लेने लग पड़े, उसको माया की तृष्णा छू नहीं सकती। पर, यह हरि-नाम का आनंद प्रभु की मेहर से मिलता है (उसको मिलता है) जिसको गुरु मिले। नानक कहता है: जब हरि-स्मरण का आनंद मन में बस जाए, तब और सारे चस्के भूल जाते हैं।32।

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम मह जोत रखी ता तू जग मह आइआ । हरि जोत रखी तुध विच ता तू जग मह आइआ । हरि आपे माता आपे पिता जिन जीउ उपाइ जगत दिखाइआ । गुर परसादी बुझिआ ता चलत होआ चलत नदरी आइआ ।

कहै नानक स्रिसट का मूल रचिआ जोत राखी ता तू जग मह आइआ ।33।

अर्थ: मेरे शरीर! (तू दुनिया के पदार्थों में से आनंद ढूँढता है पर आनंद का श्रोत तो परमात्मा है जो तेरे अंदर बसता है) तू जगत में आया ही तब, जब हरि ने अपनी ज्योति तेरे अंदर रख दी। (ये यकीन जान कि) जब परमात्मा ने तेरे अंदर अपनी ज्योति रखी, तब तू जगत में पैदा हुआ। जो परमात्मा जीव पैदा करके उसको जगत में भेजता है वह खुद ही इसकी माँ है खुद ही इसका पिता है (प्रभु स्वयं ही माता-पिता की तरह जीव को हर तरह का सुख देता है, सुख-आनंद का दाता है ही प्रभु खुद। पर जीव जगत में से मायावी पदार्थों में से आनंद तलाशता है)। जब गुरु की मेहर से जीव को ज्ञान होता है तब इसको समझ आती है कि ये जगत तो एक खेल ही है, फिर जीव को ये जगत (मदारी का) एक तमाशा ही नजर आने लगता है (सदा-स्थिर रहने वाला आत्मिक आनंद इसमें नहीं हो सकता)। नानक कहता है: हे मेरे शरीर! जब प्रभु ने जगत रचना की नींव रखी, तेरे अंदर अपनी ज्योति डाली, तब तू जगत में पैदा हुआ।33।

मन चाउ भइआ प्रभ आगम सुणिआ । हरि मंगल गाउ सखी ग्रिह मंदर बणिआ । हरि गाउ मंगल नित सखीए सोग दूख न विआपए । गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिर जापए । अनहत बाणी गुर सबद जाणी हरि नाम हरि रस भोगो । कहै नानक प्रभ आप मिलिआ करण कारण जोगो ।34।

अर्थ: अपनी हृदय-सेज पर प्रभु-पति का आना मैंने सुन लिया है (मैंने अनुभव कर लिया है कि प्रभु मेरे हृदय में आ के बसा है अब) मेरे मन में

आनंद बन गया है। हे मेरी जिंदे! मेरा ये हृदय-घर प्रभु-पति का निवास-स्थान बन गया है, अब तू प्रभु की महिमा के गीत गा। हे जीवात्मा! सदा प्रभु की बड़ाई का गीत गाता रह, (इस तरह) कोई फिक्र कोई दुख (अपना) जोर नहीं डाल सकता। वह दिन भाग्यशाली होते हैं जब (माथा) गुरु के चरणों पर टिके, प्यारा पति-प्रभु (हृदय में) दिखाई दे जाता है। गुरु के शब्द द्वारा एक-रस महिमा की लहर के साथ सांझ बन जाती है, प्रभु का नाम प्राप्त हो जाता है, प्रभु-मिलाप का आनंद भोगते हैं। नानक कहता है: (हे जिंदे! खुशी के गीत गा) सब कुछ कर सकने के समर्थ प्रभु खुद आ के मुझे मिल गया है।३४।

ए सरीरा मेरिआ इस जग मह आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ । कि करम कमाइआ तुध सरीरा जा तू जग मह आइआ । जिन हरि तेरा रचन रचिआ सो हरि मन न वसाइआ । गुर परसादी हरि मंन वसिआ पूरब लिखिआ पाइआ । कहै नानक एह सरीर परवाण होआ जिन सतिगुर सिउ चित लाइआ ।३५।

अर्थ: हे मेरे शरीर! इस जगत में जनम ले के तू और ही काम करता रहा। जबका तू संसार में आया है, तू (प्रभु-स्मरण के बिना) और-और ही काम करता रहा। जिस हरि ने तुझे पैदा किया है, उसको तूने अपने मन में नहीं बसाया (उसकी याद में कभी नहीं जुड़ा)। (पर, हे शरीर! तेरे भी क्या वश?) जिस मनुष्य के पूर्बले किए कर्मों के संस्कार उघड़ते हैं, गुरु की कृपा से उसके मन में परमात्मा बसता है (वही हरि स्मरण में जुड़ता है)। नानक कहता है: जिस मनुष्य ने गुरु चरणों में चित्त जोड़ लिया, (उसका) ये शरीर सफल हो जाता है (वह मनुष्य वह उद्देश्य पूरा कर लेता है जिस वास्ते ये बनाया गया)।३५।

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई । हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ । एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ । गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई । कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रिसटि होई ।36।

अर्थः हे मेरी आँखों! परमात्मा ने तुम्हारे अंदर (अपनी) ज्योति टिकाई है (तभी तुम देखने के लायक हो) जिधर देखो, परमात्मा का ही दीदार करो, परमात्मा के बिना और कोई ग़ैर ना दिखे, निगाहों से हरि को देखो। (हे आँखों!) ये सारा संसार जो तुम देख रही हो, ये प्रभु का ही रूप है, प्रभु का ही रूप दिख रहा है। गुरु की कृपा से मुझे समझ पड़ी है, अब मैं जब (चुफेरे) देखता हूँ, हर जगह एक परमात्मा ही दिखता है, उसके बिना और कुछ नहीं। नानक कहता हैः (गुरु को मिलने से पहले) ये आँखें (असल में) अंधी थीं, जब गुरु मिला, इनमें रौशनी आई (इन्हें हर जगह परमात्मा दिखने लगा। यही दीदार आनंद का मूल है)।36।

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए । साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी । जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी । सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए । कहै नानकु अम्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ।37।

अर्थः हे मेरे कानो! परमात्मा की महिमा की वाणी सुना करो, सदा स्थिर कर्तार ने तुम्हें यही सुनने के लिए बनाया है, इस शरीर में स्थापित किया

है। इस महिमा की वाणी सुनने से तन तन आनंद-भरपूर हो जाता है, जीभ आनंद में मस्त हो जाती है। सदा स्थिर परमात्मा तो आश्चर्य रूप है, उसका कोई चिन्ह-चक्र बताया नहीं जा सकता, ये नहीं कहा जा सकता है कि वह कैसा है (उसके गुण कहने-सुनने से सिर्फ यही लाभ होता है कि मनुष्य को आत्मिक आनंद प्राप्त होता है, तभी तो) नानक कहता है: आत्मिक आनंद देने वाला नाम सुना करो, तुम पवित्र हो जाओगे, परमात्मा ने तुम्हें यही सुनने के लिए भेजा (बनाया) है।37।

हरि जीउ गुफा अंदर रख कै वाजा पवण वजाइआ । वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगट कीए दसवा गुपत रखाइआ । गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआर दिखाइआ । तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंत न जाई पाइआ । कहै नानक हरि पिआरै जीउ गुफा अंदर रख कै वाजा पवण वजाइआ ।38।

अर्थ: परमात्मा ने जीवात्मा को शरीर गुफा में टिका के जीव को बोलने की शक्ति दी। शरीर को बोलने की शक्ति दी, नाक-कान आदि नौ कर्म-इंद्रिय प्रत्यक्ष रूप से बनाई, दसवें द्वार (दिमाग़) को छुपा के रखा। प्रभु ने जिनको गुरु दर पर पहुँचा के अपने नाम की श्रद्धा बख्शी, उनको दसवाँ दर भी दिखा दिया (उनको नाम-जपने की विचार-सत्ता भी दे दी जो आत्मिक आनंद का मूल है)। उस अवस्था में मनुष्य को अनेक रूपों-रंगों में व्यापक प्रभु का वह नाम-रूपी नौ खजानों का भण्डार भी प्राप्त हो जाता है जिसका अंत नहीं पड़ सकता (जो कभी खत्म नहीं होता)। नानक कहता है: प्यारे प्रभु ने जिंद को शरीर-गुफा में टिका के जीव को बोलने की शक्ति भी दी।38।

एह साचा सोहिला साचै घर गावह । गावह त सोहिला घर साचै जिथै सदा सच धिआवहे । सचो धिआवह जा तुध भावह गुरमुख जिना बुझावहे । इह सच सभना का खसम है जिस बखसे सो जन पावहे । कहै नानक सच सोहिला सचै घर गावहे ।39।

अर्थः (हे भाई!) परमात्मा के महिमा की यह वाणी साधु-संगत में (बैठ के) गाया करो। उस सत्संग में आत्मिक आनंद देने वाली वाणी गाया करो, जहाँ (गुरसिख-जन) सदा-स्थिर रहने वाले प्रभु को सदा गाते हैं। हे प्रभु! तुझ सदा-स्थिर को तब ही जीव स्मरण करते हैं जब तुझे अच्छे लगें, जिन्हें तू गुरु के द्वारा ये सूझ बख्शे। (हे भाई!) सदा-स्थिर प्रभु सब जीवों का मालिक है, जिस-जिस पर वह मेहर करता है वह वह जीव उसे प्राप्त कर लेते हैं। और, नानक कहता है, वह सत्संग में (बैठ के) प्रभु की महिमा की वाणी गाते हैं।39।

अनद सुणह वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे । पारब्रहम प्रभ पाइआ उतरे सगल विसूरे । दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी । संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी । सुणते पुनीत कहते पवित सतिगुरु रहिआ भरपूरे । बिनवंत नानक गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ।40।1।

अर्थः हे बड़े भाग्यों वालो! सुनो, आनंद यह है कि (उस अवस्था में) मन की सारी दौड़ें समाप्त हो जाती हैं (सारे संकल्प सफल हो जाते हैं), परम आत्मा प्रभु मिल जाता है, सारे चिन्ता-फिक्र मन से उतर जाते हैं। अकाल-पुरख की महिमा की वाणी सुनने से सारे दुख-रोग-कष्ट मिट जाते हैं। जो संत-गुरसिख पूरे गुरु से महिमा की वाणी से सांझ डालनी सीख लेते हैं उनके

हृदय खिल उठते हैं। इस वाणी को सुनने वाले उचारने वाले सब पवित्र आत्मा वाले हो जाते हैं, इस वाणी में उनको सतिगुरु ही दिखाई देता है। नानक विनती करता है: जो लोग गुरु के चरणों में लगते हैं, उनके अंदर एक-रस (खुशी के) बाजे बज उठते हैं (उनके अंदर आत्मिक आनंद पैदा हो जाता है)।40।

4. " त्वप्रसाद स्वये "

स्रावग सुध समूह सिधान के देख फिरिओ घर जोग जती के । सूर सुरारदन सुध सुधादिक संत समूह अनेक मती के । सारे ही देस को देख रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रानपती के । स्री भगवान की भाइ क्रिपा हू ते एक रती बिन एक रती के ।1।21।

मैंने अपनी यात्राओं के दौरान शुद्ध श्रावकों (जैन और बौद्ध भिक्षुओं), सिद्धों के समूह तथा तपस्वियों और योगियों के निवास देखे हैं । अनेक देवताओं को मारते राक्षस, अमृत पीते देवता और विभिन्न मतों के संतों की सभाएं देखी हैं । मैंने सभी देशों की धार्मिक व्यवस्थाओं के अनुशासन तो देखे हैं, परंतु प्रभु मिलाप की युक्ति बता पाने वाला कोई नहीं देखा । इन सभी अनुशासन मार्गों का भाव एक रत्ती बराबर भी नहीं है, क्योंकि ये सभी श्री भगवान जी के प्रेम से रहित हैं ।

माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे । कोट तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन कउ जात निवारे । भारी भुजान के भूप भली बिध निआवत सीस न जात बिचारे । एते भए तु कहा भए भूपत अंत को नागे ही पांइ पधारे ।2।22।

स्वर्ण जड़ित सुंदर कद काठी के, संदूर से सजे हाथी रखने वाला, वा मृगों की भाति वायुगति से दौड़ने वाले कोटिन अश्वों का स्वामी, भारी बाहुबल वाला राजा जिन्हे अनेक लोग नतमस्तक होते हों । इतने

ऐश्वर्य का क्या लाभ जब अंत समय नगे पाँव अर्थात प्रेम-विहीन ही संसार से गमन कर गए ?

जीत फिरै सभ देस दिसान को बाजत ढोल म्रिदंग नगारे । गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत हैं हयराज हजारे । भूत भविख्र भवान के भूपत कउन गनै नहीं जात बिचारे । स्री पति स्री भगवान भजे बिनु अंत कउ अंत के धाम सिधारे ।3।2।

देश देशांतरों को विजयी करने वाले जिनके दसों दिशाओ में विजयी मृदंग व ढोल बजते हों । हजारों हाथियों व दरियाई घोड़ों के झुंड जिनके दलों में गुंजायमान होते हों । ऐसे ऐश्वर्य वाले नरेश भूतकाल में कितने हो चुके, वर्तमान में कितने हैं व भविष्य में कितने होंगे, कौन गणना कर सकता है ? लेकिन श्री पति श्री भगवान जी से विमुख, ऐसे नरेश भी खाली चले गए, जा रहे हैं वा खाली जाएंगे ।

तीरथ नान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखै । बेद पुरान कतेब कुरान जमीन जमान सबान के पेखै । पउन अहार जती जत धार सबै सु बिचार हजारक देखै । स्री भगवान भजे बिन भूपत एक रती बिन एक न लेखै ।4।24।

पवित्र स्थानों पर स्नान करना, दया करना, वासनाओं पर नियंत्रण रखना, दान के कार्य करना, तपस्या करना और कई विशेष अनुष्ठान करना । वेदों, पुराणों और पवित्र कुरान का अध्ययन करना और इस लोक और परलोक का अध्ययन करना । केवल वायु पर निर्वाह करना, संयम का अभ्यास करना और सभी अच्छे विचारों वाले ऐसे हजारों लोगों से

मिल कर देख लिया । लेकिन श्री भगवान के भजन बिना सभी अनुशासन कौड़ी की कीमत के भी नहीं ।

सुध सिपाह दुरंत दुबाह सु साज सनाह दुरजान दलैंगे । भारी गुमान भरे मन मैं कर परबत पंख हले न हलैंगे । तोर अरीन मरोर मवासन माते मतंगन मान मलैंगे । स्री पत स्री भगवान क्रिपा बिन तिआग जहान निदान चलैंगे ।5।25।

प्रशिक्षित सैनिक, शक्तिशाली और अजेय, शस्त्रों से सुसज्जित योद्धा, जो दुश्मनों को कुचलने में सक्षम हों । उनके मन में बड़ा अहंकार था कि पर्वत भी पंख लगाकर हिल जाएं तो भी वे परास्त नहीं होंगे । वे शत्रुओं का नाश कर देंगे, विद्रोहियों को मरोड़ देंगे और मतवाले हाथियों का घमंड चूर-चूर कर देंगे । लेकिन श्री पत श्री भगवान की कृपा के बिना, वे अंततः दुनिया छोड़ देंगे और उनका घमंड बहादुरी धरी की धरी रह जाएगी ।

बीर अपार बडे बरिआर अबिचारह सार की धार भछ्या । तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मल्या । गाड़्हे गड़्हान को तोड़नहार सु बातन हीं चक चार लव्या । साहिब स्री सभ को सिरनाइक जाचक अनेक सु एक दिव्या ।6।26।

असंख्य वीर और पराक्रमी निडर होकर तलवार की धार का सामना करते हैं, देशों को जीतना, विद्रोहियों को अपने अधीन करना और वे मतवाले हाथियों का घमंड चूर करने वाले हैं । मजबूत किलों पर कब्ज़ा करने वाले और केवल डरावे व धमकियों से ही विरोधी को जीत लेने वाले

हैं । ऐसे वीरों पराक्रमियों का शिरोमणि नायक भी वही प्रभु है जो इन सभी मांगने वालों पर अपनी कृपा बरसा रहा है ।

दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविख भवान जपैंगे । जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सभ थाप थपैंगे । पुंन प्रतापन बाढ जैत धुन पापन के बहु पुंज खपैंगे । साध समूह प्रसंन फिरैं जग सत्र सभै अवलोक चपैंगे ।7।27।

दानव, देवता, विशाल नाग, भूत, वर्तमान और भविष्य उनका नाम दोहराते हैं । समुद्र और भूमि पर सभी प्राणियों की उत्पत्ति व विकास वह एक पल में करने में सक्षम है । प्रभु के सुमिरन से पुण्य कर्मों का तेज बढ़ता है व जय जयकार की ध्वनि से अनेक पाप नाश हो जाते हैं । प्रभु भक्ति में लीन साधु समूह प्रसन्नता से फिरते हैं और उनके शत्रुओं का नाश हो जाता है ।

मानव इंद्र गजिंद्र नराधप जौन त्रिलोक को राज करैंगे । कोट इसनान गजादिक दान अनेक सुअमबर साज बरैंगे । ब्रहम महेसर बिसन सचीपित अंत फसे जम फास परैंगे । जे नर स्री पति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ।8।28।

मनुष्यों के राजा मानवेंद्र और हाथियों के राजा गजेन्द्र, वा कुबेर सम्राट जो तीनों लोकों पर शासन करते हैं। जो लाखों तीर्थ स्नान, हाथियों और अन्य जानवरों को दान करके और अनेक स्वयंवरों (स्व-विवाह समारोह) से स्त्री की प्राप्ति कर रहे है । ब्रह्मा विष्णु महेश व शचीपति इन्द्र इत्यादि भी अंत में मृत्यु जाल में फंस जाते हैं । सिर्फ वही परमगति को प्राप्त होंगे व देह नहीं धारण करेंगे जो श्री पति प्रभु चरणों को परसेंगे ।

कहा भयो जो दोउ लोचन मूंद कै बैठ रहिओ बक धिआन लगाइओ । न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रन लोक गयो परलोक गवाइओ । बास कीओ बिखिआन सो बैठ कै ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ । साच कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ।9।29।

अगर कोई वक्क की तरह आंखें बंद करके बैठ जाए और ध्यान करे तो उसका क्या फायदा ? यदि वह सातवें समुद्र तक के तीर्थों में स्नान करता है, तो वह इस लोक के साथ-साथ परलोक को भी खो देता है । वह अपना जीवन ऐसे ही मिथ्या कर्मों में व्यतीत करता है और ऐसे ही कर्मकांडों में अपना जीवन बर्बाद कर देता है । मैं सत्य बोलता हूं, सभी सुनें इस बात को, जो सच्चे प्रेम में लीन है, श्री भगवान की प्राप्ति उन्हें ही होगी ।

काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंग गरे लटकाइओ । काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाह को सीस निवाइओ । कोउ बुतान को पूजत है पसु कोउ म्रितान को पूजन धाइओ । कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जग स्री भगवान को भेदु न पाइओ ।10।30।

किसी ने पत्थर को पूजकर उसे सिर पर बैठा लिया । किसी ने उसका शिवलिंग बनाकर गले में लटका लिया । हिन्दू ने ईश्वर का निवास दक्षिण दिशा में मान लिया व मुस्लिम ने भगवान की कल्पना कर पश्चिम दिशा में सिर झुकाया । कोई पशु-वृति मूर्ख केवल मूर्तियों की पूजा करता है और कोई मुर्दों की पूजा करने जाता है। सारा संसार मिथ्या कर्मकांडों में उलझा हुआ है और प्रभु-ईश्वर के रहस्य को नहीं जान पाया है ।

५. "चौपयी साहिब"

१ੴ स्री वाहगुरू जी की फतह ।

कबियो बाच बेनती । चौपई ।

हमरी करो हाथ दै रछा । पूरन होइ चित की इछा । तव चरनन मन रहै हमारा । अपना जान करो प्रतिपारा ।

कृपया अपने हाथों से हमारी रक्षा करें । मेरे हृदय की सभी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं । मेरा मन आपके चरणों में लगा हुआ है । हमें अपना मानकर हमारा पालन करें ।

हमरे दुसट सभै तुम घावहु । आप हाथ दै मोह बचावहु । सुखी बसै मोरो परिवारा । सेवक सि्खय सभै करतारा ।

मेरे सब शत्रुओं का नाश कर दो । अपने हाथों से मेरी रक्षा करो । मेरा परिवार सुख-शाति के साथ बसे । मेरे सारे सेवक और शिष्य भी सुख शाति से बसें ।

मो रछा निज कर दै करियै । सभ बैरिन कौ आज संघरियै । पूरन होइ हमारी आसा । तोर भजन की रहै पियासा।

मुझे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा प्रदान करें । आज मेरे सभी शत्रुओं पर लगाम लगाएँ । आपने मेरी इच्छाएँ पूरी कर दी हैं । आप के भजन के लिए मेरी प्यास सदा ही बढ़ती जा रही है ।

तुमह छाड कोई अवर न धयाऊं । जो बर चहों सु तुमते पाऊं । सेवक सि्खय हमारे तारियह । चुन चुन श्त्रु हमारे मारियह ।

तुझे छोड़कर मैं कभी किसी और की पूजा न करूँ । मेरी सारी ज़रूरतें तुझसे पूरी होती हैं । तू मेरे सिखों और भक्तों का उद्धार कर । एक-एक करके तू मेरे शत्रुओं का नाश कर ।

आप हाथ दै मुझै उबरियै । मरन काल का त्रास निवरियै । हूजो सदा हमारे पछा । स्री असिधुज जू ! करियहु रछा ।

अपने हाथ से मेरी रक्षा करो । मृत्यु के मेरे भय को नष्ट करो । हमेशा मेरा साथ दो । अपनी तलवार से मेरी रक्षा करो ।

राख लेहु मुह राखनहारे । साहिब संत सहाइ पियारे । दीनबंधु दुशटन के हंता । तुमहो पुरी चतुरदस कंता ।

हे प्यारे उद्धारक, हे प्यारे संतों के सहायक, हे दयालु, अत्याचारियों के नाश करने वाले, आप चौदह लोकों के स्वामी हैं ।

काल पाइ ब्रहमा बप धरा । काल पाइ शिवजू अवतरा । काल पाइ कर बिशन प्रकासा । सकल काल का कीया तमाशा ।

समय आया, ब्रह्मा का जन्म हुआ, फिर शिव का अवतार हुआ और फिर विष्णु का उदय हुआ । यह सब भगवान की चाल है ।

जवन काल जोगी सिव कीयो । बेद राज ब्रहमा जू थीयो । जवन काल सभ लोक सवारा । नमसकार है ताहि हमारा ।

लौकिक भगवान ने योगी शिव; ब्रह्मा - वेदों के रचयिता को बनाया । लौकिक भगवान ने संपूर्ण ब्रह्मांड की रचना की । मैं उन्हीं को नमस्कार करता हूँ ।

जवन काल सभ जगत बनायो । देव दैत ज्छन उपजायो । आद अंत एकै अवतारा । सोई गुरू समझियहु हमारा ।

काल के रचयिता ने ब्रह्माण्ड बनाया; देवदूत, दानव और यक्ष को बनाया । उसी से आरम्भ और अंत है । वही मेरा गुरु है ।

नमसकार तिस ही को हमारी । सकल प्रजा जिन आप सवारी । सिवकन को सवगुन सुख दीयो । श्त्रुन को पल मो बध कीयो ।

मैं केवल उन्हीं को नमन करता हूँ । जो समस्त प्राणियों और विषयों के रचयिता हैं । अपने भक्तों को सभी पुण्य और शाति प्रदान करते हैं । शत्रुओं का तुरन्त नाश करते हैं ।

घट घट के अंतर की जानत । भले बुरे की पीर पछानत । चीटी ते कुंचर असथूला । सभ पर क्रिपा द्रिशट कर फूला ।

हमारी सभी भावनाओं को जानने वाले हैं । सभी प्राणियों की पीड़ा को समझते हैं, चाहे वे अच्छे हों या बुरे । चींटी से लेकर हाथी तक, वे सभी की रक्षा और देखभाल करते हैं ।

संतन दुख पाए ते दुखी । सुख पाए साधन के सुखी । एक एक की पीर पछाने । घट घट के पट पट की जाने ।

जब उसके संत दुःखी होते हैं, तो उसे पीड़ा होती है, और जब वे खुश होते हैं, तो उसे खुशी होती है । वह हर एक के दर्द को पहचानता है । वह हर किसी की हर भावना को जानता है ।

जब उदकरख करा करतारा । प्रजा धरत तब देह अपारा । जब आकरख करत हो कबहूं । तुम मै मिलत देह धर सभहूं ।

जब सृष्टिकर्ता ने स्वयं को प्रक्षेपित किया, तो उनकी रचनाएँ भौतिक रूपों में प्रकट हुईं । जब भी सृष्टि विलीन होती है, तो सभी भौतिक रूप पुनः उनमें विलीन हो जाते हैं ।

जेते बदन स्रिशट सभ धारै । आप आपुनी बूझ उचारै । तुम सभ ही ते रहत निरालम । जानत बेद भेद अर आलम।

अनेक रूप और शरीर बनाए हैं । वे उसे अपनी इच्छानुसार कहते हैं, जो वह है । तुम उन सबसे पृथक रहो । यह भेद ज्ञानी और धार्मिक पुस्तकें जानती हैं ।

निरंकार नृबिकार निरलंभ । आद अनील अनाद असम्भ । ताका मूड़्ह उचारत भेदा । जाको भेव न पावत बेदा ।

निराकार, निर्मल और आत्मनिर्भर । आरम्भिक, दोषरहित, अनंत और जन्महीन । केवल एक मूर्ख ही आपकी सीमा पर चर्चा कर सकता है । आपकी सीमाएँ वेद भी नहीं जानते ।

ता कौ कर पाहन अनुमानत । महां मूड़्ह कछु भेद न जानत । महांदेव कौ कहत सदा सिव । निरंकार का चीनत नह भिव ।

मूर्ख लोग उसे पत्थर समझते हैं, क्योंकि वह उस गूढ़ रहस्य को नहीं जानता जो ईश्वर है । वह शिव को अविनाशी ईश्वर कहता है, और निराकार ईश्वर का रहस्य नहीं जानता ।

आप आपुनी बुध है जेती । बरनत भिंन भिंन तुह तेती । तुमरा लखा न जाइ पसारा । किह बिध सजा प्रथम संसारा ।

हर कोई अपनी समझ के अनुसार आपका अलग-अलग वर्णन करता है । आपकी रचना की सीमाएँ ज्ञात नहीं की जा सकतीं, न ही यह कि आपने आरंभ में ब्रह्मांडों की रचना कैसे की ।

एकै रूप अनूप सरूपा । रंक भयो राव कहीं भूपा । अंडज जेरज सेतज कीनी । उतभुज खान बहुर रच दीनी ।

आप एक हैं, विभिन्न रूपों में प्रकट होते हैं, एक गरीब आदमी, अमीर जागीर, एक राजा के रूप में । आप उन प्राणियों को बनाते हैं जो अंडे से पैदा होते हैं, पसीने से पैदा होते हैं, पृथ्वी से पैदा होते हैं और गर्भ से पैदा होते हैं ।

कहूं फूल राजा ह्वै बैठा । कहूं सिमट भयो संकर इकैठा । सगरी सृसटि दिखाइ अचंभव । आद जुगाद सरूप सुयंभव ।

कभी आप ब्रह्मा के रूप में सृष्टि का विस्तार करते हुए आनन्दपूर्वक प्रकट होते हैं, तो कभी शिव के रूप में संकुचित और विलीन होते हुए । वे अपनी समस्त सृष्टि को अपने चमत्कारिक कार्य दिखाते हैं । वे मौलिक शक्ति हैं, जो स्वयं से उत्पन्न हुई हैं, जो आदि के आरम्भ से ही हैं ।

अब रछा मेरी तुम करो । सि्खय उबार असि्खय संघरो । दुशट जिते उठवत उतपाता । सकल मलेछ करो रण घाता ।

हे प्रभु ! अब मुझे अपने संरक्षण में रखिए, मेरे अनुयायियों को बुद्धि और विवेक में उन्नति करने के लिए प्रेरित कीजिए और मेरे शत्रुओं (नकारात्मक सोच) का नाश कीजिए । जितने भी दुष्ट लोग (मेरे मन में) उत्पन्न होते हैं, उनसे युद्ध कीजिए और उन्हें वहीं नष्ट कर दीजिए ।

जे असिधुज तव सरनी परे । तिन के दुशट दुखित ह्वै मरे । पुरख जवन पग परे तिहारे । तिन के तुम संकट सभ टारे ।

हे ज्ञान के स्वामी ! जो कोई आपकी शरण में आता है, उसके शत्रु (बुरी वासनाएँ) पीड़ित होते हैं, पीड़ाएँ नष्ट हो जाती हैं । जो लोग आपके चरणों में गिरते हैं, आप उनके सभी कष्ट और रोग दूर कर देते हैं ।

जो कल को इक बार धिऐ है । ता के काल निकट नह ऐहै । रच्छ्य होइ ताह सभ काला । दुशट अरिशट टरे ततकाला ।

जो लोग एक बार भी आपका ध्यान करते हैं, उनके पास काल भी नहीं फटकता । वे सदैव सुरक्षित रहते हैं । उनके सभी शत्रु और दुःख तुरन्त दूर हो जाते हैं ।

क्रिपा द्रसटि तन जाह निहरिहो । ताके ताप तनक मह हरिहो । रि्धि सि्धि घर मों सभ होई । दुशट छाह छ्वै सकै न कोई ।

आपके आशीर्वाद और करुणा से परमानंद की प्राप्त होती है । उनके सारे पाप दूर हो जाते हैं । उन्हें सभी सांसारिक और आध्यात्मिक खजाने प्राप्त होते हैं, और कोई भी दुष्ट व्यक्ति (घातक जुनून और बीमार सहज प्रवृत्ति) उनकी छाया भी नहीं छू सकता ।

एक बार जिन तुमै संभारा । काल फास ते ताह उबारा । जिन नर नाम तिहारो कहा । दारिद दुशट दोख ते रहा ।

यदि वे एक बार तुझे स्मरण कर लें, तो तू मृत्यु के फंदे को हटा देता है । जो कोई तेरे नाम का ध्यान करता है, वह दरिद्रता, कष्ट और विपत्ति से बच जाता है ।

खड़ग केत मै सरणि तिहारी । आप हाथ दै लेहु उबारी । सरब ठौर मो होहु सहाई । दुसट दोख ते लेहु बचाई ।

हे तलवार के स्वामी, मैं आपकी सुरक्षा चाहता हूँ । अपने हाथों से आपने मेरी रक्षा की है । हर समय मेरा सहारा बनो । मुझे दुष्टता और पीड़ा से बचाओ ।

क्रिपा करी हम पर जगमाता । ग्रंथ करा पूरन सुभराता । किलबिख सकल देह को हरता । दुसट दोखियन को छै करता ।

जगतजननी मुझ पर कृपा करके मैंने इस शुभ रात्रि में यह ग्रन्थ पूर्ण किया है; प्रभु शरीर के समस्त पापों तथा समस्त दुष्ट और द्वेषपूर्ण व्यक्तियों का नाश करने वाले हैं ।

स्री असिधुज जब भए दयाला । पूरन करा ग्रंथ ततकाला । मन बाछत फल पावै सोई । दूख न तिसै बिआपत कोई ।

जब महाकाल दयालु हुए, तब उन्होंने तुरन्त ही मुझसे यह ग्रन्थ पूरा करवाया; जो इस ग्रन्थ को पढ़ेगा या सुनेगा, उसे मनचाहा फल मिलेगा तथा उसे कोई दुःख नहीं होगा ।

सुनै गुंग जो याह सु रसना पावई । सुनै मूड़ह चित लाइ चतुरता आवई । दूख दरद भौ निकट न तिन नर के रहै । हो जो याकी एक बार चौपई को कहै ।

जो गूंगा इसे सुनेगा, उसे बोलने के लिए जीभ मिल जाएगी; जो मूर्ख इसे ध्यान से सुनेगा, उसे बुद्धि प्राप्त होगी; जो व्यक्ति एक बार भी चौपाई का पाठ करता है, उसके दुःख, दर्द और भय दूर हो जाते हैं ।

संबत स्त्रह सहस भणिजै । अरध सहस फुन तीन कहिजै । भाद्रव सुदी असटमी रवि वारा । तीर सतुद्रव ग्रंथ सुधारा ।

यह विक्रमी संवत 1753 था; भाद्रो मास की अष्टमी सुदी रविवार को सतलुज के तट पर इस ग्रंथ का संकलन हुआ था ।

पाइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे नहीं आनयो । राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहे मत एक ना मान्यो । सिंमृति सासत्र बेद सभै बहु भेद कहै हम एक न जानयो । श्री असिपान कृपा तुमरी कर में न कहयो सभ तोहि बखान्यो ।

हे भगवान ! जब से मैंने आपके चरण पकड़े हैं, तब से मेरे सामने कोई दूसरा नहीं आया; राम, रहीम, पुराण, कुरान आदि अनेक ग्रन्थ पढ़ते हैं, परन्तु मैं किसी पर भी विश्वास नहीं करता । सिमरितियाँ, शास्त्र और वेद अनेक रहस्यों का वर्णन करते हैं, परन्तु मैं उनमें से किसी को भी नहीं पहचानता; हे तलवारधारी भगवान ! आपके आशीर्वाद से मैं जो कुछ लिख रहा हूँ, वह वह नहीं है जो मैं जानता हूँ, अपितु वह है जो आपने मुझे दिखाया है ।

सगल दुआर कउ छाडि कै गहयो तुहारो दुआर । बाहि गहे की लाज असि गोबिंद दास तुहार ।

हे प्रभु ! मैंने सब द्वार त्यागकर आपका द्वार चुना है । हे गोविंद ! आपने मेरी भुजा पकड़ ली है, अपने सेवक की लाज रखिए ।